तुलसी रामायण

1008 पाँतिमे

(संक्षिप्त रामचरितमानस)

मैथिलीमे गद्य अनुवाद सहित

सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता

अनुवादक

नीलम झा

श्री राम चरित भवन

ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

तुलसी रामायण

1008 पाँतिमे

(संक्षिप्त रामचरितमानस)
मैथिलीमे गद्य अनुवाद सहित

सम्पादक
ओमप्रकाश गुप्ता

अनुवादक
नीलम झा

श्री राम चरित भवन, ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

प्रकाशक

श्री राम चरित भवन
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

Publisher

Shri Ram Charit Bhavan
Houston, USA

©2023 तुलसीकृत रामचरितमानस के अंश को छोड़कर शेष प्रकाशक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण 2023

ISBN: 978-1-7362088-8-5

पुस्तक के समस्त अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा। चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलेक्ट्रॉनिक। जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में आंशिक उदधृत करने की छूट रहेगी।

समर्पण

ई संकलन हम अपन दिवंगत पिताश्री कल्यानप्रसाद रामजीलाल अग्रवाल आ माँ त्रिवेनीके चरणमे सादर समर्पित करैत छी। ओ प्रभु रामक अनन्य भक्त छलाह। यद्यपि ओ आब हमरा सबहक मध्य नै छथि, तथापि हुनक राम-भक्ति हमरा सदैव प्रेरणा दैत रहैत अछि।

ओमप्रकाश गुप्ता

प्रस्तावना

सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरै।
दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्री रघुबर हरै॥

(मानस 7.130.X15-X16)

जे मनुष्य रामायणक पाँचो-सात टा चौपाईके अपन हृदयमे धारण करैत अछि, ओकरा पाँच प्रकारक अविद्या सँ उत्पन्न विकार सऽ श्री रामजी मुक्त कए दैत छथिन्ह।

रामचरितमानसक अंतमे गोस्वामी जी उपर्युक्त उद्धृत दू टा पाँति लिखलैन। विद्वान सब एहि दुनू पाँति कऽ, विशेष रूप सँ 'सत पंच'क अर्थ अपन-अपन मतिके हिसाब सँ लगौलैन। 'सत पंच'क अनेक अर्थमे सँ एकटा प्रचलित अर्थ अछि : सात–पाँच। शायद तुलसी दास जी कहि रहल छथि कि जौं कोनो व्यक्ति मानसक पाँचो सातटा पाँतिके हृदयमे धारण कऽ लैत अछि, तऽ ओ सभ दोष सँ मुक्त भए जाइत छै। हुनका शायद एहि बातक अनुमान रहल हेतैंह कि आबय बला समयमे लोक सबके कदाचित सम्पूर्ण रामचरितमानस पढ़बाक समय नै भेटय, तैं ओ मात्र पाँच-सात पाँतिके जीवनमे उतारबाक बात कहने हेताह।

गोस्वामी जीके एहि पाँति सँ प्रेरित भए आओर ई सोचि कि आई अपना सबहक जीवन कतेक व्यस्त छै, हमरा लागल कि मानसके एकटा संक्षिप्त रूप जौँ उपलब्ध होय तऽ आधुनिक समाज आ आबय बला पीढ़ीक लेल शायद उपयोगी भए जाय। एहि विचारक परिणामस्वरूप अपनेक सेवामे 'तुलसी रामायण 1008 पाँतिमे' प्रस्तुत अछि। गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित रामचरितमानसमे 12,503 पाँति छै (एहिमे संस्कृतमे लिखल श्लोकक पाँतिके गिनती शामिल नै छै)। तैं प्रस्तुत संक्षिप्त मानस मूल पुस्तक कऽ करीब 8 प्रतिशत अछि। एहि संक्षिप्त रामायणमे 121टा दोहा, 15टा सोरठा आ 708टा चौपाई छै। शेष 28 पाँति आन छंदमे छै। आशा अछि कि पाठक अपन व्यस्त जीवन सँ एकरा पढ़बाक समय निकालि सकताह। मानस सँ संकलित 1008 पाँतिक अलावा एहि पुस्तकमे ओकर सरल मैथिली अनुवाद देल गेल अछि।

पुस्तकक अंतमे श्री रामायण जीके आरती, श्री राम-स्तुति आ पुस्तकमे आएल तरह-तरहक पात्र सबहक संक्षिप्त विवरण सेहो देल गेल छै।

रामचरितमानसक हरेक शब्द लाखों-करोड़ों बेरि लिखल, पढ़ल आ बाजल गेल अछि। तैं हरेक शब्द अपना आपमे एकटा मंत्र जेना भऽ गेल। लाखों शब्द आ हजारों पाँतिमे सँ मात्र किछु पाँतिक संकलन कोना कयल जाए ई अपने आपमे एकटा चुनौती रहल। संकलन करबाक समय निम्न बात पर विशेष ध्यान राखल गेल-

1. मानस कथाक घटना सबहक सातत्य बनल रहय।
2. जहाँ तक भए सकय मुख्य घटना सबहक संक्षेपेमे, लेकिन उल्लेख अवश्य होय।
3. सभ प्रसंगमे आपसी संबद्धता आ कथाक सततता बनल रहय।
4. हरेक 7-8 चौपाईके बाद एकटा दोहा अथवा सोरठा होय।
5. जौँ कतौ छंदक (दोहा, चौपाई, सोरठाक अतिरिक्त) प्रयोग भेल होय तऽ ओकर तुरत बाद एकटा दोहा/सोरठा होय।

विद्वान पाठक सभ सँ हमर करबद्ध प्रार्थना अछि कि ओ एहि संक्षिप्त रामायणके गोस्वामी जी द्वारा रचित रामचरितमानसक पर्याय कखनहुँ नै बुझैथ। हम नै मनैत छी कि कोनो रचना रामचरितमानसक स्थान लए सकैत अछि। हमरा एक मात्र आशा अछि कि अहाँ एहि संक्षिप्त रामायण सँ प्रेरणा लऽ सम्पूर्ण रामचरितमानस पढ़बाके आनंद अवश्य लेब। एहि पुस्तक सँ अपनेक मोनमे प्रभु रामक जीवन-गाथाके विस्तार सँ जानबाक जिज्ञासा उत्पन्न होय, यैह एहि पुस्तकके मुख्य उद्देश्य अछि।

ई हमर सौभाग्य छी कि प्रभु राम हमरा मानसक संक्षिप्त रामायण संकलन करबाक लेल प्रेरित केलैन। जौं तुलसी बाबा नैं होयता, तऽ रामचरितमानस सेहो नै होयतै, बाबा अपने कऽ कोटि-कोटि प्रणाम! हम आयोवा विश्वविद्यालयके (भूतपूर्व) प्रोफेसर फ़िलिप लटगेण्डोर्फ़क आभार कोना प्रकट करी, ओ तऽ हमर रामायण गुरु छथि। जखनो हमरा मोनमे कोनो प्रश्न उठैत अछि, हम हुनका सँ नि:संकोच पूछैत छी, आ ओ जल्दीए एकटा सद्गुरु जेँका हमर मार्गदर्शन करैत छथि। हम आदरणीय भाई श्री सत्य देव जी, जे स्वयं रामायणक प्रकाण्ड विद्वान छथि, हुनक विशेष ऋणी छी। एहि संकलनक पहिल प्रारूपक हरेक पाँतिके पढ़िके ओ बहुत रास अमूल्य

सुझाव देलैंह। हम पंडित प्रभुदयाल मिश्र, भाई श्री रामलक्ष्मण गुप्त, डॉ॰ राम गोपाल सिंह, श्रीमती उषा मेहरा, डॉ॰ आरती 'लोकेश', श्री निरंजन शर्मा, प्रो. ज्ञानप्रकाश शास्त्री, सुश्री विनीता मिश्रा, श्रीमती अलका प्रमोदक संग-संग अनेक मित्र आ हितैषी सबहक अत्यंत आभारी छी जिनक अथाह सहयोग सँ ई यज्ञ पूर्ण भेल। हम भाई श्री बलराम ठकराल जी कऽ विशेष उल्लेख करब चाहब, जे हिन्दी आ अंग्रेजीके प्रारूपके बेरि- बेरि पढ़लैथ और अपन अमूल्य सुझाव देलैंह। हम एहि यज्ञ मे हुनका बराबरक सहभागी बुझै छी।

अपन अनुज डॉ॰ शिवप्रकाश अग्रवालक विषयमे की कही, जे लक्ष्मण जेना अपन अग्रजक सब कार्य करबाक लेल हरदम तत्पर रहैत छथि। प्रिय शिव, प्रभु राम अहाँके सदैव प्रसन्न राखथि।

एहि पुस्तक कऽ मैथिली भाषामे अनुवाद करबाक लेल हम श्रीमती नीलम झाक विशेष ऋणी छी, ओ अत्यंत धीरज आ उत्साह सहित ई पुनीत कार्य संपन्न कयलनि। प्रभु राम हुनका सदैव प्रसन्न राखथि।

अंतमे, हम साकेतवासी माता-पिता आ सब गुरुजनके सादर प्रणाम करैत छी, जिनक आशीर्वादक बिना हमरा जीवनमे किछु संभव नै छल। यद्यपि हमर पूर्ण प्रयास रहल कि पुस्तक त्रुटिरहित रहय, तथापि जौं त्रुटि रहि गेल होय तऽ ओहिक लेल हम असगर ओकर दोषी छी आ ताहिक लेल क्षमाप्रार्थी छी। 'तुलसी रामायण 1008 पाँतिमे' पुस्तक पर अपने सबहक टिप्पणीके प्रतीक्षा रहत। जय सियाराम।

ओमप्रकाश गुप्ता
श्री राम चरित भवन
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

मानसक सब पाँतिक अवस्थितिके संकेत व्यवस्था

मानसक हरेक पाँतिके एकटा अनन्य संकेत प्रदान कयल गेल छै, जाहि सँ ओकरा सरलतापूर्वक इंगित कयल जा सकय। ई संकेतक तीनटा भाग छै। पहिल भाग काण्ड क्रम, दोसर दोहा /सोरठा क्रमांक आ तेसर पाँतिके क्रमांक आ छंदक प्रकार बतबैत छै।

काण्ड क्रम संकेत

1. बालकांड 2. अयोध्याकाण्ड 3. अरण्यकाण्ड 4. किष्किन्धाकाण्ड
5. सुन्दरकाण्ड 6. लंकाकाण्ड 7. उत्तरकाण्ड

छंद प्रकार संकेत

D दोहा, S सोरठा, C चौपाई, X छंद

उदाहरण:

1. सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥ 1.8.C2
   ई पाँति बालकाण्डमे दोहा 7 आ 8क बीचमे छै। ई दोहा 7क बाद दोसर पाँतिमे छै और एकटा चौपाई छै।
2. सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज ॥ 6.18.D2
   ई पाँति लंकाकाण्डमे18म दोहाके दोसर पाँतिमे छै।
3. प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन। 1.17.S1
   ई पाँति बालकाण्डमे 17म सोरठाक पहिल पाँतिमे छै।
4. सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरै। 7.130.X15
   ई पाँति उत्तरकाण्डमे दोहा 129 आ 130क बीचमे छै। ई दोहा 129 के बादक 15म पाँति छी आ छंद छै।

तुलसी मानस महिमा

जौँ तुलसी नैं होयता, तऽ हम रामके नै जनितौं।
सोंझां ठाढ़ रहिता प्रभु, तइयौ नै हुनका चीन्हतौं ॥

मंथन वेदक केलैन, मानस-मणि जगके देलैन।
तुलसी-कृपा सँ प्रभु भेटलाह, अर्धांगिनी जिनकर सिया ॥

एक हजार आठ पाँतिमे, सार मानसक रचलहुँ।
धन्य मानब स्वयंके, जौँ अहाँके किछु ई नीक लगय॥

बनल ई जौँ नीक प्रभु, तऽ सब अपनेक प्रसाद छी ।
आ जे कमी-त्रुटि भेल होय, तऽ मोनमे सहज विषाद अछि ॥

'ओम' चरणमे पड़ल अछि, प्रभु भक्ति हमरा दियौ।
तुलसी-पथ पर चलि सकी, कृपा हमरो पर करियौ ॥

बालकाण्ड

1 जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन। 1.0a.S1
2 करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन॥ 1.0a.S2

जिनक मात्र स्मरण कयला सँ सभ मनोरथ सिद्ध होइत अछि, जे गणक नायक छथि आओर जे सुंदर हाथी सन मुखबला छथि, एहन बुद्धिके भण्डार आ शुभ गुणक धाम गणेशजी महाराज हमरा पर कृपा करू।

3 मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन। 1.0b.S1
4 जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन॥ 1.0b.S2

जिनक कृपा सँ बौक बाजय लगैत अछि, नांगर दुर्गम पहाड़ पर चढ़ि जाइत छै, कलियुगक समस्त पाप कऽ जरबय बला दयालु भगवान हमरा पर कृपा करू।

5 नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन। 1.0c.S1
6 करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन॥ 1.0c.S2

जे नील कमलक समान श्याम वर्णक छथि, जिनक नेत्र पूर्ण रूप सँ खिलल कमलक सदृश छन्हि, जे क्षीरसागरमे शयन करैत छथि, ओ परमपिता श्री नारायण भगवान हमरा हृदयमे हरदम बसल रहैथ।

7 कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन। 1.0d.S1
8 जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन॥ 1.0d.S2

जिनकर कुन्दक फूल आ चन्द्रमाक समान (गोर) शरीर छन्हि, जे पार्वतीजीक प्रियतम, दया कऽ धाम छथि, जिनका दीन लोक सभ सँ स्नेह छन्हि, ओ कामदेवक मर्दन करय बला शंकर भगवान हमरा पर कृपा करू।

9 बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि। 1.0e.S1
10 महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर॥ 1.0e.S2

हम अपन गुरु जीके चरणकमलक वंदना करैत छी, किएक तऽ ओ मानुषक रूपमे कृपाक सागर बनिके भगवानक जेकाँ भेटैत छथि। हुनक वचन महामोह रूपी घनघोर अन्हारक नाश करयबला सूर्य-किरणक समूह अछि।

11 सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥ 1.8.C2
12 करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥ 1.8.C5
हम ई बात जनैत छी कि श्री सीताराम सम्पूर्ण जगतमे व्याप्त छथि, तैं हम दुनू हाथ जोड़ि सभके प्रणाम करैत छी। एकर अतिरिक्त हम अपन अल्प बुद्धि सँ रघुनाथ जीके ताहि गुणक वर्णन करय चहैत छी, जे अथाह अछि।

13 एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥ 1.10.C1
14 मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥ 1.10.C2
एहिमे रघुनाथजीके दया करय बला नामक वर्णन छै, ई नाम अति पवित्र आओर वेद-पुराणक सार अछि, एहि नामके शिवजी उमा सहित हरदम जपैत रहैत छथिन्ह किएक तऽ ई मंगलक भवन आओर अमंगलके नाश करय बला अछि।

15 प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन। 1.17.S1
16 जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥ 1.17.S2
हम पवनपुत्र हनुमानके प्रणाम करैत छी। जे दुष्ट रूपी वन के भस्म करय बला आइगक समान छथि। ओ ज्ञानक सागर छथि। हुनक हृदय रूपी मंदिरमे धनुष–बाण धारण करय बला प्रभु श्रीराम बसैत छथिन्ह।

17 सादर सिवहि नाइ अब माथा। बरनउँ बिसद राम गुन गाथा ॥ 1.34.C3
18 संबत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा ॥ 1.34.C4
आब हम शिवजीके सादर प्रणाम कय श्रीरामके गुण सँ परिपूर्ण निर्मल कथाक वर्णन शुरू करैत छी। एहि रामकथा कऽ आरंभ हम संवत १६३१मे श्री हरिक चरणमे अपन शीश राखिके करय जा रहल छी।

19 नौमी भौम बार मधुमासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा॥ 1.34.C5
20 रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा॥ 1.35.C7
चैत्र मासक नवमी तिथि मंगल दिन श्री अयोध्या जीमे ई चरित उजागर भेल। एहि पोथिक नाँव 'श्रीरामचरितमानस' अछि। एहि चरित्र के सुनबा मात्र सँ सुनयबलाके शान्ति भेटैत छैक।

21 रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन॥ 1.35.C9
22 रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा॥ 1.35.C11
ई रामचरितमानस मुनिगण सबके बहुत नीक लगैत छैन्ह, एहि ग्रंथक रचना सर्वप्रथम शिवजी कयलैन, ओ एहि ग्रंथके रचिके पहिले अपना मोनमे राखलाह, जखन उचित अवसर आयल तऽ पार्वतीजीके सुनौलैन।

23 तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर॥ 1.35.C12
24 कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई॥ 1.35.C13
शिवजी अपना मोनमे प्रसन्तापूर्वक विचारि कऽ एहि ग्रंथक नाँव 'श्री रामचरितमानस' राखलैथ। आब हम ओहि सुखदायक आओर सोहावन कथाके कहय छी। हे सतजन! अहाँ सब सादर मोन लगाय कऽ अहि कथाके सुनू।

25 मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी॥ 1.112.C4
मंगलक धाम, अमंगल हरय बला आ महाराज दशरथक आँगनमे खेलय बला प्रभु श्रीराम हमरा पर कृपा करू।

26 अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ। बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ॥ 1.188.C7
एक समय अवधपुरीमे रघुकुलक शिरोमणि दशरथ नामक राजा छलाह, हुनक नाँव वेदमे सेहो प्रसिद्ध अछि।

27 कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत। 1.188.D1
28 पति अनुकूल प्रेम दृढ़ हरि पद कमल बिनीत॥ 1.188.D2

कौसल्या आदि हुनक सभ रानी पवित्र आचरणवाली छलीह ओ विनीता छलीह, आओर अपन स्वामीके अनुरूप व्यवहार करैत छलीह। हुनका श्री हरिक चरण सँ दृढ प्रेम-स्नेह छलैंह।

29 एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं॥ 1.189.C1
एक बेरि राजाके मोन मे ई सोचि कऽ बहुत ग्लानि भेलन्हि कि हमरा पुत्र नहि अइछ।

30 निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ। कहि बसिष्ठ बहुबिधि समुझायउ॥1.189.C3
31 धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी॥ 1.189.C4
ओ अपन सुख-दुःख गुरु वसिष्ठके सुनौलैन। गुरु हुनका नाना प्रकार सँ बुझायके कहलनि, "हे राजन! धीरज राखू अपनेक चारिटा पुत्र होयत, ओ तीनूं लोकमे प्रसिद्ध आओर भक्तक डर के दूर करयबला होयताह।

32 सृंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा॥1.189.C5
33 एहि बिधि गर्भसहित सब नारी। भईं हृदयँ हरषित सुख भारी॥1.190.C5
एकर बाद मुनि वसिष्ठ ऋष्यश्रृंग ऋषिके बजौलैन आओर दशरथक द्वारा पुत्रक लेल पुत्रेष्टि यज्ञ करेलैथ। यज्ञक पुण्य प्रताप सँ सब रानी गर्भवती भेलीह आ हुनका सबहक हृदयमे अपार हर्ष भेलैन।

34 नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता॥ 1.191.C1
35 मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा॥ 1.191.C2
पुनीत चैत मासके शुक्ल पक्षक नवमी तिथिके अभिजीत मुहूर्त छल। ई समय तीनूं लोकमे शान्ति प्रदान करय बला होइत छैक।

36 भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी। 1.192.X1
37 हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥ 1.192.X2
38 लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी। 1.192.X3
39 भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥ 1.192.X4
ताहि शुभ बेलामे दीन-दुखी पर दया करयबला आ माता कौसल्याके हित चाहय बला कृपालु प्रभु श्रीराम प्रकट भयलाह। हुनक रूप ऋषि-मुनि सभके प्रसन्न

करयबला छल। ताहि अद्भुत रूपके देखि माता सभ बहुत प्रसन्न भेलीह। हुनक श्याम वर्ण कऽ मेघ सन देह देखि सबहक आँखि जुरायल। ओ वनमाला पहिरने छलाह। हुनक विशाल नेत्र शत्रु कऽ क्षय करयबला छल। ऐना शोभा कऽ सागर राम प्रकट भेलाह।

40 बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार। 1.192.D1
41 निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥ 1.192.D2

ब्राह्मण, गौ, देवता और संतक नीक करबाक लेल भगवान मनुष्य रूपमे अवतरित भेलाह। ओ अपना इच्छा सँ ई शरीर धारण केलैन। ओ माया आ ओकर गुण (सत, रज तम) आ इन्द्रिय सँ बढ़ि कऽ छैथ। हुनक दिव्य शरीर हुनके इच्छा सँ बनल आ हुनके इच्छा सँ चलैत अछि।

42 दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना॥ 1.193.C3
43 जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई॥ 1.193.C5

महाराज दशरथ तऽ पुत्र जन्मक समाचार सुनि मानू ब्रह्मनंद पाबि गेलाह। ओ मोने-मोन विचारय लगला कि जिनकर नाम मात्र सुनला सँ लोकक कल्याण होइत छैक। आई ओ हमरा घरमे अवतरित भेला अछि।

44 कैकयसुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ॥ 1.195.C1

दशरथक बाकी पत्नी केकैयी आओर सुमित्रा सेहो सुन्दर पुत्रके जन्म देलन्हि।

45 नामकरन कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी॥ 1.197.C2
46 सो सुखधाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक बिश्रामा॥ 1.197.C6

किछु दिवस बाद नामकरण कऽ अवसर पर राजा दशरथ ज्ञानी मुनि वसिष्ठके आमंत्रित केलैन। गुरु वसिष्ठ हुनकर नाम 'राम' राखलैन। ओ कहलनि कि राम सुखक धाम आओर तीनू लोकमे शान्ति देबऽ बला छथि।

47 बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई॥ 1.197.C7
48 जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा॥ 1.197.C8

"जे संसारक भरण-पोषण कयनिहार छथि, हुनकर नाम 'भरत' होयत। जिनकर स्मरण मात्र सँ शत्रुके नाश होइत छैक, जे सभ वेदमे प्रसिद्ध छथि, हुनक नाम 'शत्रुघ्न' होयत।"

49 लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार। 1.197.D1
50 गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार॥ 1.197.D2

जे सभ शुभ लक्षणक धाम, रामके बहुत प्रिय औ' समस्त विश्वक आधार छथि, गुरु वसिष्ठ हुनकर नाम 'लक्ष्मण' राखलैन।

51 बारेहि ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरन रति मानी॥ 1.198.C3
52 भरत सत्रुहन दूनउ भाई। प्रभु सेवक जसि प्रीति बड़ाई॥ 1.198.C4

लक्ष्मण बालपने सँ राम कऽ अपन हितैषी मानैत छलाह। हुनका राम सँ विशेष प्रेम छलन्हि। भरत आओर शत्रुघ्नक मध्य स्वामी सेवकक जेहन प्रेम प्रस्फुटित भेल, जकर प्रशंसा कएल जाइत अछि।

53 बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा॥ 1.203.C1
54 कछुक काल बीतें सब भाई। बड़े भए परिजन सुखदाई॥ 1.203.C2

हरि भगवान रामक रूपमे बालपनमे अपन बाल-लीला सँ सभके आनंदित कयलनि। धीरे-धीरे समय बीतल, चारु भाई पैघ भेला पर अपन सऽर- कुटुंबके सुख देबऽ बला भए गेलाह।

55 भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता॥ 1.204.C3
56 गुरगृहँ गए पढ़न रघुराई। अलप काल बिद्या सब आई॥ 1.204.C4

जखन चारु भाई कुमार अवस्थाके भेलाह तऽ गुरु, पिता आ माता सभ मिली कऽ हुनकर यज्ञोपवीत संस्कार करोलैन।

57 कोसलपुर बासी नर नारि बृद्ध अरु बाल। 1.204.D1
58 प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल॥ 1.204.D2

कोसलपुरके पुरुख, मौगी, वृद्ध आ बच्चा सभके कृपालु रघुनाथ अपन प्राण सँ बेसी प्रियगर लगैत छथिन्ह।

59 बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहिं बिपिन सुभ आश्रम जानी ॥ 1.206.C2
60 जहँ जप जग्य जोग मुनि करहीं। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥ 1.206.C3
एकटा महान ज्ञानी मुनि छलाह; विश्वामित्र। वनमे हुनकर बहुत नीक आ पवित्र आश्रम छलैन्ह। ओहि ठाम ऋषि-मुनि जप, यज्ञ आओर जोग आदि करैत छलाह, मुदा ओ सभ मारीच आओर सुबाहु नामक राक्षस सँ बहुत डराइत छलखिन्ह।

61 देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥ 1.206.C4
62 गाधितनय मन चिंता ब्यापी। हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी ॥ 1.206.C5
यज्ञ शुरु होइत देखिके राक्षस सभ दौड़िके आबि जायत छल आओर उपद्रव मचबैत छल। जाहि कारणे मुनि सब दुखी रहैत छलाह। ई देखि गाधिक पुत्र विश्वामित्रके मनमे चिंता होमय लगलैन ओ सोचय लगला कि ई पापी राक्षस सभ भगवानक हाथ सँ मारने बिना नै मरत।

63 तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा॥ 1.206.C6
64 एहूँ मिस देखौं पद जाई। करि बिनती आनौं दोउ भाई॥ 1.206.C7
मुनि मोनमे विचार कएके ई जानि गेलाह कि धरतीके भार उतारबाक लेल भगवान अवतरित भए गेलाह। ओ सोचय लगलाह कि एहि बहाने हम हुनक दर्शन करी। आओर राजा सँ विनती कय दुनू भाईके अपना लऽग लऽ आबि।

65 बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार। 1.206.D1
66 करि मज्जन सरऊ जल गए भूप दरबार॥ 1.206.D2
अहिना मोनमे नाना प्रकारक विचार करैत मुनिवरके राजाक दरबारमे पहुँचयमे देरी नै लागल। ओ सरयू नदीमे स्नान कए राजाक दरबारमे पहुँच गेलाह।

67 केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावउँ बारा ॥ 1.207.C8
68 असुर समूह सतावहिं मोही। मैं जाचन आयउँ नृप तोही ॥ 1.207.C9
हुनका दरबारमे देखि राजा कहलनि, "हे मुनिवर! अहाँके अहिठाम अयबाक की प्रयोजन अछि? कहू, हम ओकरा पूरा करबामे देरी नै करब।" विश्वामित्र कहलनि,

"हे राजन्! राक्षसक समूह हमरा तंग करैत रहैत अछि। तैं हम अहाँ सँ किछु माँगऽ आयल छी।"

69 अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा॥ 1.207.C10
70 सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी॥ 1.208.C1
"अहाँ राम आ हुनक अनुज लक्ष्मणके हमरा संग जाय दिय। हुनका हाथ सँ राक्षस सभके मुयला पर हम सनाथ भऽ जायब।" मुनिके ई बात राजाके नीक नै लगलैन, हुनक हृदय काँपि गेल आ मुखक कांति कुम्हला गेल।

71 तब बसिष्ट बहुबिधि समुझावा। नृप संदेह नास कहँ पावा॥ 1.208.C8
72 अति आदर दोउ तनय बोलाए। हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए॥ 1.208.C9
तकर बाद गुरु वसिष्ठ राजा दशरथके बहुत तरह सँ बुझौलनि, जाहि सँ राजाके मोनक संदेह दूर भऽ गेल। राजा बड्ड आदरपूर्वक दुनू पुत्रके बजौलन्हि आ हृदय सँ लगायके हुनका बहुत-तरह सँ बुझा कऽ मुनि संग जेबाक लेल कहलैन।

73 पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन। 1.208b.S1
74 कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन॥ 1.208b.S2
पुरुखमे सिंहक समान दुनू वीर मुनिक भय दूर करबाक लेल प्रसन्न मोन सँ चललाह। ओ कृपा कऽ सागर, धीर बुद्धिबला औ' सम्पूर्ण सृष्टिक कारण सेहो थिकाह।

75 चले जात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताड़का क्रोध करि धाई॥ 1.209.C5
76 एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥ 1.209.C6
रस्तामे मुनि हुनका ताड़का नामक राक्षसीके देखौलैन, राक्षसी क्रोधित भऽ हुनका सभके मारय लेल दौड़ि पड़ल। राम एक्के टा बाण चलाय कऽ ओकर प्राण हरि लेलाह मुदा ओकरा दीन जानिके मोक्ष सेहो प्रदान कऽ देलैन।

77 प्रात कहा मुनि सन रघुराई। निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई॥ 1.210.C1
आश्रम पहुँचलाक बाद भोर भेला पर राम मुनि सँ कहलनि, "अहाँ बिना कोनो भयके यज्ञ करू।"

78 सुनि मारीच निसाचर क्रोही। लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥ 1.210.C3
79 बिनु फर बान राम तेहि मारा। सत जोजन गा सागर पारा ॥ 1.210.C4
ऋषि-मुनि यज्ञ करैत छैथ, ई समाचार सुनिते शत्रु राक्षस मारीच तमसाय कऽ अपन संगी-साथी सहित विघ्न उपस्थित करय लेल ओतय आबि गेल। राम बिना फलबला बाण सँ ओकरा मारि देलाह, बाण लगितै ओ सौ योजन विस्तारबला समुद्रके पार जाय खसल।

80 पावक सर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निसाचर कटकु सँघारा ॥ 1.210.C5
81 तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया ॥ 1.210.C7
तत्पश्चात ओ अग्निबाण सँ सुबाहुके मारलाह। एम्हर हुनक छोट भाई लक्ष्मण सेहो राक्षसक सेनाके नाश कऽ देलैन। किछु दिन ओतय रहि कऽ राम ब्राह्मण सभ पर बहुत कृपा केलखिन्ह।

82 तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई ॥ 1.210.C9
83 धनुषजग्य सुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिबर के साथा ॥ 1.210.C10
किछु समयक बाद मुनि कहलैन "हे प्रभु! चलु एकटा धनुष यज्ञक उत्सव देखय।" ई सुनि राम आ लक्ष्मण बड्ड प्रसन्नतापूर्वक श्रेष्ठ मुनि विश्वामित्रक संग चलि पड़लाह।

84 आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं ॥ 1.210.C11
85 पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा बिसेषी ॥ 1.210.C12
रस्तामे ओ एकटा आश्रम देखलैथ, जतय पशु-पक्षी, जीव-जंतु नैं छल। बस एकटा पाथर कऽ शिला छल। ई देखि प्रभु राम अपन गुरु सँ ओहिके बारेमे पुछलैन। तखन मुनिवर विस्तार सँ दुनू भाय के ओहिके बारेमे कहलनि।

86 गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर। 1.210.D1
87 चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर ॥ 1.210.D2
विश्वामित्र रामके कहलनि "गौतम मुनिक पत्नी अहल्याक शरीर श्रापक कारणे पाथर भय गेल अछि। ओ बहुत दिन सँ धैर्यपूर्वक अपनेक चरणक धूलि चहैत छथि। हे रघुवीर! हिनका पर कृपा करू।"

88 परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही। 1.211.X1
89 देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥ 1.211.X2
प्रभुके पवित्र औ' शोक नाश करयबला चरणक स्पर्श होइते अहल्या एकटा तपोमूर्तिक रूपमे प्रकट भऽ गेलीह। अपना समक्ष जगतके सुख देबयबला रघुकुलक नायक रामचन्द्र जी कऽ देखि अहल्या हाथ जोड़ि कऽ ठाढ़ भऽ गेलीह।

90 अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही। 1.211.X3
91 अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥ 1.211.X4
अतिशय प्रेम-स्नेहक कारण ओ अधीर भय गेलीह। हुनकर रोम-रोम पुलकित भय गेल, हुनक मुख सँ शब्द नै निकलैत छल। सौभाग्यवती अहल्या प्रभुक चरण स्पर्श कयलनि। हुनक दुनू नेत्र सँ नोर बहय लागल।

92 मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई। 1.211.X7
93 राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई॥ 1.211.X8
ओ प्रार्थना करय लगलीह, "हे प्रभु! हम एकटा अपवित्र स्त्री छी, अहाँ जगतके पवित्र करयबला छी। अहाँ रावणक शत्रु आ लोक सभके सुख देबय बला छी। हे कमलनयन! हे संसारके भयमुक्त करयबला हम अहींके शरणमे छी। हमर रक्षा करू, हमर रक्षा करू।"

94 एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी। 1.211.X15
95 जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी॥ 1.211.X16
ऐना बेर-बेरि प्रभु रामक चरण-स्पर्श कए मनोवांछित वरदान पाबि ऋषिक पत्नी अपन पतिक लोक पहुँच गेलीह।

96 अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल। 1.211.D1
97 तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल॥ 1.211.D2
प्रभु राम एहन दीनबंधु औ' अकारण ककरो पर दया करय बला छथि। तुलसीदास कहैत छथि कि हे मूर्ख मोन! तू संसारक सभ कपट-जाल छोड़िके हुनके टा भजन कर।

98 हरषि चले मुनि बृंद सहाया। बेगि बिदेह नगर निअराया ॥ 1.212.C4
99 बिस्वामित्र महामुनि आए। समाचार मिथिलापति पाए ॥ 1.214.C8
एकर बाद राम प्रसन्नचित्त भऽके चलैत-चलैत मुनिजन सबहक संग अति शीघ्र जनकपुर लऽग पहुँचि गेलाह। ओम्हर ई समाचार मिथिलापति जनक कऽ भेटलनि

100 कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥ 1.215.C1
101 भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता ॥ 1.215.C7
राजा जनक मुनि सँ भेंट कए आओर हुनक चरणमे माथ राखिके प्रणाम केलैन। मुनि शिरोमणि विश्वामित्र प्रसन्न भय गेलाह आओर हुनका आशीर्वाद देलन्हि। मुनि संग दुनू भायके देखि सभ गोटे सुखी भेलाह। हुनकर सबहक आँखिमे नोर भरि आयल आ शरीर रोमांचित भए गेल।

102 समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥ 1.227.C2
103 तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥ 1.228.C2
अगिला दिन भोरमे पूजाक समय भेला पर गुरु सँ अनुमति लए दुनू भाय फूल लेबऽ लेल चलि पड़लाह। ताहि काल सीता सेहो ओतय अयलीह। सीताके हुनक माता पार्वती पूजनक लेल फूल लाबय ओहि ठाम पठौने छलखिन्ह।

104 देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा ॥ 1.230.C5
105 लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए॥ 1.232.C3
ओहि ठाम पहिल बेरि सीताके सौंदर्य देखि कऽ रामके बड्ड सुख भेटलैन। मोने-मोन ओ हुनकर प्रशंसा कयलाह, मुदा मुँह सँ एकोटा शब्द नहि निकलल। तखने सीताके सखि सभ लताक ओट सँ सेहो सुंदर श्याम आ गौरवर्णक राजकुमारके देखौलनि।

106 लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ। 1.232.D1
107 निकसे जनु जुग बिमल बिधु जलद पटल बिलगाइ ॥ 1.232.D2
एहि बीच दुनू भाई लताके बीच सँ ऐना प्रकट भेलाह जेना मेघके चीर कऽ चाँद निकलल होय।

108 सकुचि सीयँ तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥ 1.234.C3
109 गई भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोली कर जोरी ॥ 1.235.C4
सीता सकुचाइत अपन आँखि खोललैन आओर रघुकुल कऽ दू टा सिंह समान बलशाली कुमार कऽ निहारय लगलीह। तत्पश्चात सीता माँ भवानी कऽ मंदिर गेलीह आ हुनक चरण वन्दना कय हाथ जोड़िके कहलनि

110 जय जय गिरिबरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी ॥ 1.235.C5
111 जय गजबदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि दुति गाता ॥ 1.235.C6
हे पर्वतराज पुत्री! हे महादेव शंकरक मुखरूपी चन्द्रमा कऽ चकोरी! हे गज सन मुँहबला गणेश आ छऽटा मुँहबला कार्तिकेयक माता! हे जगतजननी! बिजली सदृश कांतिमय देहवाली! अपनेक जय हो।

112 मोर मनोरथु जानहु नीकें। बसहु सदा उर पुर सबही कें ॥ 1.236.C3
113 सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥ 1.236.C7
"अहाँ हमर मनोरथ खूब नीक सँ जनैत छी, किएक तऽ अपनेक बास सबहक मोनमे अछि।" सीताक प्रार्थना सुनि माँ पार्वती कहलनि, "हमरा आशीर्वाद सँ अहाँके मोनक इच्छा अवश्य पूर्ण होयत।"

114 मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो। 1.236.X9
115 करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥ 1.236.X10
116 एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली। 1.236.X11
117 तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥ 1.236.X12
"अहाँके मोनमे जे सुंदर वर बसल छैथ, से शीघ्र सहजता सँ भेट जेताह। ओ करुणाके धाम छथि, सर्वज्ञ छथि, अहाँके शील आ स्नेह कऽ जनैत छथि।" माँ पार्वती कऽ आशीर्वाद सुनि सीता आ हुनकर सखि सभ प्रसन्न भेलीह। तुलसीदास कहैत छथिन्ह, "माँ भवानीके बेरि -बेरि पूजा कए सीता प्रसन्न मोन सँ अपन महल चैल गेलीह।"

118 जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। 1.236.S1
119 मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥ 1.236.S2
माँ गौरीके अपन अनुकूल बूझि सीताजी कऽ हृदयमे जे अपार हर्षक अनुभूति भेलन्हि, तकर वर्णन नहि कयल जा सकैत अछि। सुंदर मंगलमय समय अयबाक सन्देश दैत हुनकर बामा अंग फड़कय लगलैन्ह।

120 हृदयँ सराहत सीय लोनाई। गुर समीप गवने दोउ भाई॥ 1.237.C1
121 सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे॥ 1.237.C4
ओम्हर दुनू भाई सेहो अपन हृदयमे सीताजीके सौंदर्यक सराहना करैत-करैत गुरुक लऽग पहुँचलाह। गुरु दुनू भायके आशीर्वाद दैत कहलैन कि अहाँके सब मनोरथ पूर्ण होय। ई सुनि राम आ लक्ष्मण बड्ड प्रसन्न भेलाह।

122 पुनि मुनिबृंद समेत कृपाला। देखन चले धनुषमख साला॥ 1.240.C4
123 हरषे जनकु देखि दोउ भाई। मुनि पद कमल गहे तब जाई॥ 1.244.C4
तत्पश्चात मुनि सभक संग राम धनुष यज्ञशाला देखबाक लेल चललाह। महाराज जनक दुनू भाइके देखि कऽ बड्ड प्रसन्न भेलाह। ओ मुनिके चरणकमल पकड़ि कऽ हुनका रंगमंचक दिस लऽ गेलखिंह।

124 सब मंचन्ह ते मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल। 1.244.D1
125 मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल॥ 1.244.D2
ओहि ठाम जे मंच सभ सँ सुंदर, उज्ज्वल आ विशाल छलै, ओहि पर राजा दुनू भाई आ मुनिके बैसेलैन।

126 बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल। 1.249.D1
127 पन बिदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल॥ 1.249.D2
तखन राजा जनकक भाट सभ ई यह शुभ घोषणा केलक, "हे नृप जन! आब हम अहाँ सभके महाराज जनकक प्रण कहैत छी।"

128 नृप भुजबलु बिधु सिवधनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू॥ 1.250.C1

"ई तऽ सभ गोटे जनैत छैथ कि जौं राजा सभक बल चन्द्रमा अछि तऽ शिवक धनुष राहु छैक, जे बहुत भारी आ कठोर अछि।"

129 सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा। राज समाज आजु जोइ तोरा॥ 1.250.C3
130 त्रिभुवन जय समेत बैदेही। बिनहिं बिचार बरइ हठि तेही॥ 1.250.C4
"त्रिपुरारी शिवक ई कठोर धनुषके जे कोनो राजा आई तोड़ताह, तीनू लोकक विजयक संग राजकुमारी सीता बिना कोनो सोच-विचारके निश्चित रूप सँ ओकरा संग विवाह करतीह।"

131 सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिसय मन माखे॥ 1.250.C5
132 तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं। उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं॥ 1.250.C7
महाराज जनकके ई प्रण सुनि सभ राजा सबहक के मोनमे सीता जीक संग विवाह करबाक इच्छा जागि उठलैन। एकर बाद ओ वीर अभिमानी मोने-मन तमतमाइत, बड्ड ताव सँ शिवक धनुष देखिके, ध्यान सँ ओहिके पकड़िके, सब तरहे जोर लगबैत उठयबाक प्रयत्न करय लगलाह, मुदा धनुष हुनका सभ सँ हिलैत तक नहि छलैन्ह।

133 तमकि धरहिं धनु मूढ़ नृप उठइ न चलहिं लजाइ। 1.250.D1
134 मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ॥ 1.250.D2
मूढ राजा तमकि कऽ धनुषके पकड़बा कऽ कोशिश करैत छलाह, मुदा जखन ओ हुनका सभ सँ नहि उठैत छलैन्ह, तऽ ओ सभ लज्जित भऽ वापस चलि जाइत छलाह। ऐना लगैत रहय कि वीर सबहक भुजाक स्पर्श सँ बल पाबि धनुष और भारी भेल जाइत छल।

135 नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनु साने॥ 1.251.C6
136 अब जनि कोउ माखै भट मानी। बीर बिहीन मही मैं जानी॥ 1.252.C3
राजा सबहक ई दशा देखि जनक जी व्याकुल भऽ गेलाह आ क्रोधित भएके बजलाह, "अपन वीरता पर गर्वित होमय बला कोनो वीर हमर बात सुनिके क्रोधित नै होयब। हम बूझि गेल छी कि धरती आब वीर-विहीन भए गेल अछि।"

137 रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई। तेहिं समाज अस कहइ न कोई ॥ 1.253.C1
ई वचन सुनि लक्ष्मण कहलनि, "जाहि समाजमे एकोटा रघुवंशी होय, ओतय एहन बात नहि बजबाक चाही।"

138 लखन सकोप बचन जे बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥ 1.254.C1
139 सकल लोग सब भूप डेराने। सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने॥ 1.254.C2
लक्ष्मणक क्रोधपूर्ण बात सुनि धरती डगमगाय लगलीह आ दिशा सभके हाथी काँपय लागल। ओहि ठाम उपस्थित सभ लोक आ राजा डरि गेलाह। सीताके हृदयमे हर्ष भेलन्हि आ राजा जनक सेहो अपन बाजल बातके सोचिके सकुचाय गेलाह।

140 बिस्वामित्र समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी ॥ 1.254.C5
141 उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा ॥ 1.254.C6
तखन शुभ समय जानि विश्वामित्र अतिशय स्नेह सँ कहलनि, "हे राम उठू! शिवधनुष तोड़िके जनक जीके कष्ट मेटाउ।"

142 उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बालपतंग। 1.254.D1
143 बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥ 1.254.D2
तत्पश्चात मंचरूपी उदयगिरि पर सँ रघुकुलमे श्रेष्ठ राम बाल सूरजक जेंका उदित भेलाह। ई दृश्य देखि सब कमल रूपी संत प्रसन्न भऽ गेलाह आ हुनक नेत्र रूपी भ्रमर हर्षित भए गेल।

144 गुरहि प्रनामु मनहिं मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा॥ 1.261.C5
145 तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥ 1.261.C8
राम मोने-मन गुरुके प्रणाम कए, अत्यंत फुर्ती सँ धनुषके उठा लेलाह आ धनुष कऽ ओहि क्षण बीच सँ तोड़ि देलाह, जकर भयंकर ध्वनि सब लोकमे गुंजायमान भए गेल।

146 सतानंद तब आयसु दीन्हा। सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा ॥ 1.263.C8
147 गावहिं छबि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली॥ 1.264.C8

तकर बाद गुरु शतानन्दक आज्ञा भेटला पर सीता रामक लऽग गेलीह। ओहि सुंदर दृश्यके देखि हुनक संगी सब मधुर गीत गाबय लगलीह। सीता रामक गलामे वरमाला पहिरा देलन्हि।

148 तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा। आयउ भृगुकुल कमल पतंगा॥ 1.268.C2
149 अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड़ जनक धनुष कै तोरा॥ 1.270.C3
शिवधनुषके टूटबाक ध्वनि सुनि भृगुकुल रूपी कमलक सूर्य परशुराम ओतय आबि गेलाह। ओ बहुत तमसायके अति कठोर वचनमे बजलाह, "अरे मूढ़ जनक! कहू, ई धनुषके तोड़लक?"

150 अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं॥ 1.270.C5
ऋषिके वचन सुनि राजा जनक बहुत डरा गेलाह, हुनका कोनो जवाब नै फुराइत छलैन्ह। ई देखि ओतय आयल दुष्ट राजा सभ मोने-मोन बड्ड प्रसन्न भेलाह।

151 सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु। 1.270.D1
152 हृदयँ न हरषु बिषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु॥ 1.270.D2
जखन राम सभ लोकके भयभीत आ सीताके सहमल अवस्थामे देखलनि तऽ ओ अपना हृदयमे बिना कोनो प्रसन्नता अथवा दु:खक भाव सँ कहलनि।

153 नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥ 1.271.C1
154 सुनहु राम जेहिं सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥ 1.271.C4
"हे नाथ शिवाजीके एहि धनुषके तोड़यबला अपनेक कोनो दास होयत।" ताहि पर परशुराम कहैय लगलाह, "सुनू राम! जे कियो एहि शिवधनुषके तोड़लक, ओ सहस्रबाहुक समान हमर शत्रु छी।"

155 सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने॥ 1.271.C6
156 बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥ 1.271.C7
परशुरामक बात सुनि लक्ष्मण मुसुकाए कऽ अपमानजनक स्वरमे कहय लगलाह, "हे गोसाईं! हम सब लड़कपनमे एहन छोट-छोट बहुत रास धनुष तोड़ने छी, मुदा एहि सँ पहिने तऽ अपने ऐना कहियो नहि तमसायल छलहुँ।"

157 छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू॥ 1.272.C3
"ई धनुष तऽ छुबिते टूटि गेल, एहिमे रघुनाथ जीक भला कोन दोष? हे मुनि! अहाँ अकारण कियेक तमसाय छी?"

158 बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा॥ 1.272.C4
159 बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही॥ 1.272.C5
परशुराम अपन फरसा दिस देखिके कहय लगलाह, "अरे शठ! लगैत अछि तू हमर स्वभावक बारेमे नहि सुनले छें। हम तोरा बालक बुझि कऽ नहि मारि रहल छिऔ। अरे मूर्ख! की तू हमरा मात्र मुनि बुझि रहल छें?"

160 बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी॥ 1.273.C1
161 पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥ 1.273.C2
लक्ष्मण हँसि कऽ कोमल वाणीमे कहय लगलाह, "अहो मुनिश्रेष्ठ! ओ जी अपने तऽ महान योद्धा छी, बारम्बार अपन फरसा ऐना देखा रहल छी, जेना फूँइक कऽ पहाड़ उड़बय चाहैत छी।"

162 लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसानु। 1.276.D1
163 बढ़त देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु॥ 1.276.D2
लक्ष्मणक ई उत्तर परशुरामके क्रोधमे आगिक आहुति सन छल। हुनक क्रोधके बढैत देखि रघुकुलक सूरज रामचन्द्र शीतल जलक सदृश ई शांत वचन कहलनि।

164 सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना। बालक बचनु करिअ नहिं काना॥ 1.279.C2
165 बिप्रबंस कै असि प्रभुताई। अभय होइ जो तुम्हहि डेराई॥ 1.284.C5
"हे नाथ! अपने तऽ स्वभाव सँ ज्ञानी छी। अपनेक बालकक बात पर ध्यान नहि देबाक चाहि। विप्रवंशक ऐहन महिमा अछि कि जे अपने सँ डराइत अछि, ओ सब सँ बेसी अभय भए जाइत अछि।"

166 सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के॥ 1.284.C6
167 राम रमापति कर धनु लेहू। खैंचहु मिटै मोर संदेहू॥ 1.284.C7

रघुनाथक कोमल मुदा गूढ़ वचन सुनि परशुरामक बुद्धि स्थिर भेलन्हि। ओ कहलनि, "हे राम! हे लक्ष्मीपति! हमर ई धनुष हाथमे लऽ कऽ जोर सँ तानू, जाहि सँ हमर संदेह खतम भऽ जाए।"

168 देत चापु आपुहिं चलि गयऊ। परसुराम मन बिसमय भयऊ ॥ 1.284.C8
169 कहि जय जय जय रघुकुलकेतू। भृगुपति गए बनहि तप हेतू ॥ 1.285.C7
एकर बाद परशुराम धनुष रामक हाथमे देबय कऽ उपक्रम करय लगलाह, मुदा उ धनुष अपने आप रामक हाथमे चलि गेल। ई देखि परशुरामके बड्ड आश्चर्य भेलन्हि आओर ओ रामक जय-जयकार करैत तप करबाक लेल वनमे चलि गेलाह।

170 जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा। प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा॥ 1.286.C5
171 मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाईं। अब जो उचित सो कहिअ गोसाईं॥ 1.286.C6
तकर बाद राजा जनक मुनि विश्वामित्रके प्रणाम कऽके कहलनि, "अपनेक कृपा सँ राम ई धनुष तोड़लाह। आई दुनू भाय हमरा कृतार्थ कए देलन्हि। हे स्वामी! आब हमरा उचित आज्ञा दिय।"

172 दूत अवधपुर पठवहु जाई। आनहिं नृप दसरथहि बोलाई॥ 1.287.C1
173 मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला। पठए दूत बोलि तेहि काला॥ 1.287.C2
मुनिवर कहलनि, "अपने संदेशवाहक कऽ अयोध्या पठाय महाराज दशरथके एहि ठाम आबय लेल कहिऔन।" राजा जनक प्रसन्न भएके कहलनि, "हे कृपालु! अति उत्तम!" आ तत्काल अपन संदेशवाहकके अयोध्या पठेलाह।

174 पहुँचे दूत राम पुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन॥ 1.290.C1
175 करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही। मुदित महीप आपु उठि लीन्ही॥ 1.290.C3
संदेशवाहक रामक पवित्र नगरी अयोध्या पहुँचल, आओर ओहि सुंदर नगरके देखि बड्ड प्रसन्न भेल। ओ महाराज दशरथके प्रणाम कए जनक जी कऽ संदेश पत्र हुनका देलक, राजा अति प्रसन्नतापूर्वक स्वयं उठिके सन्देश पत्र लेलाह।

176 तब उठि भूप बसिष्ट कहुँ दीन्हि पत्रिका जाइ। 1.293.D1
177 कथा सुनाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ॥ 1.293.D2

तकर बाद राजा स्वयं वसिष्ठ जीके पत्रिका दए कऽ, दूत सभके सादर बजाय हुनका सँ सब बात सुनलैन।

178 चढ़ि चढ़ि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बरात। 1.299.D1
179 होत सगुन सुन्दर सबहि जो जेहि कारज जात॥ 1.299.D2

एकर बाद सब किछु बूझि-जानि गुरुदेवक अनुमति पाबि राजाक आदेश सँ नगरक बाहर बहुत रास रथ पर बरियाती सजए लागल। जे सब एहि काजमे लागल छलाह हुनका सभके शुभ सुंदर सगुन होमय लागल।

180 सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना। बरषहिं सुमन बजाइ निसाना॥ 1.314.C1
181 प्रेम पुलक तन हृदयँ उछाहू। चले बिलोकन राम बिआहू॥ 1.314.C3

देवतागण सुमंगल अवसर जानि ढोल- नगाड़ा बजबैत, फूल बरसाबय लगलाह। ओ सभ प्रेम सँ पुलकित भए आ हृदय सँ उत्साहित भऽके रामचन्द्र जीक बियाह देखऽ चललाह।

182 दसरथु सहित समाज बिराजे। बिभव बिलोकि लोकपति लाजे॥ 1.319.C5
183 एहि बिधि रामु मंडपहिं आए। अरघु देइ आसन बैठाए॥ 1.319.C8

जनकपुर पहुँचि दशरथ जी अपन सऽर-समाजक संग विराजमान भेलाह। हुनक वैभव देखि लोकपाल सेहो लजाय गेलाह। राम मण्डपमे अयलाह, हुनका अर्घ्य दऽ कऽ आसन पर बैसायल गेल।

184 सीय सँवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहिं चलीं लवाई॥ 1.322.C8
185 तेहि अवसर कर बिधि ब्यवहारू। दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू॥ 1.323.C8

सीताजी कऽ श्रृंगार कएके सखि सभ हुनका मण्डपमे लऽ आनलीह। दुनू कुलक गुरु सब ओहि अवसरक रीति व्यवहार आ कुलाचार संपन्न केलैन।

186 होम समय तनु धरि अनलु अति सुख आहुति लेहिं। 1.323.D1
187 बिप्र बेष धरि बेद सब कहि बिबाह बिधि देहिं॥ 1.323.D2

हवनक समय अग्निदेव शरीर धारण कए अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक आहुति लेलैन। चारू वेद ब्राह्मणक रूप धरि विवाहक विधि बताबय लगलाह।

188 कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं। नयन लाभु सब सादर लेहीं ॥ 1.325.C1
189 राम सीय सिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जाति बिधि केहीं ॥ 1.325.C8
सुन्दर वर-कनियाँके देखिके सब गोटे आदरपूर्वक अपन नेत्रक लाभ उठाबय लगलाह। राम सीताके सौंथमे सिंदूर भरए लगलाह, एहि शोभाके वर्णन कुनो प्रकारेण नहि कएल जा सकैत अछि।

190 एहि बिधि राम बिआह उछाहू। सकइ न बरनि सहस मुख जाहू॥ 1.331.C8
191 बहुबिधि भूप सुता समुझाईं। नारिधरमु कुलरीति सिखाईं॥ 1.339.C1
अहि तरह सँ रामक विवाह-उत्सव पूर्ण भेल, जकर वर्णन हजार मुखबला शेष सेहो नहि कय सकैत छथि। राजा जनक अपन पुत्री सीताके बहुत तरहक ज्ञान कऽ बात आओर स्त्री धर्मक कुल रीति सिखौलैन।

192 सीय चलत ब्याकुल पुरबासी। होहिं सगुन सुभ मंगल रासी॥ 1.339.C3
193 चली बरात निसान बजाई। मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥ 1.343.C7
सीता कऽ विदा करैत काल नगरक लोक सभ बहुत व्याकुल भऽ गेलाह। तखन मंगल आ शुभ सगुन होमय लागल। डंका बजायके बरियाती सब चलय लागल। ताहि काल छोट-पैघ सभ लोक प्रसन्न छलाह।

194 समउ जानि गुर आयसु दीन्हा। पुर प्रबेसु रघुकुलमनि कीन्हा ॥ 1.347.C7
195 आए ब्याहि रामु घर जब तें। बसइ अनंद अवध सब तब तें ॥ 1.361.C5
अयोध्या पहुँचि कऽ उचित समय पर गुरु वसिष्ठ दशरथके नगरमे प्रवेश करबाक आज्ञा देलैन। जखन सँ राम बियाह कएके घर एलाह, अयोध्यामे सभ किछु नीक होमय लागल।

196 सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं। 1.361.S1
197 तिन्ह कहुँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु ॥ 1.361.S2
राम औ' सीताके शुभ बियाह-प्रसंग जे कियो प्रेम सँ गाबैत अथवा सुनैत छथि, ओ सदा उत्साह आओर आनंद सँ रहैत छथि, किएक तऽ रामचन्द्रजीक यश मंगलक धाम अछि।

अयोध्याकाण्ड

198 श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि । 2.0.D1
199 बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि ॥ 2.0.D2

श्री गुरुके चरण कमलक धूल सँ अपन मोनक दर्पणके साफ कऽ, श्री रघुनाथक ताहि निर्मल यशक वर्णन करैत छी, जे चारु फल (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) देबयबला अछि।

200 जब तें रामु ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए ॥ 2.1.C1
201 सब बिधि सब पुर लोग सुखारी। रामचंद मुख चंदु निहारी ॥ 2.1.C6

जखन सँ राम बियाह कएके अयोध्या एलाह, ओतय नित्य नव मंगल होमय लागल, आनंदक संगीत बाजि रहल अछि। नगरके सभ लोक रामक मुखचन्द्र देखि पूर्ण रूपेण सुखी छथि।

202 एक समय सब सहित समाजा। राजसभाँ रघुराजु बिराजा ॥ 2.2.C1
203 रायँ सुभायँ मुकुरु कर लीन्हा। बदनु बिलोकि मुकुटु सम कीन्हा ॥ 2.2.C6

एक दिन राजा दशरथ सब समाजक संग अपन राजसभामे बैसल छलाह। राजा सहज स्वभाववश दर्पण हाथमे लए ताहिमे अपन मुख देखि मुकुटक सोझ करैत छलाह।

204 श्रवन समीप भए सित केसा। मनहुँ जरठपनु अस उपदेसा ॥ 2.2.C7
205 नृप जुबराजु राम कहुँ देहू। जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥ 2.2.C8

तखने ओ देखलनि कि हुनक कानके लऽग केश उज्जर होमय लागल अछि, जेना बुढ़ापा हुनका उपदेश दए कहि रहल होय कि रामके युवराज बना कऽ अपन जीवन आ जन्मक लाभ किऐक नहि लैत छी?

206 यह बिचारु उर आनि नृप सुदिनु सुअवसरु पाइ । 2.2.D1
207 प्रेम पुलकि तन मुदित मन गुरहि सुनायउ जाइ ॥ 2.2.D2

फेर मोनमे रामके युवराज बनेबाक विचार लए, राजा एकटा शुभ दिन सुन्दर अवसर देखि पुलकित शरीर आ प्रसन्न मोन सँ गुरु वसिष्ठके अपन हृदयक बात कहलनि।

208 बेगि बिलंबु न करिअ नृप साजिअ सबुइ समाजु । 2.4.D1
209 सुदिन सुमंगलु तबहिं जब रामु होहिं जुबराजु ॥ 2.4.D2

गुरु कहलनि, "हे राजन्! आब अहाँ देरि जुनि करू, तुरत सभ समानक व्यवस्था करू। शुभ दिन आओर सुमंगल तखने होएत, जखन राम युवराज बनताह ।"

210 मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए ॥ 2.5.C1
211 जौं पाँचहि मत लागै नीका। करहु हरषि हियँ रामहि टीका ॥ 2.5.C3

राजा प्रसन्न भए अपन महल पहुँचलाह आ सुमंत्र आदि मंत्री सभके बजा कऽ कहलनि, "जौं सब पंचके उचित लागए तऽ हर्षित मोन सँ रामके राजतिलक करू।"

212 जग मंगल भल काजु बिचारा। बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥ 2.5.C6
213 सुनत राम अभिषेक सुहावा। बाज गहागह अवध बधावा ॥ 2.7.C3

मंत्री सभ कहलाह जे, "अपने विश्वक मंगल करए बला काज सोचलहुँ। हे नाथ! एकरा शीघ्रे कऽ लेल जाए, देरि जुनि करू।" रामक राज्याभिषेक कऽ सुहावन समाचार सुनितै अयोध्यामे बहुत धूम सँ बाजा बाजए लागल।

214 दीख मंथरा नगरु बनावा। मंजुल मंगल बाज बधावा ॥ 2.13.C1
215 पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू। राम तिलकु सुनि भा उर दाहू ॥ 2.13.C2

रानी कैकेयीक दासी मंथरा जखन देखलक कि नगर सजल छैक आ चारु दिस सुंदर मंगल ध्वनि बाजि रहल अछि, तऽ उ लोक सभ सँ उत्सव मनेबाक कारण पूछलक। रामक अभिषेक कऽ बात सुनि ओकर हृदय जरि गेल।

216 भरत मातु पहिं गइ बिलखानी। का अनमनि हसि कह हँसि रानी ॥ 2.13.C5

ओ उदास भऽ के भरतक माय कैकेयी लऽग गेल। रानी ओकरा सँ हँसि कऽ पुछलनि, "अहाँ उदास किएक छी?"

217 सभय रानि कह कहसि किन कुसल रामु महिपालु । 2.13.D1
218 लखनु भरतु रिपुदमनु सुनि भा कुबरी उर सालु ॥ 2.13.D2
मंथरा के चुप देखि रानी चिंतित भऽ गेलीह आओर डरायत-डरायत पूछय लगलीह, "अरे! किछु कहैत किएक नै छें? राम, लक्ष्मण, भारत, शत्रुघ्न आ महाराज दशरथ कुशल सँ तऽ छथि?" ई कथन सुनि कुब्बर मंथराके बहुत पीड़ा भेल।

219 रामहि छाड़ि कुसल केहि आजू । जेहि जनेसु देइ जुबराजू ॥ 2.14.C2
220 जारै जोगु सुभाउ हमारा । अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥ 2.16.C7
ओ कहए लागल,"हे रानी! रामके छोंड़ि आजुक दिन आओर कियो कुशल सँ नै अछि। जिनका राजा युवराज बनाबय बला छथि। हमर तऽ स्वभावे ईर्ष्यालु अछि, मुदा की करी, अहाँके अधलाह हमरा सँ देखल नहि जाइत अछि।"

221 भावी बस प्रतीति उर आई। पूँछ रानि पुनि सपथ देवाई॥ 2.19.C1
222 रामहि तिलक कालि जौं भयऊ । तुम्ह कहुँ बिपति बीजु बिधि बयऊ ॥ 2.19.C6
होनीके कारण कैकेयी कऽ मंथरा पर विश्वास भऽ गेल, फेर शपथ खुआके रानी ओकरा सँ सब बात पूछए लगलीह। मंथरा कहय लागल, "जौं कालि्ह रामके राजतिलक भऽ गेल तऽ बूझि लेब कि ब्रह्मा अहाँके लेल कष्टक बीज रोपि देलनि।"

223 कैकयसुता सुनत कटु बानी । कहि न सकइ कछु सहमि सुखानी ॥ 2.20.C1
224 काह करौं सखि सूध सुभाऊ । दाहिन बाम न जानउँ काऊ ॥ 2.20.C7
मंथराके तीत बात सुनि कैकेयी डराय गेलीह, लेकिन किछु बाजि नहि सकलीह। फेर कनि सम्हैर कऽ रानी कहलनि, "हे सखी! हम की करू? हमर तऽ स्वभावे सोझ अछि, हम तऽ दाहिना-बायाँ किछु नै बुझैत छी।"

225 अपनें चलत न आजु लगि अनभल काहुक कीन्ह । 2.20.D1
226 केहिं अघ एकहि बार मोहि दैअँ दुसह दुखु दीन्ह ॥ 2.20.D2
"अपना जनैत हम आजु तक ककरो अधलाह नहि कएलहुँ, नै जानि कोन पापक विधाता हमारा ई असहनीय दु:ख दऽ रहल छैथ।"

227 दुइ बरदान भूप सन थाती। मागहु आजु जुड़ावहु छाती॥ 2.22.C5
228 सुतहि राजु रामहि बनबासू। देहु लेहु सब सवति हुलासू॥ 2.22.C6
मंथरा कहए लागल, "अहाँके दू टा वरदान राजा लऽग धरोहर अछि, वैह राजा सँ मांगि कऽ अपन आत्मा जुराउ। अपन पुत्र भरतक लेल राज आ रामक लेल वनवास माँगि कऽ सौतक आनंद छीन लिय।"

229 कोप समाजु साजि सबु सोई। राजु करत निज कुमति बिगोई॥ 2.23.C7
230 कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ। भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ॥ 2.25.C1
आब रानी कैकेयी तमसाय कए ताम-झामक संग कोप भवनमे जा कऽ सुति गेलीह। ओ दुर्बुद्धि सँ ग्रसित भऽ गेलीह। कैकेयीके कोपभवन जेबाक बात सुनि राजा दशरथ सहमि गेलाह। डरक मारे हुनक पैर आगु नहि बढ़ैत छल।

231 जाइ निकट नृपु कह मृदु बानी। प्रानप्रिया केहि हेतु रिसानी॥ 2.25.C8
232 बिहसि मागु मनभावति बाता। भूषन सजहि मनोहर गाता॥ 2.26.C7
कैकेयी लऽग आबि राजा कोमल वचनमे कहय लगलाह, "हे प्राणप्रिये! अहाँ आजुक दिन किएक रुसल छी? कनि हँसिके अपन मनपसंद वस्तु माँगि लिय आ अपन सुंदर अंगके आभूषण सँ सेहो अलंकृत कए लिय।"

233 मागु मागु पै कहहु पिय कबहुँ न देहु न लेहु। 2.27.D1
234 देन कहेहु बरदान दुइ तेउ पावत संदेहु॥ 2.27.D2
कैकेयी कहय लगलीह, "हे प्रियतम! अहाँ 'माँगू-माँगू' कहैत जरूर छी, मुदा कहियो किछु दैत नहि छी। अपने दूटा वरदान देने छलहुँ, हमरा तऽ ओहो भेटबामे संदेह अछि।"

235 थाती राखि न मागिहु काऊ। बिसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ॥ 2.28.C2
236 रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्रान जाहुँ बरु बचनु न जाई॥ 2.28.C4
राजा कहलनि, "धरोहर राखि कऽ अहाँ तऽ हमरा सँ कहियो किछु मंगलौ नहि। अपन बिसरै कऽ स्वभावक कारणे हमरो मोन नहि रहल। रघुकुलमे सदा सँ यैह रीति

चलि आयल अछि कि प्राण भलए चलि जाय, मुदा देल वचन सँ पाछू नै हटल जाइत छैक।"

237 सुनहु प्रानप्रिय भावत जी का। देहु एक बर भरतहि टीका॥ 2.29.C1
238 तापस बेष बिसेषि उदासी। चौदह बरिस रामु बनबासी॥ 2.29.C3

कैकेयी कहय लगलीह, "हे प्राणप्रिय! हमर मनपसंद पहिल वर यैह दिय कि भरतके राजतिलक होय। हमर दोसर वर अछि कि राम तपस्वीक वेषमे उदासीन भाव सँ चौदह वर्ष वनमे बास करैथ।"

239 बोले राउ कठिन करि छाती। बानी सबिनय तासु सोहाती॥ 2.31.C4

कैकेयी कऽ वचन सुनिके राजा एकदम सँ सहमि गेलाह, ओ अपन मोन स्थिर कएके बड्ड विनम्रता सँ रानीके प्रिय वाणीमे कहए लगलाह,

240 लोभु न रामहि राजु कर बहुत भरत पर प्रीति। 2.31.D1
241 मैं बड़ छोट बिचारि जियँ करत रहेउँ नृपनीति॥ 2.31.D2

"राम कऽ राज्यक कोनो लोभ नहि छैन्ह, ओ तऽ भरत सँ बहुत प्रेम करैत छैथ। हमही पैघ-छोटक विचार करैत राजनीतिके पालन करए छलहुँ।"

242 कहउँ सुभाउ न छलु मन माहीं। जीवनु मोर राम बिनु नाहीं॥ 2.33.C2
243 मागु माथ अबहीं देउँ तोही। राम बिरहँ जनि मारसि मोही॥ 2.34.C7

दशरथ कहलैथ, "मोनमे बिना कोनो छल-कपट के कहए छी कि रामक बिनु हमर जियब सम्भव नहि अछि। अहाँ हमर मस्तक माँगि लिय, एखनहि दऽ देब, मुदा रामक विरहमे हमरा जुनि मारू।"

244 राम राम रट बिकल भुआलू। जनु बिनु पंख बिहंग बेहालू॥ 2.37.C1

एकर बाद राम-राम रटैत-रटैत राजा दशरथ ऐना व्याकुल भऽ गेलाह, जेना बिनु पंखक पक्षी बेहाल भऽ जाइत अछि।

245 गए सुमंत्रु तब राउर माहीं। देखि भयावन जात डेराहीं॥ 2.38.C3
246 सचिउ सभीत सकइ नहिं पूँछी। बोली असुभ भरी सुभ छूँछी॥ 2.38.C8

भोर भेला पर मंत्री सुमंत्र राजमहल गेलाह, मुदा ओहि ठामक भयानक स्थिति देखि हुनका भीतर जाइत डर लगैत छलन्हि। डरक मारे हुनका किछु पूछिलो नै जाइत छलैन। तखन अशुभ सँ भरल कैकेयी कहलनि।

247 परी न राजहि नीद निसि हेतु जान जगदीसु। 2.38.D1
248 रामु रामु रटि भोरु किय कहइ न मरमु महीसु॥ 2.38.D2

"राजाक राति भइर नीन नहि भेलन्हि, कारण तऽ ईश्वरे जानैथ। राम-राम रटिके भोर कऽ देलैन, पुछला सँ कोनो कारण नहि बतबैत छैथ।"

249 आनहु रामहि बेगि बोलाई। समाचार तब पूँछेहु आई॥ 2.39.C1
250 करुनामय मृदु राम सुभाऊ। प्रथम दीख दुखु सुना न काऊ॥ 2.40.C3

"तैं अहाँ जल्दी सँ रामके बजाउ, तखन आबि कऽ सब समाचार पूछि लेब।" राम तऽ स्वभावे सँ कोमल आ करुणामय छथि। राम ओतय आबि पहिल बेर ओहन दुःख देखलनि, जे पहिने कियो सुनने नहि छल।

251 मोहि कहु मातु तात दुख कारन। करिअ जतन जेहिं होइ निवारन॥ 2.40.C5
252 देन कहेन्हि मोहि दुइ बरदाना। मागेउँ जो कछु मोहि सोहाना॥ 2.40.C7

ओ कैकेयी सँ कहलनि, "हे माता! हमरा पिताजीके दुःखक कारण कहू, जाहि सँ समाधान कएल जा सकय।" कैकेयी कहलनि, "हे राम! राजा हमरा दूटा वरदान देने छलाह। हमरा जे नीक लागल, से माँगि लेलहुँ।"

253 सब प्रसंगु रघुपतिहि सुनाई। बैठि मनहुँ तनु धरि निठुराई॥ 2.41.C4
254 भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू॥ 2.42.C1

रामके सब किछु कहि रानी कैकेयी निष्ठुर भए बैसि गेलीह। तखन राम कहलाह, "हमर प्राणप्रिय भाय भरतके राज भेटतनि, आजु विधाता सब तरहें हमर अनुकूल छथि।"

255 जौं न जाउँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा॥ 2.42.C2
256 आयसु पालि जनम फलु पाई। ऐहउँ बेगिहिं होउ रजाई॥ 2.46.C3

"जौं ऐहन काजक लेल हम वन नहि जायब तऽ मुर्खाहा कऽ समाजमे हमर गिनती सब सँ पहिने होयत। अपनेक आज्ञा कऽ पालन कए आओर अपन जन्मक फल पाबि हम जल्दी लौटिके आबि जायब। तैं हमरा जयबाक आज्ञा दिय।"

257 समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाइ। 2.57.D1
258 जाइ सासु पद कमल जुग बंदि बैठि सिरु नाइ॥ 2.57.D2

जखन सीताके रामक वन जेबाक समाचार भेटलनि तऽ ओ व्याकुल भए गेलीह। अपन सासु लऽग जाय हुनक दुनू चरणकमलक वंदना कए शीश झुकायके बैसि गेलीह।

259 चलन चहत बन जीवन नाथू। केहि सुकृती सन होइहि साथू॥ 2.58.C3
260 की तनु प्रान कि केवल प्राना। बिधि करतबु कछु जाइ न जाना॥ 2.58.C4

ओ मोने-मन सोचय लगलीह कि हमर प्राणनाथ आजु वन जा रहल छथि, हमर कोन पुण्यकर्म कऽ बल सँ हुनका संग रहनाए संभव होयत। हमर शरीर आओर प्राण दुनू हुनक संगे जायत या मात्र प्राण? विधाता की करए बला छथि, किछु पता नहि।

261 मातु समीप कहत सकुचाहीं। बोले समउ समुझि मन माहीं॥ 2.61.C1

राम माताके सोंझा कहयमे सकुचाइत छलाह, मुदा समयक आवश्यकता देखि सीता सँ कहलनि।

262 हंसगवनि तुम्ह नहिं बन जोगू। सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू॥ 2.63.C5
263 रहहु भवन अस हृदयँ बिचारी। चंदबदनि दुखु कानन भारी॥ 2.63.C8

"हे हंसगामिनी! अहाँ वनक योग्य नहि छी। अहाँके गेला सँ लोक सभ हमरा अपयश देत। हृदयमे यैह विचारि कऽ अहाँ एहि ठाम रहु। हे चन्द्रमुखी! वनमे बड्ड भारी कष्ट होयत।"

264 सहज सुहृद गुर स्वामि सिख जो न करइ सिर मानि। 2.63.D1
265 सो पछिताइ अघाइ उर अवसि होइ हित हानि॥ 2.63.D2

"स्वभाव सँ नीक चाहयबला गुरु आओर स्वामीक शिक्षाके जे सिरोधार्य नहि करैत अछि, ओ मोने-मन बहुत पछताएत अछि, ओकरा हानि अवश्य होएत छैक।"

266 मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं। पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं॥ 2.64.C7
267 कहेउ कृपाल भानुकुलनाथा। परिहरि सोचु चलहु बन साथा॥ 2.68.C3
सीता कहलनि, "हे नाथ! हमहुँ एहि बारेमे मोने-मन बेरि- बेरि विचार कयलौं, पति सँ वियोग सन दु:ख संसारमे कोनो नहि छैक।" हुनक कथन सुनि कऽ सूर्यवंशक स्वामी कृपालु राम सीता सँ सोच-विचार केनाय छोड़िके संग चलबाक लेल कहलनि।

268 समाचार जब लछिमन पाए। ब्याकुल बिलख बदन उठि धाए॥ 2.70.C1
269 राम बिलोकि बंधु कर जोरें। देह गेह सब सन तृनु तोरें॥ 2.70.C6
जखन लक्ष्मण ई समाचार सुनलनि, तऽ ओ बड्ड व्याकुल भए खिन्न मोन सँ रामक लऽग गेलाह। राम देखलनि कि भाय लक्ष्मण सभ सँ नाता तोड़ि कऽ हाथ जोड़िके हुनका समक्ष ठाढ़ छथि।

270 मैं बन जाउँ तुम्हहि लेइ साथा। होइ सबहि बिधि अवध अनाथा॥ 2.71.C3
271 गुरु पितु मातु प्रजा परिवारू। सब कहुँ परइ दुसह दुख भारू॥ 2.71.C4
राम कहलनि, "जौं हम अहाँके अपना संगे वन लए जायब, तऽ अयोध्या सब तरहें अनाथ भए जायत। गुरु, पिता, माता आ समस्त परिवार पर असहनीय दु:खक बोझ पड़ि जायत।"

272 उतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाइ। 2.71.D1
273 नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु त काह बसाइ॥ 2.71.D2
प्रेमवश लक्ष्मण सँ किछु नहि कहल जाइत अछि। ओ अकुलायके रामक चरण पकड़िके कहलनि, "हे नाथ! अहाँ स्वामी छी आ हम अपनेक दास छी। हमरा छोड़ियो देब तऽ हमर की वश?"

274 गुर पितु मातु न जानउँ काहू। कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू॥ 2.72.C4
275 मोरें सबइ एक तुम्ह स्वामी। दीनबंधु उर अंतरजामी॥ 2.72.C6

“हे नाथ हम अपन स्वभाव अपने सँ कहैत छी कि हम अहाँके छोड़ि गुरु, माता, पिता किनको नै जनैत छी। अहाँ दीनबंधु छी, सबहक हृदयक बात जनैत छी। स्वामी! हमर तऽ सभ किछु अहीं छी।”

276 मागहु बिदा मातु सन जाई। आवहु बेगि चलहु बन भाई॥ 2.73.C1
लक्ष्मणक विनती सुनि राम कहलनि, “हे भाई! जाउ माता सँ विदा माँगी कऽ आबू, जाहि सँ शीघ्र हम सब वन जाय सकी।”

277 पूँछे मातु मलिन मन देखी। लखन कही सब कथा बिसेषी॥ 2.73.C5
278 जौं पै सीय रामु बन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कछु नाहीं॥ 2.74.C4
लक्ष्मण माता सुमित्रा लऽग गेलाह। माता हुनक उदास मुख देखिके ओकर कारण पुछलनि। लक्ष्मण सभ कथा विस्तार सँ माता के सुनौलनि। सभ किछु बुझि माता कहलनि, “जौं राम आओर सीता वन जा रहल छथि तऽ अवधमे अपनेक कोनो काज नहि अछि।”

279 बंदि राम सिय चरन सुहाए। चले संग नृपमंदिर आए॥ 2.76.C2
280 सिय समेत दोउ तनय निहारी। ब्याकुल भयउ भूमिपति भारी॥ 2.76.C8
लक्ष्मण माता सँ विदा लए कऽ, राम आ सीताके सुन्दर चरणक वंदना कए हुनका संग महाराज दशरथक महलमे गेलाह। सीताक संग अपन दुनू पुत्र कऽ वनमे जेबाक लेल तैयार देखि राजा बहुत व्याकुल भए गेलाह।

281 नाइ सीसु पद अति अनुरागा। उठि रघुबीर बिदा तब मागा॥ 2.77.C2
282 रामु तुरत मुनि बेषु बनाई। चले जनक जननिहि सिरु नाई॥ 2.79.C8
राम बहुत प्रेम सँ हुनक चरणक वंदना कए विदा माँगलाह। तत्पश्चात ओ मुनिक भेषमे, माता-पिताके प्रणाम कए चललाह।

283 सजि बन साजु समाजु सबु बनिता बंधु समेत। 2.79.D1
284 बंदि बिप्र गुर चरन प्रभु चले करि सबहि अचेत॥ 2.79.D2

वन मे काज आबय बला आवश्यक सामग्री लऽके राम अपन पत्नी आ भाय सहित ब्राह्मण आ गुरुके चरणक वंदना केलैन आ सभके अचेत कए वनक लेल प्रस्थान केलाह।

285 सीता सचिव सहित दोउ भाई। सृंगबेरपुर पहुँचे जाई॥ 2.87.C1
किछु समयक पश्चात सीता आ मंत्री सुमंत्रक संग दुनू भाय श्रृंगवेरपुर पहुँचलैथ।

286 यह सुधि गुहँ निषाद जब पाई। मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई॥ 2.88.C1
287 नाथ कुसल पद पंकज देखें। भयउँ भागभाजन जन लेखें॥ 2.88.C5
जखन निषादराज गुहके रामक आबयके समाचार भेटलनि तऽ ओ अपन प्रिय भाय-बंधुक संग हुनका लऽग आबिके कहलनि "हे नाथ! अहाँ के चरणकमलक दर्शन पाबि हम धन्य भए गेलहुँ, आब हमर गिनती भागमंतमे कएल जायत।"

288 लै रघुनाथहि ठाउँ देखावा। कहेउ राम सब भाँति सुहावा॥ 2.89.C5
ओ रामके रातिमे ठहरयके स्थान देखौलनि। प्रभु हुनक प्रशंसा करैत कहलैथ जे, "ई स्थान सुंदर अछि।"

289 बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए॥ 2.100.C2
290 मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥ 2.100.C3
दोसर दिन राम जबरदस्ती सुमंत्रके अयोध्या लौट जेबाक लेल कहि, अपने गंगा कात जाय, केवट सँ गंगा पार करबाक लेल नाव माँगलाह, लेकिन केवट नाव नै आनलक। ओ कहय लागल, "जे हम अहाँके सभ राज जानि गेलहुँ।"

291 छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई॥ 2.100.C5
292 जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू॥ 2.100.C8
"अहाँके चरणक धूलिक स्पर्श पाबि पाथर स्त्री भए गेल, हमर नाव तऽ लकड़ी कऽ थीक, जे पाथर जेकाँ कठोर नहि होएत छैक। हे प्रभु! जौं अहाँ ओहि पार जाइत चाहै छी तऽ हमरा पहिने अपन चरण कमल तऽ धोएबाक आज्ञा दिय।"

293 कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई॥ 2.101.C1
294 अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा॥ 2.101.C7
कृपाक सागर राम मुसुकाएत कहलनि, "हे केवट! अहाँ वैह करु जाहि सँ अहाँके नाव पाथर नै बनय" तखन केवट बड्ड आनंदित भएके असीम प्रेम सँ भगवानक चरण कमलके धोबय लागल।

295 पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार। 2.101.D1
296 पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार॥ 2.101.D2
प्रभुके चरण धोएके आ सपरिवार ओहि जलके पीबि, केवट अपन पितर सभ के भवसागर सँ तारि देलक, तकर बाद प्रसन्नतापूर्वक प्रभुके गंगा पार लऽ गेल।

297 केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा॥ 2.102.C2
298 पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी॥ 2.102.C3
केवट गंगा पार भेला पर उतरि कऽ प्रभुके दण्डवत प्रणाम केलक। प्रभु मोने-मन सोचए लगलाह कि ओ केवटके किछु उतराई नै देलैन। स्वामीके हृदयक बात जानय बाली सीता प्रसन्न मोन सँ अपन माँणिक अँऊठि उतारि कऽ प्रभुके देलनि।

299 कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई॥ 2.102.C4
300 नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा॥ 2.102.C5
जखन राम केवट सँ उतराई लेबाक लेल कहलनि तऽ केवट व्याकुल भएके हुनकर चरण पकड़ि लेलक आ कहलक, "हे नाथ! आजु हमरा की नै भेटल? हमर दोष, दुःख आ दरिद्रता सभ आइ खतम भए गेल।"

301 बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ। 2.102.D1
302 बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ॥ 2.102.D2
राम, सीता आ लक्ष्मणके बहुत आग्रह कएलाक बादो जखन केवट किछु नहि लेलक, तऽ करुणाक धाम श्री राम अपन निर्मल भक्तिक वरदान दए केवटके विदा कएलाह।

303 तब गनपति सिव सुमिरि प्रभु नाइ सुरसरिहि माथ। 2.104.D1
304 सखा अनुज सिय सहित बन गवनु कीन्ह रघुनाथ॥ 2.104.D2
तकर बाद, प्रभु गणेश आओर शिव जी कऽ स्मरण कए, गंगा जीके शीश नवाय मित्र निषादराज गुह, भाय लक्ष्मण आ सीताक संग वन चलि गेलाह।

305 तब प्रभु भरद्वाज पहिं आए। करत दंडवत मुनि उर लाए॥ 2.106.C7
306 आजु सुफल तपु तीरथ त्यागू। आजु सुफल जप जोग बिरागू॥ 2.107.C5
ओ सब किछु समयक बाद प्रभु भरद्वाज मुनिके लऽग गेलाह आ हुनका प्रणाम केलैन, मुनि रामके हृदय सँ लगायके कहलनि, "हे प्रभु! आजु हमर तप, वैराग्य, योग, जप, त्याग, तीर्थवास, सब सफल भऽ गेल।"

307 सुनि मुनि बचन रामु सकुचाने। भाव भगति आनंद अघाने॥ 2.108.C1
308 सो बड़ सो सब गुन गन गेहू। जेहि मुनीस तुम्ह आदर देहू॥ 2.108.C3
मुनि कऽ वचन सुनि राम सकुचाय गेलाह आ भक्ति-भावक आनंद सँ तृप्त भए गेलाह। ओ कहलनि, "हे मुनीश्वर! अहाँ जकरा आदर देब वैह पैघ अछि, ओहि व्यक्तिमे सब गुणक बास होइत छैक।"

309 राम कीन्ह बिश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ। 2.108.D1
310 चले सहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरु नाइ॥ 2.108.D2
ओहि राति राम ओतय विश्राम कएलाह। भोरे-भोर प्रयाग राजमे स्नान कए, प्रसन्नतापूर्वक मुनिके प्रणाम कए ओ सीता, भाय लक्ष्मण आ सेवक गुहक संग चललाह।

311 आगें रामु लखनु बने पाछें। तापस बेष बिराजत काछें॥ 2.123.C1
312 उभय बीच सिय सोहति कैसें। ब्रह्म जीव बिच माया जैसें॥ 2.123.C2
आगू-आगू राम छथि, पाछू-पाछू लक्ष्मण। तपस्वीक वेशमे दुनू बहुत सुंदर लागि रहल छथि। दुनू के बीचमे सीता ऐना सुशोभित भए रहल छथि, जेना ब्रह्म आ जीवक बीचमे माया।

313 देखत बन सर सैल सुहाए। बालमीकि आश्रम प्रभु आए॥ 2.124.C5
314 देखि पाय मुनिराय तुम्हारे। भए सुकृत सब सुफल हमारे॥ 2.126.C1
ओ सब सुंदरवन, पोखरि आओर पर्वत सभ कऽ देखैत-देखैत प्रभु वाल्मीकि मुनिके आश्रममे पहुँचलाह। प्रभु कहलनि, "हे मुनिराज अहाँक चरणक दर्शन कए आजु हमर सभ पुण्यकर्म सफल भऽ गेल।"

315 अब जहँ राउर आयसु होई। मुनि उदबेगु न पावै कोई॥ 2.126.C2
316 अस जियँ जानि कहिअ सोइ ठाऊँ। सिय सौमित्रि सहित जहँ जाऊँ॥2.126.C5
"आब अपने ओहि स्थानक नाम कहू जतय हम, सीता आओर लक्ष्मण सहित जा कऽ रहि सकी आ ऋषि-मुनि सभके सेहो कष्ट नहि होय।"

317 पूँछेहु मोहि कि रहौं कहँ मैं पूँछत सकुचाउँ। 2.127.D1
318 जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ॥ 2.127.D2
मुनि कहलनि, "हे राम! अहाँ हमरा सँ पूछि रहल छी कि अहाँ कतए रही, हमरा त ई पूछैत संकोच भऽ रहल अछि कि ऐहन कोन स्थान छैक, जतय अहाँ नै छी! पहिले ई कहू, तखन हम अहाँके रहबाक स्थान बता सकब।"

319 काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥ 2.130.C1
320 जिन्ह कें कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह कें हृदय बसहु रघुराया॥ 2.130.C2
"जिनका मोनमे काम, क्रोध,अभिमान, मोह, क्षोभ, दंभ, माया, कपट, द्रोह नहि छैन्ह हे रघुनाथ! अहाँ हुनका हृदयमे निवास करू।"

321 तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन माहीं॥ 2.130.C5
"अहाँ के छोड़ि जिनका दोसर कोनो आश्रय नहि छैन्ह। हे राम! अहाँ हुनका मोनमे निवास करू।"

322 कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक। आश्रम कहउँ समय सुखदायक॥ 2.132.C2
323 चित्रकूट गिरि करहु निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू॥ 2.132.C3

तत्पश्चात मुनि कहलनि, "हे सूर्यकुलक नायक! समयक अनुसार अहाँके एक टा सुखदायक स्थान बतबैत छी, अहाँ चित्रकूट पर्वत पर निवास करू। ओतय अपनेक लेल सभ प्रकारक सुविधा अछि।"

324 चित्रकूट महिमा अमित कही महामुनि गाइ। 2.132.D1
325 आइ नहाए सरित बर सिय समेत दोउ भाइ॥ 2.132.D2

फेर ओ चित्रकूटक असीम महिमाक वर्णन कएलनि। सीता सहित दुनू भाय ओतय पहुँचिके श्रेष्ठ मंदाकिनी नदीमे स्नान केलैन।

326 चित्रकूट रघुनंदनु छाए। समाचार सुनि सुनि मुनि आए॥ 2.134.C5
327 जब तें आइ रहे रघुनायकु। तब तें भयउ बनु मंगलदायकु॥ 2.137.C5

राम चित्रकूटमे आबि कए रहि रहल छथि, ई समाचार सुनि बहुत ऋषि-मुनि ओतय एलाह। जखन सँ रघुकुलक नायक ओतय रहय लगलाह, तखन सँ वन मंगलदायक भए गेल।

328 कहेउँ राम बन गवनु सुहावा। सुनहु सुमंत्र अवध जिमि आवा॥ 2.142.C4
329 अवध प्रबेसु कीन्ह अँधिआरें। पैठ भवन रथु राखि दुआरें॥ 2.147.C5

तुलसीदास कहैत छथि कि हम श्री रामके सुंदर वनगमनक वर्णन कएलहुँ, आब सुमंत्र कोना अयोध्या लौटलाह, ई कथा सुनू। ओ अन्हार भएला पर अयोध्यामे प्रवेश कएलनि। ओ रथ कऽ द्वारे पर छोड़ि चुपचाप सँ राजमहलमे गेलाह।

330 अति आरति सब पूँछहिं रानी। उतरु न आव बिकल भइ बानी॥ 2.148.C1
331 जाइ सुमंत्र दीख कस राजा। अमिअ रहित जनु चंदु बिराजा॥ 2.148.C4

बहुत दुखी भएके सभ रानी हुनका सँ रामक समाचार पूछय लगलीह, लेकिन सुमंत्र व्याकुल भेलाक कारणे किछु उत्तर नहि दए सकलाह। ओ महाराजके एना बैसल देखलनि जेना बिनु अमृतक चन्द्रमा होय।

332 बिलपत राउ बिकल बहु भाँती। भइ जुग सरिस सिराति न राती॥ 2.155.C3
333 हा रघुनंदन प्रान पिरीते। तुम्ह बिनु जिअत बहुत दिन बीते॥ 2.155.C7

व्याकुल राजा तरह-तरह सँ विलाप कए रहल छथि। हुनका लेल राति युगक समान नमहर भए गेल, जेना बीतैत नहि छल। दुखित राजा कहए लगलाह, "हे रघुनंदन! हे प्राणप्रिय राम! अहाँके बिना जीबैत आब बहुत दिन बीति गेल।"

334 राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम । 2.155.D1
335 तनु परिहरि रघुबर बिरहँ राउ गयउ सुरधाम ॥ 2.155.D2

तकर बाद महाराज दशरथ बारम्बार राम-राम कहि रामक वियोगमे अपन शरीर त्यागि स्वर्ग सिधारि गेलाह।

336 सोक बिकल सब रोवहिं रानी । रूपु सीलु बलु तेजु बखानी ॥ 2.156.C3
337 बिलपहिं बिकल दास अरु दासी। घर घर रुदनु करहिं पुरबासी ॥ 2.156.C5

शोक सँ व्याकुल भए सभ रानी काइन-काइनके महाराजक रूप, शील, बल और तेजक बखान करए लगलीह। दास-दासी सेहो व्याकुल भए विलाप करय लागल। घरे-घर अयोध्यामे लोक सभ कानय लागल।

338 तेल नावँ भरि नृप तनु राखा । दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा ॥ 2.157.C1
339 धावहु बेगि भरत पहिं जाहू । नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ॥ 2.157.C2

गुरु वसिष्ठ नावमे तेल भरबाके ताहिमे राजाक शरीर रखौलनि। फेर दूत सभके बजायके कहलनि, "शीघ्र दौड़िके भरतक लग जाउ, लेकिन राजाक मृत्युके बारेमे ककरो नहि कहब।"

340 अनरथु अवध अरंभेउ जब तें । कुसगुन होहिं भरत कहुँ तब तें ॥ 2.157.C5
341 देखहिं राति भयानक सपना। जागि करहिं कटु कोटि कलपना ॥ 2.157.C6

ओम्हर जखन सँ अयोध्यामे अनर्थ प्रारंभ भेल, भरतके सेहो अपशगुन होमय लागल। ओ रातिमे भयंकर स्वप्न देखय लागलाह आ दिनमे सेहो मोनमे हरदम खराब विचार आबय लगलनि।

342 एहि बिधि सोचत भरत मन धावन पहुँचे आइ । 2.157.D1
343 गुर अनुसासन श्रवन सुनि चले गनेसु मनाइ ॥ 2.157.D2

भरत मोनमे एहि पर सोच-विचार करिते छलाह कि अयोध्या सँ दूत हुनका लए जाय लेल पहुँचल। गुरुक आज्ञा सुनि ओ तुरते यात्राक श्री गणेश केलैन।

344 सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ। 2.171.D1
345 हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ॥ 2.171.D2

अयोध्या पहुँचिके ओ सभ बात सँ अवगत भेलाह। गुरु वसिष्ठ दुखी भए हुनका कहलनि, "हे भरत सुनू होनी बड्ड बलवान होइत छैक। हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश सब बिधाताक हाथमे छैन्ह।"

346 भयउ न अहइ न अब होनिहारा। भूप भरत जस पिता तुम्हारा॥ 2.173.C6
347 रायँ राजपदु तुम्ह कहुँ दीन्हा। पिता बचनु फुर चाहिअ कीन्हा॥ 2.174.C3

"हे भरत! अहाँ कऽ पिता सन राजा नै तऽ आई तक भेल अछि, न होयत। ओ अहाँ के राज्यक सिंहासन देलनि, तैं अहाँके पिताके वचनक पालन करबाक चाही।"

348 सौंपेहु राजु राम के आएँ। सेवा करेहु सनेह सुहाएँ॥ 2.175.C8
349 कौसल्या धरि धीरजु कहई। पूत पथ्य गुर आयसु अहई॥ 2.176.C1

जखन राम वापस औताह, तखन यैह राज्य हुनका सौंपि कऽ सस्नेह हुनकर सेवा करब। माता कौसल्या सेहो धीरज राखि कहय लगलीह, "हे पुत्र! गुरुजीके आज्ञा पथ्य सन अछि अर्थात हितकारी अछि।"

350 मोहि उपदेसु दीन्ह गुर नीका। प्रजा सचिव संमत सबही का॥ 2.177.C1
351 हित हमार सियपति सेवकाईं। सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाईं॥ 2.178.C1

भरत कहलनि, "गुरु जी हमरा सुन्दर उपदेश देलनि। प्रजा आ मंत्री सबहक यैह विचार अछि। हमर भलाई तऽ श्री रामक सेवा करबामे अछि, मुदा माता कैकेयीक कुटिलताके कारणे ई अवसर हमरा सँ छीन लेल गेल।"

352 जाउँ राम पहिं आयसु देहू। एकहिं आँक मोर हित एहू॥ 2.178.C7
353 भरतहि कहहिं सराहि सराही। राम प्रेम मूरति तनु आही॥ 2.184.C4

तैं आब हमरा श्रीरामक लऽग जएबाक आज्ञा दिय। निश्चयपूर्वक हमर भलाई एहिमे अछि। सब भरतक प्रशंसा करैत कहय लगलाह कि अहांके तन रामक प्रेममे लीन साक्षात मूर्ति छी।

354 अवसि चलिअ बन रामु जहँ भरत मंत्रु भल कीन्ह। 2.184.D1
355 सोक सिंधु बूड़त सबहि तुम्ह अवलंबनु दीन्ह॥ 2.184.D2

"हे भरत! अहाँ बहुत नीक बात कहलहुँ, अपना सभके वनमे राम जतय छैथ, अवश्य जेबाक चाही। हम सब शोकक सागरमे डूबल छलहुँ, अपने आबिके हमरा सभके बहुत सहारा देलहुँ।"

356 सौंपि नगर सुचि सेवकनि सादर सकल चलाइ। 2.187.D1
357 सुमिरि राम सिय चरन तब चले भरत दोउ भाइ॥ 2.187.D2

तकर बाद विश्वासपात्र सेवक सभके नगर सौंपिके सादर सबके पठाय कऽ, राम आ सीताके चरणक स्मरण कए, दुनू भाय भरत आ शत्रुघ्न चललाह।

358 नहिं पद त्रान सीस नहिं छाया। पेमु नेमु ब्रतु धरमु अमाया॥ 2.216.C5
359 एहि बिधि भरत चले मग जाहीं। दसा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं॥ 2.220.C5

न तऽ हुनका पैरमे जूता छलन्हि, न माथ पर पाग। बस हुनक प्रेम, व्रत, नियमके मोनमे राखि भरत चललाह। भरतके एना मार्गमे जाइत देखि मुनि आ सिद्धजन सभ हुनकर प्रशंसा करय लगलाह।

360 मिलहिं किरात कोल बनबासी। बैखानस बटु जती उदासी॥ 2.224.C4
361 करि प्रनामु पूँछहिं जेहि तेही। केहि बन लखनु रामु बैदेही॥ 2.224.C5

मार्गमे हुनका किरात, कोल आदि वनवासी, वानप्रस्थ, ब्रह्मचारी, संन्यासी आ विरक्त लोक सभ सँ भेंट भेलैन। भरत हुनका प्रणाम कएके पुछलनि कि, "श्री राम, लक्ष्मण आओर सीता कोन वनमे छैथ?"

362 ते प्रभु समाचार सब कहहीं। भरतहि देखि जनम फलु लहहीं॥ 2.224.C6
363 भरत दीख प्रभु आश्रमु पावन। सकल सुमंगल सदनु सुहावन॥ 2.239.C2

ओ सब प्रभुक सभ समाचार कहैत आओर भरतके देखि अपन जन्मक फल पबैत छथि। चलैत- चलैत भरत सब मंगलक धाम, प्रभुक सुंदर आ पवित्र आश्रम देखलनि।

364 पाहि नाथ कहि पाहि गोसाईं। भूतल परे लकुट की नाईं॥ 2.240.C2
365 उठे रामु सुनि पेम अधीरा। कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा॥ 2.240.C8
"हे नाथ! हमर रक्षा करू! हमर रक्षा करू!" कहैत-कहैत भरत पृथ्वी पर एकटा डंटा जेना खसि पड़लाह। भरतक आवाज सुनि कऽ राम प्रेमवश अधीर भए गेलाह। हुनकर वस्त्र कतौ, धनुष कतौ, तरकस कतौ आ बाण कतौ जाय खसल।

366 बरबस लिए उठाइ उर लाए कृपानिधान। 2.240.D1
367 भरत राम की मिलनि लखि बिसरे सबहि अपान॥ 2.240.D2
तखन प्रभु राम अपने-आप भरतके उठाय हृदय सँ लगा लेलनि। भरत-रामक ई मिलाप देखिके सभ अपन सुधि बिसरि गेलाह।

368 तब मुनि बोले भरत सन सब सँकोचु तजि तात। 2.259.D1
369 कृपासिंधु प्रिय बंधु सन कहहु हृदय कै बात॥ 2.259.D2
तखन मुनि वसिष्ठ स्थिति कऽ संभारैत भरत सँ कहलनि, "हे तात! अहाँ सब संकोच तजिके अपन प्रिय भाय जे कृपाक सागर छथि, हुनका अपन मोनक बात कहू।"

370 देव एक बिनती सुनि मोरी। उचित होइ तस करब बहोरी॥ 2.268.C7
371 तिलक समाजु साजि सबु आना। करिअ सुफल प्रभु जौं मनु माना॥ 2.268.C8
भरत कहलनि, "हे प्रभु! हमर एकटा विनती सुनू, फेर जे उचित बुझाय से करू। हम राजतिलक कऽ सामग्री सजाके आनने छी। हे प्रभो! अपनेक मोन माने तऽ ई स्वीकार कए कार्य सफल करू।"

372 नाथ भरतु पुरजन महतारी। सोक बिकल बनबास दुखारी॥ 2.290.C4
373 उचित होइ सोइ कीजिअ नाथा। हित सबही कर रौरें हाथा॥ 2.290.C6

तखन राम गुरु वसिष्ठ सँ कहलनि, "हे नाथ! ई भरत, माता सब आ अयोध्याक लोक वनवासमे व्याकुल भए रहल छथि। तैं अहाँ के जे उचित बुझाय से करू, किएक तऽ हमर सबहक भलाई अपनेक हाथमे अछि।"

374 बिद्यमान आपुनि मिथिलेसू। मोर कहब सब भाँति भदेसू॥ 2.296.C7
375 राउर राय रजायसु होई। राउरि सपथ सही सिर सोई॥ 2.296.C8
"अपने आ महाराज जनकके होइत हमर किछु कहनाय अनुचित होयत। अहाँ दुनू जे आज्ञा देब, हम शपथ लैत छी कि ओकर पालन करब।"

376 राम सपथ सुनि मुनि जनकु सकुचे सभा समेत। 2.296.D1
377 सकल बिलोकत भरत मुखु बनइ न ऊतरु देत॥ 2.296.D2
हुनकर ई शपथक बात सुनि सभा सहित मुनि वसिष्ठ आ जनक सकुचाय गेलाह। किनको किछु कहैत नहि बनल, सब भरतक मुँह दिस देखय लागलाह।

378 सभा सकुच बस भरत निहारी। राम बंधु धरि धीरजु भारी॥ 2.297.C1
379 करि प्रनामु सब कहँ कर जोरे। रामु राउ गुर साधु निहोरे॥ 2.297.C5
सभाजनके संकोचमे देखि भरत धैर्य धारण कए फेर राम, जनक, गुरु आ संत सभ सँ विनती कयलनि।

380 प्रभु पितु बचन मोह बस पेली। आयउँ इहाँ समाजु सकेली॥ 2.298.C5
381 सोक सनेहँ कि बाल सुभाएँ। आयउँ लाइ रजायसु बाएँ॥ 2.300.C1
"हम मोहवश अपनेक आ पिताजीके वचनक उल्लंघन कए, सऽर-समाजके एकत्रित कएके एतय अयलहुँ। हम शोक या बाल स्वभाव वश एतय अयलहुँ।"

382 तबहुँ कृपाल हेरि निज ओरा। सबहि भाँति भल मानेउ मोरा॥ 2.300.C2
383 कृपासिंधु सनमानि सुबानी। बैठाए समीप गहि पानी॥ 2.301.C7
"हे कृपालु! अपने हमर सभ तरह सँ नीके केलियैक।" एकर बाद कृपाके सागर राम भरतके सादर हाथ पकड़ि सुंदर वचन कहि अपना लऽग बैसा लेलाह।

384 करम बचन मानस बिमल तुम्ह समान तुम्ह तात। 2.304.D1
385 गुर समाज लघु बंधु गुन कुसमयँ किमि कहि जात ॥ 2.304.D2
प्रभु कहलनि, "हे तात! अहाँ वचन, कर्म आ मन सँ निर्मल छी। अहाँ तऽ बस अहीं छी। गुरुजनक समाजमे सबहक समक्ष आ अहि खराब समयमे अपन अनुजक गुणक वर्णन हम कोना करी?"

386 तुम्हहि बिदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू॥ 2.305.C3
387 सो तुम्ह करहु करावहु मोहू। तात तरनिकुल पालक होहू ॥ 2.306.C3
"हे भरत अहाँ सबहक कर्तव्य जानय आ बुझयबला छी, हमर अहाँके कल्याण कोना होयत सेहो जनैत छी। तैं आब अहूँ आज्ञाक पालन करू आ हमरो सँ कराबु कि अपने सब सूर्यकुलक पालक बनि सकी।"

388 सो बिचारि सहि संकटु भारी। करहु प्रजा परिवारु सुखारी ॥ 2.306.C5
389 जानि तुम्हहि मृदु कहउँ कठोरा। कुसमयँ तात न अनुचित मोरा ॥ 2.306.C7
"ई सभ सोचि-विचारि, भारी कष्ट सहियोके प्रजा आओर परिवारके सुखी करू। हे तात! अहाँ कोमल हृदयक छी, ई बुझिओ हम कठोर वियोगक बात कए रहल छी। खराब समयमे एहन भेनाए स्वाभाविक छै, हम किछु अनुचित नहि कऽ रहल छी।"

390 होहिं कुठायँ सुबंधु सहाए। ओड़िअहिं हाथ असनिहु के घाए॥ 2.306.C8
391 पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई। लोक बेद भल भूप भलाई॥ 2.315.C4
"खराब समयमे नीक भाइए टा सहायक होएत छैक। बज्रक आघात अपनहि हाथ सँ रोकल जा सकल छैक। हम दुनू भाय अपन पिताक आज्ञाके पालन करी, किएक तऽ राजाक भलाई कएला सँ लोक आओर वेद सबहक नीक होइत छैक।"

392 अस बिचारि सब सोच बिहाई। पालहु अवध अवधि भरि जाई॥ 2.315.C6
393 बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। बिनु अधार मन तोषु न साँती॥ 2.316.C2
"एना विचारिके सब बात छोड़ि दिय आ हमर वनवासक अवधि धरि अयोध्याक पालन करू।" राम भरतके बहुत प्रकार सँ बुझौलनि। लेकिन भरतके मोनमे न तऽ संतोष भेल, न शांति भेटल।

394 प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं ॥ 2.316.C4
395 भरत मुदित अवलंब लहे तें। अस सुख जस सिय रामु रहे तें॥ 2.316.C8
प्रभु कृपा कएके भरत कऽ अपन खड़ाऊँ देलनि, भरत ओकरा सादर अपन माथ सँ लगाय स्वीकार केलनि। खड़ाऊँ पाबि ओ एना प्रसन्न भेलाह जेना साक्षात सीतारामे हुनका भेट गेल होइथ।

396 लखनहि भेंटि प्रनामु करि सिर धरि सिय पद धूरि। 2.318.D1
397 चले सप्रेम असीस सुनि सकल सुमंगल मूरि॥ 2.318.D2
लक्ष्मण सँ भेंट कए आ हुनका प्रणाम कऽ, ओ सीताक चरण-धूलि माथ सँ लगाय, समस्त मंगलके मूल आशीर्वाद पाबि प्रेम सँ चललाह।

398 हृदयँ रामु सिय लखन समेता। चले जाहिं सब लोग अचेता॥ 2.320.C7
399 प्रभु गुन ग्राम गनत मन माहीं। सब चुपचाप चले मग जाहीं॥ 2.322.C2
सब लोकनि अपन-अपन हृदयमे सीता, राम आ लक्ष्मणके बसाय बेसुध अवस्थामे अयोध्या जा रहल छथि। मोने-मन प्रभुक गुणगान करैत चुपचाप मार्ग पर चलि रहल छथि।

400 सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे। निज निज काज पाइ सिख ओधे॥ 2.323.C1
401 नंदिगावँ करि परन कुटीरा। कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ॥ 2.324.C2
अयोध्या पहुँचिके भरत मंत्रीगण आ सेवक सभ कए बुझौलनि। ओ सब सीख पाबि अपन-अपन काजमे लागि गेलाह। धर्मक धुरीके धारण करै बला धैर्यवान भरत नन्दिग्राममे पर्णकुटी बनायके निवास करय लगलाह।

402 नित पूजत प्रभु पाँवरी प्रीति न हृदयँ समाति। 2.325.D1
403 मागि मागि आयसु करत राज काज बहु भाँति ॥ 2.325.D2
ओ नित्य प्रभुक पादुका कऽ पूजा करैत छलाह, हुनक हृदयमे प्रेम समायत नहि छल। पादुका सँ आज्ञा माँगि-माँगिके ओ राज-काज करैत छलाह।

404 भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं। 2.326.S1
405 सीय राम पद पेमु अवसि होइ भव रस बिरति॥ 2.326.S2

तुलसीदास कहैत छथि कि जे लोक सभ भरतक चरित्र कऽ नियमपूर्वक सादर सुनता, हुनका निश्चित रूप सँ सीतारामक प्रति प्रेम होयत आओर ओ सांसारिक विषय सँ मुक्त भऽ जेताह।

अरण्यकाण्ड

406 रघुपति चित्रकूट बसि नाना। चरित किए श्रुति सुधा समाना॥ 3.3.C1
चित्रकूटमे निवास करबा कालके रघुनाथजीक अनेक कथा छैक, जे सुनबामे अमृत सदृश प्रियगर छै।

407 बहुरि राम अस मन अनुमाना। होइहि भीर सबहिं मोहि जाना॥ 3.3.C2
408 सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई। सीता सहित चले द्वौ भाई॥ 3.3.C3
किछुए दिनमे रामके ई बुझा गेलैन कि ओतय हुनका बहुत लोक चिन्हय लगलैन, हुनका कारणे भीड़ होय ई ओ नहि चाहैत छलाह, तैं ऋषि-मुनि सभ सँ विदा लऽ दुनू भाय सीता सहित ओतय सँ चलि गेलाह।

409 अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ। सुनत महामुनि हरषित भयऊ॥ 3.3.C4
410 अनुसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुसील बिनीता॥ 3.5.C1
जखन प्रभु अत्रि ऋषिके आश्रममे पहुँचला, तऽ ई समाचार सुनिते महामुनि बड्ड प्रसन्न भेलाह। सुशील आ विनम्र सीता ऋषिक पत्नी अनुसूयाके चरण छूबि हुनका सँ भेंट केलैन।

411 दिब्य बसन भूषन पहिराए। जे नित नूतन अमल सुहाए॥ 3.5.C3
412 कह रिषिबधू सरस मृदु बानी। नारिधर्म कछु ब्याज बखानी॥ 3.5.C4
अनुसूया सीताके एहन दिव्य वस्त्र औ' आभूषण पहिरइ लेल देलनि, जे सदा नवीन, स्वच्छ आ सुन्दरे रहितइ। अनुसूया अपन कोमल वाणीमे सीताजीके स्त्री धर्मक बात सेहो बुझेलनि।

413 सुनु सीता तव नाम सुमिरि नारि पतिब्रत करहिं। 3.5b.S1
414 तोहि प्रानप्रिय राम कहिउँ कथा संसार हित॥ 3.5b.S2
ओ कहलनि "हे सीता! सुनू, भविष्यमे अहाँके नाम लऽ स्त्री सभ पतिव्रत धर्मक निर्वाह करतीह। अहाँके राम प्राण सदृश प्रिय छथि, हम ई पतिव्रत धर्मक कथा संसार कऽ भलाई मात्रक लेल कहलौं।"

415 मुनि पद कमल नाइ करि सीसा। चले बनहि सुर नर मुनि ईसा॥ 3.7.C1
तकर बाद मुनि अत्रिके गोर लागि, देवता मनुष्य आ ऋषिक स्वामी वनमे आगू चललाह।

416 मिला असुर बिराध मग जाता। आवतहीं रघुबीर निपाता॥ 3.7.C6
417 पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिबर बृंद बिपुल सँग लागे॥ 3.9.C5
मार्गमे हुनका विराध नामक दैत्य भेटल, सोझाँ अबिते राम ओकरा मारि वनमे आगू बढलाह। बहुत श्रेष्ठ मुनि सेहो हुनका संग चललाह।

418 अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया॥ 3.9.C6
419 निसिचर निकर सकल मुनि खाए। सुनि रघुबीर नयन जल छाए॥ 3.9.C8
आगू गेलाक बाद राम जखन एक ठाम अस्थिके ढेरी देखलनि, तऽ दयावश मुनि सभ सँ ओकर कारण पुछलैन। ई जानिके कि राक्षस द्वारा मुनि सबके मारि कऽ खेबाक कारणे ई ढेरी बनल, हुनक नेत्रमे करुणा सँ नोर भरि गेलनि।

420 निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह। 3.9.D1
421 सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाइ जाइ सुख दीन्ह॥ 3.9.D2
अपन हाथ उठा प्रभु प्रतिज्ञा केलथि कि हम पृथ्वी पर सँ सभ राक्षसक नाश कए देब। फेर ओ सभ ऋषि-मुनिके आश्रममे जा-जाके हुनका सभके सुख देलनि।

422 मुनि अगस्ति कर सिष्य सुजाना। नाम सुतीछन रति भगवाना॥ 3.10.C1
423 मन क्रम बचन राम पद सेवक। सपनेहुँ आन भरोस न देवक॥ 3.10.C2
महर्षि अगस्त्यके एकटा सुतीक्ष्ण नामक ज्ञानी शिष्य छलाह, जिनका भगवान सँ बड्ड प्रेम छलनि। मोन, कर्म आ वाणी सँ ओ रामक चरण सेवक छलाह। हुनका सपनहुँमे कोनो आन देव पर भरोस नै छलैन।

424 कह मुनि प्रभु सुनु बिनती मोरी। अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी॥ 3.11.C1
425 जो कोसलपति राजिव नयना। करउ सो राम हृदय मम अयना॥ 3.11.C20
सुतीक्ष्ण राम सँ कहलनि, "हे प्रभु! हमर विनती सुनू। हम कोना अहाँके स्तुति करी? हे कोसलपति! हे कमलनयन! अपने हमरा हृदयमे विराजु।"

426 अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम। 3.11.D1
427 मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा निहकाम॥ 3.11.D2
"हे प्रभु! अहाँ अपन अनुज लक्ष्मण आ माता सीताक संग हमरा हृदयमे धनुष-बाण धारण कए ओना निवास करु, जेना आकाशमे चन्द्रमा स्थिर भऽके हरदम रहैत अछि।"

428 एवमस्तु करि रमानिवासा। हरषि चले कुंभज रिषि पासा॥ 3.12.C1
"अहिना होयत" कहिके लक्ष्मीपति राम प्रसन्न भऽ अगस्त्य ऋषिक लऽग चलि गेलाह।

429 अब सो मंत्र देहु प्रभु मोही। जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही॥ 3.13.C3
430 मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी। पूछेहु नाथ मोहि का जानी॥ 3.13.C4
ओतय पहुँचिके राम कहलनि, "हे प्रभु! कृपा कए हमरा कहू कि हम कोना ऋषि-मुनि सबहक द्रोही राक्षसक नाश करी?" प्रभुक वाणी सुनि मुनि मुसुकायके कहलनि, "हे नाथ! अहाँ की सोचिके हमरा सँ ई प्रश्न केलहुँ?"

431 ते तुम्ह सकल लोकपति साईं। पूँछेहु मोहि मनुज की नाईं॥ 3.13.C9
432 संतत दासन्ह देहु बड़ाई। तातें मोहि पूँछेहु रघुराई॥ 3.13.C14
"अहाँ तऽ सबहक स्वामी छी, मुदा हमरा सँ एकटा साधारण मनुष्यक जेंका पूछि रहल छी। अहाँ हरदम अपन सेवक सबके विशेष महत्त्व दैत छी तैं, हे राम! अहाँ हमरा सँ ऐना पूछैत छी।"

433 है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ। पावन पंचबटी तेहि नाऊँ॥ 3.13.C15
434 दंडक बन पुनीत प्रभु करहू। उग्र साप मुनिबर कर हरहू॥ 3.13.C16
"हे प्रभु! दण्डकवनमे एकटा मनोहर आ पवित्र जगह अछि जकर नाम पंचवटी छै। ई वन श्रेष्ठ मुनि गौतम ऋषिक भयंकर शाप सँ ग्रसित अछि। अहाँ ओहि शापके हरिके एहि वन कऽ पवित्र करियौ।"

435 बास करहु तहँ रघुकुल राया। कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया॥ 3.13.C17
436 चले राम मुनि आयसु पाई। तुरतहिं पंचबटी निअराई॥ 3.13.C18

"हे रघुकुलक स्वामी! अहाँ ओतय निवास करू आ सब ऋषि-मुनि पर दया करू।" मुनिके आज्ञा पाबि राम ओतय सँ चललाह आ जल्दिये पंचवटी लऽग पहुँचलाह।

437 गीधराज सैं भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ। 3.13.D1
438 गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ॥ 3.13.D2

ओहि ठाम हुनक भेंट गिद्धराज जटायु सँ भेल। जटायु सँ प्रेमपूर्वक भेंट कए ओ गोदावरी नदीक लऽग पर्णकुटी बनाय कए रहय लगलाह।

439 सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी॥ 3.17.C3
440 पंचबटी सो गइ एक बारा। देखि बिकल भइ जुगल कुमारा॥ 3.17.C4

शूर्पणखा नामक रावणक एकटा बहिन छल, जे नागिन सनके भयंकर आ दुष्ट हृदयवाली छल। एक बेर ओ पंचवटी आयल आ दुनू भायके देखि कामवासना सँ विचलित भए गेल।

441 रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई। बोली बचन बहुत मुसुकाई॥ 3.17.C7
442 तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी। यह सँजोग बिधि रचा बिचारी॥ 3.17.C8

ओ माया सँ आकर्षक रूप धरि रामके लऽग गेल आ मुसुकाय-मुसकायके कहय लागल, "एहि संसारमे अहाँ सनके कोनो सुंदर पुरुष नहि अछि आ हमरा समान कोनो सुंदर स्त्री सेहो नहि अछि। लगैत छै, जे विधाता हमरा अहाँके मिलेबाक सुन्दर संजोग बहुत सोचि-बुझिके बनौलनि।"

443 सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहइ कुआर मोर लघु भ्राता॥ 3.17.C11

राम सीताक दिस देखिके कहलनि, "हम तऽ बियाहल छी, लेकिन हमर छोट भाय कुमार (वनमे असगर) अछि।"

444 गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी। प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी॥ 3.17.C12
445 सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा॥ 3.17.C13

तखन ओ लक्ष्मणक लऽग गेल। ओकरा शत्रु रावणक बहिन जानि लक्ष्मण प्रभुक दिस देखि कोमल वचनमे कहलाह, "हे सुंदरी! हम तऽ हुनक दास, हुनक अधीन छी, हमरा सँ बियाह कएके अहाँके सुख नैं भेटत।"

446 पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई॥ 3.17.C17
447 लछिमन कहा तोहि सो बरई। जो तृन तोरि लाज परिहरई॥ 3.17.C18
ओ लौटिके राम लऽग गेल, फेर प्रभु ओकरा लक्ष्मण लऽग पठा देलैन। लक्ष्मण कहलनि, "तोरा सँ तऽ वैह बियाह करतौ, जे कियो लाज-शर्मके तिनका जेना त्यागि देने होय।"

448 तब खिसिआनि राम पहिं गई। रूप भयंकर प्रगटत भई॥ 3.17.C19
449 सीतहि सभय देखि रघुराई। कहा अनुज सन सयन बुझाई॥ 3.17.C20
ई सुनि, ओ खिसियाके रामक लऽग गेल आओर अपन असली भयंकर रूप प्रकट केलक। सीताके डराइत देखि राम अपन छोट भाय लक्ष्मणके इशारा कएलनि।

450 लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान बिनु कीन्हि। 3.17.D1
451 ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि॥ 3.17.D2
लक्ष्मण बड्ड फुर्ती सँ ओकर नाक-कान काटि देलैन। एना बुझायल जे एहि कऽ माध्यम सँ ओ रावणके चुनौती दैत छलाह।

452 नाक कान बिनु भइ बिकरारा। जनु स्रव सैल गेरु कै धारा॥ 3.18.C1
453 खर दूषन पहिं गइ बिलपाता। धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता॥ 3.18.C2
बिना नाक-कानक शूर्पणखा और विकराल लागय लागल। ओकरा शरीर सँ खून ऐना बहय लागल, जेना कोनो कारी पर्वत सँ गेरूक धारा बहि रहल होय। कनैत-कनैत ओ खर-दूषणक लऽग जा कए कहलक, "भाय! तोरा सबहक वीरता आ बलके धिक्कार छौ!"

454 तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई। जातुधान सुनि सेन बनाई॥ 3.18.C3
455 धूरि पूरि नभ मंडल रहा। राम बोलाइ अनुज सन कहा॥ 3.18.C10
ओकरा सबहक द्वारा पुछला पर शूर्पणखा सभ बात नून-मिरचाई लगा कए कहलक। सभ बात सुनिके खर-दूषण सेनाक संग जंगल दिस चलल। जाहि कारणे पूरा आकाश गरदा सँ भरि गेल। ई देखि राम लक्ष्मणके बजाक कहलैन,

456 लै जानकिहि जाहु गिरि कंदर। आवा निसिचर कटकु भयंकर ॥ 3.18.C11
457 देखि राम रिपुदल चलि आवा। बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा॥ 3.18.C13
"रावणक भयंकर सेना आबि रहल अछि, अहाँ सीताके लऽ कए पर्वतक कंदरामे जाउ।" जखन शत्रुके सेना लऽग आयल तऽ राम हँसिके अपन धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाए राक्षस सभ सँ युद्ध करय लगलाह।

458 राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान। 3.20a.D1
459 करि उपाय रिपु मारे छन महुँ कृपानिधान ॥ 3.20a.D2
राक्षस सभ राम-राम कहि शरीर छोड़ि मोक्ष पाबए लागल। एहि तरहे कृपानिधान राम क्षण भरिमे शत्रु सभके मारि देलनि

460 धुआँ देखि खरदूषन केरा। जाइ सुपनखाँ रावन प्रेरा ॥ 3.21.C5
461 बोली बचन क्रोध करि भारी। देस कोस कै सुरति बिसारी ॥ 3.21.C6
खर-दूषनक अंत भए गेल, ई देखि शूर्पणखा लंका जाएके रावण कऽ उकसाबय लागल। ओ क्रोध सँ भरि कऽ अपना भाय के कहलक कि लगैत अछि तूँ अपन देश आओर कोषके बिसरि गेलें।

462 कह लंकेस कहसि निज बाता। केइँ तव नासा कान निपाता ॥ 3.22.C2
463 अवध नृपति दसरथ के जाए। पुरुष सिंघ बन खेलन आए ॥ 3.22.C3
ओकर बात सुनि लंकापति रावण पुछलक, "अपन कह, के तोहर नाक-कान काटि देलकऔ?" ओ कहलक, "अयोध्याके राजा दशरथक पुत्र, जे पुरुषमे सिंहक समान अछि, दंडकवनमे शिकार खेलय आएल अछि।"

464 सोभा धाम राम अस नामा। तिन्ह के संग नारि एक स्यामा ॥ 3.22.C8
465 तासु अनुज काटे श्रुति नासा। सुनि तव भगिनि करहिं परिहासा॥ 3.22.C10
"जे शोभाक धाम अछि, हुनक नाम राम अछि। हुनका संगमे एकटा सुंदर तरुणी स्त्री सेहो अछि। हुनक छोट भाई लक्ष्मण हमर नाक-कान काटि देलक। हम तोहर बहिन छी, यैह सुनिके ओ हमर परिहास करय लागल।"

466 सूपनखहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु भाँति। 3.22.D1
467 गयउ भवन अति सोचबस नीद परइ नहिं राति॥ 3.22.D2
रावण शूर्पणखाके समझा-बुझाके आ अपन बलक बखान कए अपना महलमे चलि गेल। मुदा चिंताके कारणे ओकरा भरि राति नींद नै आयल।

468 सुर रंजन भंजन महि भारा। जौं भगवंत लीन्ह अवतारा॥ 3.23.C3
469 तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ। प्रभु सर प्रान तजें भव तरऊँ॥ 3.23.C4
ओ सोचय लागल जे देवता सभके आनंद देबयबला आ पृथ्वीक भार दूर करयबला भगवान जौं अवतरित भेल छथि, तऽ हम हुनका सँ अवश्य शत्रुता करब आ हुनके बाण सँ प्राण छोड़ि भवसागर सँ पार भए जायब।

470 इहाँ राम जसि जुगुति बनाई। सुनहु उमा सो कथा सुहाई॥ 3.23.C8
शिव जी कहैत छथिन्ह, "हे पार्वती! श्री रामचन्द्र एकटा योजना बनौलनि, आब ओहि सुन्दर कथाके सुनू।"

471 सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला। मैं कछु करबि ललित नरलीला॥ 3.24.C1
472 तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा। जौ लगि करौं निसाचर नासा॥ 3.24.C2
एक दिन राम सीता सँ कहलनि, "हे प्रिये! अहाँ सब तरह सँ सुशील छी, सब नियमक पालन करैत छी। आब हम किछु सुन्दर नर लीला करब। जखन तक हम राक्षस सबहक नाश करैत छी, तखन तक अहाँ अग्निमे निवास करू। ई बुझि लिय कि अहाँके आगूक जीवन अग्निमे निवास करय पड़त, जखन तक हम राक्षसक नाश नै कऽ ली।"

473 जबहिं राम सब कहा बखानी। प्रभु पद धरि हियँ अनल समानी॥ 3.24.C3
474 निज प्रतिबिंब राखि तहँ सीता। तैसइ सील रूप सुबिनीता॥ 3.24.C4
एहि प्रकारे जखन राम सम्पूर्ण योजना सीताके बुझा देलनि, तऽ सीता प्रभुके चरणके हृदयमे राखि अग्निमे प्रवेश कऽ गेलीह। ओ अपन छाया ओतय छोड़ि देलनि। जे शील, रूप आ विनयमे हुनके समान छल।

475 दसमुख गयउ जहाँ मारीचा। नाइ माथ स्वारथ रत नीचा॥ 3.24.C6
476 होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी। जेहि बिधि हरि आनौं नृपनारी॥ 3.25.C2
एम्हर पूरा योजना बना कए स्वार्थ सँ लिप्त नीच रावण अपन मामा मारीचक लऽग गेल आओर सिर नवायके कहलक, "अहाँ छल करयबला हरिन बनू जाहि सँ हम राजवधू सीताक हरण कए सकी।"

477 तेहि बन निकट दसानन गयऊ। तब मारीच कपटमृग भयऊ॥ 3.27.C1
478 सीता परम रुचिर मृग देखा। अंग अंग सुमनोहर बेषा॥ 3.27.C3
आब रावण ओहि वनक निकट गेल जतय रामक कुटिया छल। मारीच कपट सँ सोनाक हिरन बनि गेल। सीता ओए अत्यंत सुंदर हिरनके देखलनि, जकर अंग-अंग मोनके प्रसन्न करयबला छल।

479 सत्यसंध प्रभु बधि करि एही। आनहु चर्म कहति बैदेही॥ 3.27.C5
480 प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी। धाए रामु सरासन साजी॥ 3.27.C10
ओ राम सँ कहलनि, "हे सत्य प्रतिज्ञ प्रभु! अहाँ एहि हरिनके मारि ओकर चाम हमरा आनि कए दिया।" राम जखन हिरनके पकड़ै लेल गेलाह, तऽ ओ भागि गेल। मृग आगू-आगू आ राम धनुष पर बाण चढ़ाएके पाछू-पाछू दौड़ऽ लगलाह।

481 प्रगटत दुरत करत छल भूरी। एहि बिधि प्रभुहि गयउ लै दूरी॥ 3.27.C13
482 तब तकि राम कठिन सर मारा। धरनि परेउ करि घोर पुकारा॥ 3.27.C14
एहि तरहे प्रकट होइत, नुकाइत आ छल करैत-करैत मृग प्रभुके बहुत दूर लऽ गेल। तखन राम निशाना साधि ओकरा कठोर बाण सँ मारलाह। बाण लगिते ओ जोर सँ रामक आवाज़मे हे लक्ष्मण! हे लक्ष्मण! कहैत-कहैत पृथ्वी खसि पड़ल।

483 बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु गुन गाथ। 3.27.D1
484 निज पद दीन्ह असुर कहुँ दीनबंधु रघुनाथ॥ 3.27.D2
ओकरा मरितै देवतागण प्रभुके गुणक गाथा गबैत-गबैत फूल बरसाबय लगलाह। दीनक बंधु श्रीराम मारीच सन राक्षसके परमधाम प्रदान केलैंह।

485 आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लछिमन सन परम सभीता॥ 3.28.C2
486 जाहु बेगि संकट अति भ्राता। लछिमन बिहसि कहा सुनु माता॥ 3.28.C3
ओम्हर सीता जखन रामक दु:ख भरल आवाज सुनलैन्ह, तऽ ओ भयभीत भएके लक्ष्मण सँ कहलनि, "अहाँ शीघ्र अपन भाय लग जाउ। अपनेक भाय घोर संकटमे छथि।" लक्ष्मण हँसि कए कहलनि "हे माता! सुनू।"

487 भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई। सपनेहुँ संकट परइ कि सोई॥ 3.28.C4
488 मरम बचन जब सीता बोला। हरि प्रेरित लछिमन मन डोला॥ 3.28.C5
"जिनक भौंहके इशारा मात्र सँ सम्पूर्ण सृष्टिक नाश होइत छैक, हुनका पर की सपनहुँमे कोनो संकट आबि सकैत छै?" मुदा सीता नै मानली, ओ हुनका हृदयमे चुभयबला किछु मार्मिक बात कहलनि, जाहि सँ लक्ष्मणक मोन विचलित भऽ गेलैन।

489 बन दिसि देव सौंपि सब काहू। चले जहाँ रावन ससि राहू॥ 3.28.C6
490 सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती कें बेषा॥ 3.28.C7
सीताके वन आ दिशाक देवता सभके सौंपि लक्ष्मण ओतय गेलाह, जतय रावण जेहन चन्द्रमाके निगलय बला राहुक समान राम छलाह। एहि बीच आश्रममे एसगर सीताके देखि रावण सन्यासीक भेसमे आयल।

491 नाना बिधि करि कथा सुहाई। राजनीति भय प्रीति देखाई॥ 3.28.C11
492 कह सीता सुनु जती गोसाईं। बोलेहु बचन दुष्ट की नाईं॥ 3.28.C12
ओ नाना प्रकारक कथा कहिके सीताके अपन राजनीति, डर आ प्रेम देखौलक। सीता कहलनि, "हे यति गोसाई! सुन, तू दुष्ट जेकाँ बाजि रहल छें।"

493 क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ। 3.28.D1
494 चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ॥ 3.28.D2
हुनक बात सुनि क्रोधित भए रावण सीताके ज़बरदस्ती अपन रथमे बैसा लेलक आओर आकाशक मार्ग सँ आगू बढ़ल, मुदा भयवश ओकरा सँ रथ हाँकल नहि जाइत छल।

495 बिबिध बिलाप करति बैदेही। भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही॥ 3.29.C4
सीता विलाप करैत कहय लगलीह कि हमरा पर प्रभुके कृपा तऽ बहुत अछि, मुदा आब ओ स्नेही दूर भए गेलाह।

496 गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुलतिलक नारि पहिचानी॥ 3.29.C7
497 धावा क्रोधवंत खग कैसें। छूटइ पबि परबत कहुँ जैसें॥ 3.29.C10
गिद्धराज जटायु हुनकर दु:ख सौं भरल आवाज सुनिके चीन्ह गेलाह। ई बुझितै कि ओ रघुकुलक तिलक रामक पत्नी छथि, क्रोधित भए पक्षीराज ओतबे तेजी सँ दौड़ला जेना पर्वतक दिस बज्र छूटैत होय।

498 तब सक्रोध निसिचर खिसिआना। काढ़ेसि परम कराल कृपाना॥ 3.29.C21
499 काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अद्भुत करनी॥ 3.29.C22
जटायुक आक्रमण सँ रावण खिसियाए गेल आ तमसाय कऽ अपन अत्यंत भयानक तलवार चन्द्रहास सँ जटायुके पंख काटि देलक। पंख कटितै प्रभु रामक अद्भुत लीलाक स्मरण करैत जटायु पृथ्वी पर खसि पड़ल।

500 सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी। चला उताइल त्रास न थोरी॥ 3.29.C23
आब सीता कऽ फेर सँ रथ पर चढ़ाए रावण ओतय सँ बड्ड तेजी भागल, किएक तऽ ओ बहुत डराय गेल छल।

501 गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी। कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी॥ 3.29.C25
502 एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ। बन असोक महँ राखत भयऊ॥ 3.29.C26
मार्गमे एकटा पर्वत पर वानर सभके बैसल देखिके सीता प्रभुक नाम लऽके एकटा पोटरी नीचा फेंक देलैन। अइ तरहे रावण सीताजीके चोरा कऽ लऽ जा कऽ अशोक वाटिकामे राखलक।

503 जेहि बिधि कपट कुरंग सँग धाइ चले श्रीराम। 3.29b.D1
504 सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम॥ 3.29b.D2
जाहि रूपमे प्रभु राम कपटी-मृगक संग दौड़ल छलाह, ताहि रूपके हृदयमे राखि सीता ओतय राम नाम रटै लगलीह।

505 आश्रम देखि जानकी हीना। भए बिकल जस प्राकृत दीना॥ 3.30.C6
506 लछिमन समुझाए बहु भाँती। पूछत चले लता तरु पाँती॥ 3.30.C8
ओम्हर जखन दुनू भाय आश्रम लौटलाह, तऽ सीताके ओतय नै देखि राम एकटा साधारण मनुष्यक तरह बड्ड व्याकुल भऽ गेलाह। लक्ष्मण हुनका बहुत तरह सँ बुझेबाक प्रयास केलनि, मुदा लता और वृक्ष तक सँ सीताके बारेमे पुछैत-पुछैत राम आगू बढय लगलाह।

507 आगें परा गीधपति देखा। सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा॥ 3.30.C18
508 तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा॥ 3.31.C1
चलैत-चलैत ओ एक ठाम गिद्धपति जटायु कऽ पड़ल देखलैन, जटायु ओतय रामक ओहि चरणक स्मरण करैत छल, जाहिमे हुनक ईश्वरीय चिह्न अछि। जटायु धैर्य सहित हुनका कहलक, "हे जन्म-मृत्युके भयके नाश करयबला प्रभु राम, सुनू।"

509 नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहिं खल जनकसुता हरि लीन्ही॥ 3.31.C2
510 दरस लागि प्रभु राखेउँ प्राना। चलन चहत अब कृपानिधाना॥ 3.31.C4
"हमर ई दशा दुष्ट रावण केलक, ओ सीताजीके चोराके लए गेल अछि। हे कृपानिधान! हम अहाँके दर्शन मात्रक लेल एखन तक प्राण रोकने छलहुँ, आब हमर प्राण जाय चहैत अछि।"

511 जल भरि नयन कहहिं रघुराई। तात कर्म निज तें गति पाई॥ 3.31.C8
512 परहित बस जिन्ह के मन माहीं। तिन्ह कहुँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥ 3.31.C9
सजल नेत्र सँ रघुनाथ कहय लगलाह, "हे तात! अहाँ अपन शुभ कर्मक बल सँ सद्गति पाबि गेलहुँ। जिनका मोनमे दोसरक हितक भावना रहैत छै, संसारमे ओकरा लेल किछु दुर्लभ नहि छै।"

513 तनु तजि तात जाहु मम धामा। देउँ काह तुम्ह पूरनकामा॥ 3.31.C10
514 ताहि देइ गति राम उदारा। सबरी कें आश्रम पगु धारा॥ 3.34.C5
"अहाँ अपन देह त्यागि हमारा धाम जाउ, हम अहाँके की दी, अहाँ तऽ स्वयं पूर्णकाम छी।" हुनका उत्तम गति प्रदान कए राम शबरीक आश्रम गेलाह।

515 कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि। 3.34.D1
516 प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥ 3.34.D2
शबरी रामके रस भरल स्वादिष्ट कंद, मूल आ फल आनिके खेबाक लेल देलक। प्रभु बारम्बार प्रशंसा करैत बड्ड प्रेम सँ कंद-मूल खेलैन।

517 केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी। अधम जाति मैं जड़मति भारी॥ 3.35.C2
शबरी कहय लागल, "हम कोना कऽ अहाँके स्तुति करी? हम नीच जातिके आ बहुत जड़बुद्धि वाली छी।"

518 कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता॥ 3.35.C4
519 नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं॥ 3.35.C7
रघुनाथ कहलनि, "हे भामिनी! हमर बात ध्यान सँ सुनू। हम एकमात्र भक्तिके नाता मानैत छी। हम अहाँके आब नवधा भक्तिक ज्ञान दैत छी। ध्यान सँ सुनू आ अपना मोनमे बैसा लिय।"

520 नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई॥ 3.36.C6
521 सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें। सकल प्रकार भगति दृढ़ तोरें॥ 3.36.C7
"एहि नौ भक्तिमे सँ एको टा जिनका पास होइत छैक, ओ जड़-चेतन, स्त्री-पुरुष, चाहे कियो होय, हे भामिनी! हमरा अतिशय प्रिय छथि। अहाँ तऽ सभ प्रकारक भक्ति सँ युक्त छी।"

522 जनकसुता कइ सुधि भामिनी। जानहि कहु करिबरगामिनी॥ 3.36.C10
523 पंपा सरहि जाहु रघुराई। तहँ होइहि सुग्रीव मिताई॥ 3.36.C11
फेर राम शबरी सँ कहलनि, "हे भामिनी! जौं अहाँ गजगामिनी सीताके बारेमे किछु जनैत छी तऽ कहू।" शबरी कहली, "हे रघुवीर! अहाँ पम्पा नामक सरोवर लऽग जाउ। ओतय अहाँके मित्रता वानरक राजा सुग्रीव सँ होयत, ओ अहाँके सब जानकारी देताह।"

524 जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि असि नारि। 3.36.D1
525 महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि॥ 3.36.D2

तुलसीदास कहैत छथिन्ह, “जे नारी नीच जातिके औ पापक जन्मभूमिमे रहैत छलीह, ऐहनो स्त्रीके जे प्रभु मुक्ति प्रदान केलैन, हे मूर्ख मोन! एहन प्रभुके बिसरि भला तू केहन सुख चाहैत छें!”

किष्किन्धाकाण्ड

526 आगें चले बहुरि रघुराया। रिष्यमूक पर्बत निअराया॥ 4.1.C1
रघुनाथ जी फेर आगू चललाह और ऋष्यमूक पर्वतक लऽग पहुँचलाह।

527 तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सींवा॥ 4.1.C2
528 अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष जुगल बल रूप निधाना॥ 4.1.C3
ओतय वानरक राजा सुग्रीव अपन मंत्रीगणक संग रहैत छल। अतुलित बलशाली राम औ' लक्ष्मणके अबैत देखि सुग्रीव डरा गेल। ओ हनुमान सँ कहलक, "हे हनुमान! ई दुनू पुरुष रूप आओर बलक भण्डार छथि।"

529 धरि बटु रूप देखु तैं जाई। कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई॥ 4.1.C4
"अहाँ ब्रह्मचारीक रूपमे जा कऽ देखू आ हुनक मनोभावना बुझि हमरा सूचित करू।"

530 बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ॥ 4.1.C6
531 को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु बन बीरा॥ 4.1.C7
हनुमान ब्राह्मणक रूपमे राम लऽग गेलाह और माथ झुका कऽ पूछै लगलाह, "हे वीर! श्याम आ गोर शरीरबला क्षत्रिय कऽ रूप धरि वनमे घूमयबला, अपने के छी?"

532 जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार। 4.1.D1
533 की तुम्ह अखिल भुवन पति लीन्ह मनुज अवतार॥ 4.1.D2
"की अहाँ जगतक उत्पन्न होय कऽ कारण, सबहक तारनहार, भवसागर कऽ कष्ट आ पृथ्वीक भार कम करबाक लेल मनुष्यक रूपमे अवतरित भेल छी आ सम्पूर्ण लोकक स्वामी स्वयं भगवान छी?"

534 कोसलेस दसरथ के जाए। हम पितु बचन मानि बन आए॥ 4.2.C1
राम कहलनि, "हम कोसल देशक राजा दशरथक पुत्र छी आ हुनक वचनक पालन करय एतय वनमे आयल छी।"

535 नाम राम लछिमन दोउ भाई। संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥ 4.2.C2
536 इहाँ हरी निसिचर बैदेही। बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥ 4.2.C3
“हम दुनू भाय छी, हमर सबहक नाम राम आ लक्ष्मण अछि। हमरा संग हमर सुंदर सुकुमारी पत्नी छलीह, जिनक नाम वैदेही अछि। राक्षस एतय हुनकर अपहरण कए लेलक। हे विप्र! हम हुनके तकैत-तकैत वनमे घूमि रहल छी।”

537 प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ॥ 4.2.C5
538 पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही। हरष हृदयँ निज नाथहि चीन्ही ॥ 4.2.C7
अपन प्रभुके चीन्ह हनुमान हुनक चरण पकड़ि लेलाह। शिव जी कहैत छथि, “हे पार्वती! ओहि सुखक वर्णन नै कएल जा सकैत अछि।” तत्पश्चात धैर्य राखि हनुमान हुनकर स्तुति केलैन। अपन नाथके पहचाइन कऽ ओ अत्यंत हर्षित भेलाह।

539 मोर न्याउ मैं पूछा साईं। तुम्ह पूछहु कस नर की नाईं ॥ 4.2.C8
540 नाथ सैल पर कपिपति रहई। सो सुग्रीव दास तव अहई ॥ 4.4.C2
हनुमान कहलाह, “हे स्वामी! हम अहाँके नै चीन्ह सकलहूँ, तैं हमर पूछब न्यायसंगत छल, किन्तु अहाँ एकटा साधारण मनुष्यक जेकाँ हमरा किये पूछि रहल छी? हे नाथ! एहि पर्वत पर वानरक स्वामी सुग्रीव रहैत छथि, जे अहाँके दास छथि।”

541 तेहि सन नाथ मयत्री कीजे। दीन जानि तेहि अभय करीजे ॥ 4.4.C3
542 जब सुग्रीवँ राम कहुँ देखा। अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ॥ 4.4.C6
“हे नाथ! अहाँ हुनका सँ मित्रता कए लिय आ दीन-दुखी जानि हुनका निर्भय कऽ दियौन।” जखन सुग्रीव रामके देखलनि तऽ ओ स्वयं कऽ धन्य मानय लगलाह।

543 तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाइ । 4.4.D1
544 पावक साखी देइ करि जोरी प्रीति दृढ़ाइ ॥ 4.4.D2
हनुमान दुनू गोटे कऽ सब कथा सुनायके अग्नि कऽ साक्षी राखि दृढ़ मैत्री करवा देलैन।

545 नाथ बालि अरु मैं द्वौ भाई। प्रीति रही कछु बरनि न जाई॥ 4.6.C1
546 रिपु सम मोहि मारेसि अति भारी। हरि लीन्हेसि सर्बसु अरु नारी॥ 4.6.C11
सुग्रीव कहलाह, "हे नाथ! हम आ बालि दू भाई छी। हमरा दुनूमे एहन प्रेम छल जकर वर्णन नैं कएल जा सकैत अछि। एकटा गलतफहमीक कारणे वैह भाई शत्रु जेंका हमरा बहुत मारलक। हमर सब किछु एतय तक कि पत्नी सेहो छीन लेलक।"

547 ताकें भय रघुबीर कृपाला। सकल भुवन मैं फिरेउँ बिहाला॥ 4.6.C12
548 लै सुग्रीव संग रघुनाथा। चले चाप सायक गहि हाथा॥ 4.7.C25
"हे कृपालु रघुवीर! हम ओकरा डर सँ भरि संसारमे बेहाल भए भागि रहल छी।" सुग्रीवक बात सुनि राम हाथमे धनुष-बाण लेलैन आ सुग्रीवके संग चललाह।

549 सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहि कर चरन नारि समुझावा॥ 4.7.C27
550 भिरे उभौ बाली अति तर्जा। मुठिका मारि महाधुनि गर्जा॥ 4.8.C2
रामक बल पाबि सुग्रीव जा कऽ बालिके ललकारलक। ई सुनिते बालि क्रोधित भएके सुग्रीव दिस दौड़ल। हालाँकि बालिक पत्नी तारा ओकरा युद्ध नै करबाक लेल बहुत बुझौलक, लेकिन ओ नै मानलक। बालि आ सुग्रीव दुनू आपसमे भिड़ गेल। बालि सुग्रीवके जोर सँ एक घुस्सा मारिके गर्जना केलक।

551 तब सुग्रीव बिकल होइ भागा। मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा॥ 4.8.C3
552 मैं जो कहा रघुबीर कृपाला। बंधु न होइ मोर यह काला॥ 4.8.C4
घुस्साक चोट सुग्रीवके बज्र जेना लागल, तैं ओ व्याकुल भयके भागल। रामक लऽग आबि सुग्रीव कहलक, "हे कृपालु रघुवीर! हम अहाँके पहिले कहने रही जे कि ई हमर भाय नै काल छी।"

553 एकरूप तुम्ह भ्राता दोऊ। तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ॥ 4.8.C5
554 मेली कंठ सुमन कै माला। पठवा पुनि बल देइ बिसाला॥ 4.8.C7
राम ओकरा सांत्वना दैत कहलनि, "अहाँ दुनू देखयमे एक्के रंग लगैत छी, अहि भ्रमक कारण हम बालिके नैं मारि सकलहुँ।" फेर सुग्रीवके गलामे फूलक माला दय, ओकर आत्मविश्वास बढ़ाएके, ओकरा फेरि सँ लड़बाक लेल पठौलैन।

555 बहु छल बल सुग्रीव कर हियँ हारा भय मानि । 4.8.D1
556 मारा बालि राम तब हृदय माझ सर तानि ॥ 4.8.D2

सुग्रीव बहुत छल-बलक प्रयोग कयलक, मुदा अंत मे ओ भयवश हारय लागल। तखन राम बालिके हृदयमे एकटा बाण मारि कय ओकरा धरती पर खसाय देलन्हि।

557 धर्म हेतु अवतरेहु गोसाईं। मारेहु मोहि ब्याध की नाईं ॥ 4.9.C5
558 मैं बैरी सुग्रीव पिआरा। अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥ 4.9.C6

बालि कहलक, "हे प्रभु! अपने धर्मक रक्षा करबाक लेल अवतार लेने छी। फेरि हमरा व्याधक जेना पाछाँ सँ किएक मारलौं? हम अहाँक शत्रु आ सुग्रीव प्रियगर? हे नाथ! हमर कोन अवगुणक कारण अहाँ हमरा मारलौं?"

559 अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥ 4.9.C7
560 इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई। ताहि बधें कछु पाप न होई ॥ 4.9.C8

राम कहलनि, "अरे मूर्ख! छोट भायक पत्नी, बहिन, पुत्रक पत्नी आ अपन पुत्री, ई चारु कन्या समान होइत छै। जौं हिनका कियो गलत नज़रि सँ देखैत छै तऽ ओकरा मारयमे कोनो पाप नै लगैत छै।"

561 सुनहु राम स्वामी सन चल न चातुरी मोरि। 4.9.D1
562 प्रभु अजहूँ मैं पापी अंतकाल गति तोरि ॥ 4.9.D2

बालि कहलक, "हे राम! स्वामी अहाँके समक्ष हमर कोनो चतुराई नै चलल। मरैत काल अपनेक शरणमे एला कऽ बाद, की आबो हम पापी कहायब?"

563 राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग। 4.10.D1
564 सुमन माल जिमि कंठ ते गिरत न जानइ नाग ॥ 4.10.D2

श्रीरामक चरणमे दृढ़ प्रीति राखि बालि ओहिना अपन शरीर छोड़ि देलक, जेना हाथी कऽ अपन गला सँ फूलक माला खसबाक आभास तक नै होइत छै।

565 लछिमन तुरत बोलाए पुरजन बिप्र समाज। 4.11.D1
566 राजु दीन्ह सुग्रीव कहँ अंगद कहँ जुबराज ॥ 4.11.D2

एकर बाद रामक आज्ञानुसार लक्ष्मण तुरत नगरके लोक आओर ब्राह्मण सभके बजायके सुग्रीव कऽ राज सौंपिके अंगदके युवराज बनाय देलनि।

567 जब सुग्रीव भवन फिरि आए। रामु प्रबरषन गिरि पर छाए॥ 4.12.C10
568 इहाँ पवनसुत हृदयँ बिचारा। राम काजु सुग्रीवँ बिसारा॥ 4.19.C1
राज्य पाबि सुग्रीव अपन महलमे चलि गेलाह। वर्षा ऋतु अयलाके कारण राम प्रवर्षण पर्वत पर रहय लेल गेलाह। किछु समय बितलाक बाद हनुमानके लगलैन कि सुग्रीव प्रभु रामक कार्य बिसरि गेलाह।

569 निकट जाइ चरनन्हि सिरु नावा। चारिहु बिधि तेहि कहि समुझावा॥ 4.19.C2
तैं हनुमान सुग्रीवक लऽग जाके प्रणाम केलैन आ हुनका चारु (साम, दाम, दण्ड, भेद) प्रकार सऽ बुझौलेन।

570 सुनि सुग्रीवँ परम भय माना। बिषयँ मोर हरि लीन्हेउ ग्याना॥ 4.19.C3
571 अब मारुतसुत दूत समूहा। पठवहु जहँ तहँ बानर जूहा॥ 4.19.C4
सभ बात सुनिके सुग्रीव बहुत डरायके कहलाह,"भोग विलास हमरा ज्ञानके हरि लेलक। हे हनुमान! जतय- जतय वानरक समूह रहैत छैथ, ओतय-ओतय दूतके पठा कऽ हुनका सभके बजाउ।"

572 राम काजु अरु मोर निहोरा। बानर जूथ जाहु चहुँ ओरा॥ 4.22.C6
573 जनकसुता कहुँ खोजहु जाई। मास दिवस महँ आएहु भाई॥ 4.22.C7
वानरक विशाल सेना एकत्रित भेला पर सुग्रीव कहलनि, "एकरा श्री रामचन्द्रक काज आ हमर अनुरोध बुझि चारू दिस जाऊ। हे भाई सब राजा जनक जीके पुत्री सीताके ताइक कए एक मासमे आबि जायब।"

574 सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवंत मतिधीर सुजाना॥ 4.23.C1
575 सकल सुभट मिलि दच्छिन जाहू। सीता सुधि पूँछेहु सब काहू॥ 4.23.C2
"हे धीरबुद्धि आ चतुर नील, अंगद, हनुमान, जामवंत! अहाँ सब योद्धा दक्षिण दिस जाउ आ सब सँ सीताके पता पूछू।"

576 पाछें पवन तनय सिरु नावा। जानि काज प्रभु निकट बोलावा ॥ 4.23.C9
577 परसा सीस सरोरुह पानी। करमुद्रिका दीन्हि जन जानी ॥ 4.23.C10
सबहक बाद हनुमान जी प्रभुके प्रणाम केलैन। ई जानिके कि हनुमानेक हाथ सँ हमर काज होयत, प्रभु हनुमानके अपना लऽग बजौलनि। ओ अपन करकमल सँ हनुमान कऽ माथ फेरिके हुनका अपन सेवक मानि अपन हाथक अँऊठी देलैन।

578 चले सकल बन खोजत सरिता सर गिरि खोह। 4.23.D1
579 राम काज लयलीन मन बिसरा तन कर छोह ॥ 4.23.D2
सब वानर वन, नदी, तालाब, पर्वत आ पर्वतक गुफामे सीताके ताकय लगलाह। ओ सब राम काजमे मगन मन भएके अपन शरीर तकके मोह बिसरि गेलाह।

580 इहाँ बिचारहिं कपि मन माहीं। बीती अवधि काज कछु नाहीं ॥ 4.26.C1
समय बीतला पर वानर विचार करय लगलाह कि देल समय तऽ निकलि गेल, लेकिन एखन तक कोनो काज नै भेल।

581 कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी ॥ 4.26.C3
582 इहाँ न सुधि सीता कै पाई। उहाँ गएँ मारिहि कपिराई ॥ 4.26.C4
अंगद नेत्रमे जल भरिके कहलनि, "दुनू तरहे आब हमर सबहक मृत्यु तय अछि। एतय सीताक किछु पता नै लागल, ओतय गेला पर वानरराज सुग्रीव मारि देताह।"

583 हम सीता कै सुधि लीन्हें बिना। नहिं जैहैं जुबराज प्रबीना ॥ 4.26.C9
584 जामवंत अंगद दुख देखी। कहीं कथा उपदेस बिसेषी ॥ 4.26.C11
अंगदके दुखी देख सब वानर हुनका सांत्वना देबय लगलाह, "हे प्रवीण युवराज! हम सब सीता जीके ताकने बिनु वापस नहि लौटब।" जामवंत सेहो अपन विशेष उपदेशक कथा सुनबैत कहलनि,

585 निज इच्छाँ प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि। 4.26.D1
586 सगुन उपासक संग तहँ रहहिं मोच्छ सब त्यागि ॥ 4.26.D2

"देवता, धरती, गौ आ ब्राह्मणक लेल प्रभु अपन इच्छा सँ अवतार लैत छथि। आ भगवानक सगुण रूपक उपासक भक्त हुनका संग रहबाक लेल सब तरहक मोक्षके त्यागि कए हुनकर सेवामे लागल रहैत छथि।"

587 एहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती। गिरि कंदराँ सुनी संपाती ॥ 4.27.C1
588 बाहेर होइ देखि बहु कीसा। मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ॥ 4.27.C2
एहि तरहे जखन वानर सबहक मध्य कथा-वार्ता होइत छल, तखन पर्वतक कंदरामे बैसल गिद्ध सम्पाती हुनकर बात सुनलक। बाहर आबि बहुत वानरके देखि ओ कहलक, "आजुक दिन जगदीश घर बैसले हमरा भोजन पठा देलैन।"

589 डरपे गीध बचन सुनि काना। अब भा मरन सत्य हम जाना ॥ 4.27.C5
गिद्धक बात सुनि सब डराय गेला आ सोचय लगलाह कि सच्चे आई हमर सबहक मृत्यु आबि गेल।

590 कह अंगद बिचारि मन माहीं। धन्य जटायू सम कोउ नाहीं ॥ 4.27.C7
591 राम काज कारन तनु त्यागी। हरि पुर गयउ परम बड़भागी ॥ 4.27.C8
तखन अंगद मोनमे विचार कएके कहलक कि जटायुक समान धन्य कियो नहि अछि, ओ प्रभु रामक कार्य करबाके लेल अपन शरीर त्यागि देलैन। ओ बड्ड भाग्यशाली छलाह, आब ओ प्रभुक धाम जा चुकल छथि।

592 तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई। कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ॥ 4.27.C10
593 गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका। तहँ रह रावन सहज असंका ॥ 4.28.C11
जटायुक नाम सुनि सम्पाती वानर सभके निर्भीक भए सभ बात पूछलक आ कहबाके लेल कहलक। तखन वानर जटायु बला पूरा कथा सम्पातीके सुनौलनि। सम्पाती कहलक, "समुद्रक ओहि पार त्रिकूट पर्वत पर लंका बसल अछि। ओतय स्वभावे सँ निडर राक्षस रावण रहैत छै।"

594 तहँ असोक उपबन जहँ रहई। सीता बैठि सोच रत अहई ॥ 4.28.C12
595 जो नाघइ सत जोजन सागर। करइ सो राम काज मति आगर ॥ 4.29.C1

“ओहि ठाम अशोक नामक एकटा वाटिका छै, जतय सीता सोचमे डूबल बैसल छथि। जे कियो सौ योजनक (आठ सौ मील) एहि समुद्रके लाँघत, वैह रामक काज कए सकत।”

596 जरठ भयउँ अब कहइ रिछेसा। नहिं तन रहा प्रथम बल लेसा॥ 4.29.C7
रीछराज जामवंत कहलनि, “हम आब बूढ़ भऽ गेल छी, शरीरमे पहिलुका जेंका बल नै रहल।”

597 बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ सो तनु बरनि न जाइ। 4.29.D1
598 उभय घरी महँ दीन्हीं सात प्रदच्छिन धाइ॥ 4.29.D2
“दैत्यराज बलिके बन्हैत काल प्रभु एत्ते बेसी पैघ भऽ गेलाह कि हुनक विशाल आकारक वर्णन नै कएल जा सकैत अछि। हम ओहि काल दौड़िके मात्र दू घड़ीमे हुनक सात बेर परिक्रमा कए लेलहुँ।”

599 अंगद कहइ जाउँ मैं पारा। जियँ संसय कछु फिरती बारा॥ 4.30.C1
अंगद कहलक, “हम ओहि पार तऽ जा सकैत छी मुदा वापस लौटयमे हमरा किछु संदेह अछि।”

600 कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेहु बलवाना॥ 4.30.C3
601 पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥ 4.30.C4
जामवंत तखन हनुमान सँ कहलनि, “हे बली! अहाँ चुप कियैक बैसल छी? अहाँ तऽ पवन देवक पुत्र छी आओर हुनके समान बली सेहो छी। अहाँ बुद्धि, विवेक और विज्ञानक खान छी।”

602 राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा॥ 4.30.C6
603 सहित सहाय रावनहि मारी। आनउँ इहाँ त्रिकूट उपारी॥ 4.30.C9
“अहाँके जन्म रामक काज करबाक लेल भेल अछि।” ई सुनिते हनुमान पर्वतक समान आकारक भऽ कऽ कहलैन, “हम रावण आ ओकर सेनाके मारिके त्रिकूट पर्वत कऽ एतय उठा कऽ आनि सकैत छी।”

604 जामवंत मैं पूँछउँ तोही। उचित सिखावनु दीजहु मोही॥ 4.30.C10
605 एतना करहु तात तुम्ह जाई। सीतहि देखि कहहु सुधि आई॥ 4.30.C11
"हे जामवंत! हम अहीं सँ पूछैत छी, हमरा उचित सलाह दिय।" जामवंत कहलनि, "हे तात! एखन अहाँ एतबै करू कि सीता कऽ देखि-सुनि हुनकर समाचार लऽके एतय आबू।"

606 भव भेषज रघुनाथ जसु सुनहिं जे नर अरु नारि। 4.30a.D1
607 तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥ 4.30a.D2
श्री रघुनाथक यश जन्म-मरणक अचूक औषधि छी। जे कोनो स्त्री-पुरुष संसारके कष्टक अचूक औषधि रघुनाथक ई यशगाथा सुनता, हुनक सब मनोरथ त्रिशिराक शत्रु प्रभु श्री राम अवश्य पूर्ण करताह।

सुन्दरकाण्ड

608 जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए॥ 5.1.C1
609 तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई॥ 5.1.C2
जामवंतक सुंदर वचन हनुमानके बहुत नीक लागल, हुनका हृदयमे आनंदक अनुभूति भेल। हनुमान सबके कहलनि, "हे भाई! जा धरि हम लौटि कऽ आबि ता धरि अहाँ सब कंद, मूल, फल खायके दु:ख सहैत हमर प्रतीक्षा करब।"

610 बार बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी॥ 5.1.C6
611 जेहिं गिरि चरन देइ हनुमंता। चलेउ सो गा पाताल तुरंता॥ 5.1.C7
फेर बारंबार रघुनाथक स्मरण कए वीर हनुमान बड्ड फुर्ती सँ उछैल गेलाह। जाहि पर्वत पर सँ ओ उछललैथ से तुरते पातालमे चलि गेल।

612 जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना॥ 5.1.C8
613 जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी॥ 5.1.C9
जेना रामक अमोघ बाण चलैत अछि, तहिना हनुमान तेजी सँ चललाह। समुद्र हनुमानके रामक दूत जानिके अपना भीतर स्थित मैनाक पर्वतके कहलक, "तूँ जा कऽ हनुमानक थकान दूर कर।"

614 हनूमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रनाम। 5.1.D1
615 राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम॥ 5.1.D2
हनुमान ओकर बात राखि कए स्पर्श कए प्रणाम कऽ लेलैन मुदा रुकलैथ नै, ओ ओकरा कहलनि, "प्रभु रामक काज पूरा कएने बिना हमरा भला विश्राम कतय?"

616 जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानैं कहुँ बल बुद्धि बिसेषा॥ 5.2.C1
617 सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता॥ 5.2.C2
जखन देवता सभ हनुमानके लंका जाइत देखलखिंह, तऽ हुनक विशेष बल औ' बुद्धिक परीक्षा लेबाक लेल सर्पक माता सुरसाके ओतय पठौलैन। ओ आबिके हनुमान सँ कहलक,

618 आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा। सुनत बचन कह पवनकुमारा॥ 5.2.C3
619 राम काजु करि फिरि मैं आवौं। सीता कइ सुधि प्रभुहि सुनावौं॥ 5.2.C4
"आई देवता सब हमर भोजनक लेल तोरा पठेने छथि।" ई सुनिके हनुमान कहलनि, "हम श्री रामक काज पूरा कऽके माता सीताके समाचार हुनका सुना कऽ, अपनेक लऽग आबि जायब।"

620 तब तव बदन पैठिहउँ आई। सत्य कहउँ मोहि जान दे माई॥ 5.2.C5
621 कवनेहुँ जतन देइ नहिं जाना। ग्रससि न मोहि कहेउ हनुमाना॥ 5.2.C6
"तखन हम अपने आबिके अहाँक आहार बनि जायब। हे माता! हम सत्य कहैत छी, मुदा एखन हमरा जाय दिअ।" जखन कोनो उपाय सँ सुरसा हुनका नै जाय देलक, तऽ हनुमान कहलनि, "फेर हमारा खाय नै कियैक छें?"

622 जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा। कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा॥ 5.2.C7
623 जस जस सुरसा बदनु बढ़ावा। तासु दून कपि रूप देखावा॥ 5.2.C9
ई सुनि सुरसा अपन मुँह एक योजन (आठ मील) चौड़ा खोलि लेलक। हनुमान ओहि सँ दुगुना अपन शरीरक विस्तार कय लेलाह। जेना-जेना सुरसा अपन मुखक विस्तार करैत गेल, ओना-ओना हनुमानो अपन आकार बढबैत गेलाह।

624 सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा॥ 5.2.C10
625 बदन पइठि पुनि बाहेर आवा। मागा बिदा ताहि सिरु नावा॥ 5.2.C11
फेर सुरसा अपन मुँह सौ योजनके केलक। ई देखि हनुमान अत्यंत छोट रूप धारण कय, सुरसाके मुँहमे जाय शीघ्रे बाहर आबि गेलाह आ सीस झुकाके हुनका सँ विदा माँगलैन।

626 राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान। 5.2.D1
627 आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान॥ 5.2.D2
सुरसा कहलक, "अहाँ बल औ' बुद्धिके निधान छी, अहीं रामचन्द्रजीके सब काज करब।" हुनका आशीर्वाद दय सुरसा लौटि गेल आ हनुमान हर्षित भएके आगू बढ़लाह।

628 निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभु के खग गहई ॥ 5.3.C1
629 सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा। तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा॥ 5.3.C4
ओहि समुद्रमे एकटा राक्षसी रहैत छल, जे माया सँ आकाशमे उड़इत पक्षीके ओकर छायाक सहारे पकैड़ लैत छल। ओ वैह छल हनुमानो संगे केलक। हनुमान जी ओकर कपट तुरते चीन्ह गेलैथ।

630 ताहि मारि मारुतसुत बीरा। बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥ 5.3.C5
तखन धीर बुद्धि मारुतिक पुत्र वीर हनुमान ओकरा मारिके समुद्रक ओई पार पहुँचि गेलाह।

631 मसक समान रूप कपि धरी। लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी ॥ 5.4.C1
632 नाम लंकिनी एक निसिचरी। सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥ 5.4.C2
ओतय हनुमान अपन आकार मच्छर जेहन छोट बना कऽ प्रभु रामचन्द्रक स्मरण करैत लंका दिस चलि पड़लाह। ओतय लंकिनी नामक एकटा राक्षसी लंकाक रक्षा करैत छल। ओ हनुमानके कहलक, "हमर उपेक्षा कएके कतए जा रहल छें?"

633 मुठिका एक महा कपि हनी। रुधिर बमत धरनीं ढनमनी ॥ 5.4.C4
634 पुनि संभारि उठी सो लंका। जोरि पानि कर बिनय ससंका ॥ 5.4.C5
हनुमान ओकरा एक घूँसा मारलैन, जाहि कारणे ओ शोणित बोकरैत धरती पर खसि पड़ल। एकर बाद लंकिनी कहुना सँभरि कऽ उठल आ डरइत- डरइत हाथ जोड़िके विनती करय लागल।

635 जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा। चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ॥ 5.4.C6
636 बिकल होसि तैं कपि के मारे। तब जानेसु निसिचर संघारे ॥ 5.4.C7
"जखन ब्रह्मा रावणके वरदान देने छलनि, तखन चलैत-चलैत हमरा ई संकेत देने छलाह कि जखन कोनो वानरक मारलाह सँ तू व्याकुल भऽ जहियें, तखन बूझि लिहें कि सभ राक्षसक नाश होमय बला छै।"

637 तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग। 5.4.D1
638 तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥ 5.4.D2

"हे तात! जौँ स्वर्ग आ मोक्षक सुखके तराजूक एक पलड़ामे राखल जाय तऽ उ सब मिलियोके ओहि सुखक बराबर नै भए सकैत छै, जे दोसर पलड़ामे राखल सत्संगक एक क्षण मात्रमे भेटैत छै।"

639 प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥ 5.5.C1
640 अति लघु रूप धरेउ हनुमाना। पैठा नगर सुमिरि भगवाना॥ 5.5.C4
"अहाँ कोसलराज रामचन्द्रके हृदयमे राखि लंकामे प्रवेश कएके काज करू।" तखन हनुमान भगवान रामक स्मरण करैत बहुत छोट रूप धरि कऽ लंकामे प्रवेश केलैन्ह।

641 गयउ दसानन मंदिर माहीं। अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं॥ 5.5.C6
642 सयन किएँ देखा कपि तेही। मंदिर महुँ न दीखि बैदेही॥ 5.5.C7
ओतय हनुमान रावणक महलमे गेलाह, जे बहुत सुंदर छल, जकर वर्णन नै कएल जा सकैत अछि। ओ ओतय रावण कऽ सूतल देखलनि, मुदा सीता महलमे कतउ नै देखाई देलनि।

643 भवन एक पुनि दीख सुहावा। हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा॥ 5.5.C8
फेर हुनका एकटा सुंदर महल देखाई देलकैन, ओतय भगवानक एकटा अनुपम मंदिर बनल छल।

644 रामायुध अंकित गृह सोभा बरनि न जाइ। 5.5.D1
645 नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरष कपिराइ॥ 5.5.D2
ताहि भवनमे रामक धनुष-बाण सेहो अंकित छल, ओइ महलक शोभाके वर्णन नै कएल जा सकैत अछि। ओकर संग-संग तुलसीक नव-नव गाछ देखि कऽ हनुमान बड्ड प्रसन्न भेलाह।

646 मन महुँ तरक करैं कपि लागा। तेहीं समय बिभीषनु जागा॥ 5.6.C2
647 राम राम तेहिं सुमिरन कीन्हा। हृदयँ हरष कपि सज्जन चीन्हा॥ 5.6.C3
ओ मोने-मन विचार करिते छलाह कि ओहि कालमे विभीषण जागि गेलाह। उठिते ओ राम नामक स्मरण केलैन। लंकामे एहन सज्जन के देखि हनुमान बड्ड हर्षित भेलाह।

648 तब हनुमंत कहा सुनु भ्राता। देखी चहउँ जानकी माता॥ 5.8.C4
649 जुगुति बिभीषन सकल सुनाई। चलेउ पवनसुत बिदा कराई॥ 5.8.C5
सज्जन कऽ चीन्हके तखन हनुमान कहलनि, "हे भाई! सुनू हम सीता माताके देखय चाहैत छी।" विभीषण हुनका सीता माताक दर्शन करबाक सब युक्ति बता देलनि। हनुमान हुनका सँ विदा लएके चलि पड़लाह।

650 करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ। बन असोक सीता रह जहवाँ॥ 5.8.C6
फेर ओ अपन छोट रूप धारण कए अशोक वन गेलाह, जतय सीता छलीह।

651 निज पद नयन दिएँ मन राम पद कमल लीन । 5.8.D1
652 परम दुखी भा पवनसुत देखि जानकी दीन॥ 5.8.D2
ओतय सीता अपन चरणक दिस टकटकी लगा कऽ देखैत प्रभु रामक चरणकमलमे लीन बैसल छलीह। हुनका एहि अवस्थामे देखि कऽ हनुमानके बड्ड दु:ख भेलन्हि।

653 तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई। करइ बिचार करौं का भाई॥ 5.9.C1
654 तेहि अवसर रावनु तहँ आवा। संग नारि बहु किएँ बनावा॥ 5.9.C2
ओ गाछक पत्तामे नुकायके सोचय लगलाह कि आब हम की करी? तखने ओतय बहुत स्त्रीगणक संग सजि-धजिके रावण आयल।

655 बहु बिधि खल सीतहि समुझावा। साम दान भय भेद देखावा॥ 5.9.C3
656 कहेसि सकल निसिचरिन्ह बोलाई। सीतहि बहु बिधि त्रासहु जाई॥ 5.10.C8
ओ दुष्ट सीता कऽ बुझायके, डराएके, साम, दाम, भय, भेद बताएके बुझेबाक प्रयास केलक। जाइत-जाइत राक्षसि सभके बजा कऽ, सीताके भाँति-भाँति सँ डराबय-धमकाबय लेल कहलक।

657 देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता॥ 5.12.C12
सीताके विरहमे एतेक व्याकुल देखि ओ क्षण हनुमान कऽ कल्पक समान लागल।

658 कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब। 5.12.S1
659 जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ॥ 5.12.S2

तखन अपना हृदयमे विचारि कऽ हनुमान रामक अँऊठी हुनका आगू खसा देलनि। सीताके लगलैन कि अशोक वृक्ष आगि दऽ देलक। ई सोचि ओ हर्षित भय अँऊठीके उठा लेलनि।

660 तब देखी मुद्रिका मनोहर। राम नाम अंकित अति सुंदर॥ 5.13.C1
तखन सीता ओ सुंदर आ मनोहर अँऊठी देखलैन, जाहि पर अति सुंदर रामक नाम अंकित छल।

661 राम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुनानिधान की॥ 5.13.C9
662 यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्हि राम तुम्ह कहँ सहिदानी॥ 5.13.C10
तकर बाद हनुमान सीताके अपन परिचय दैत कहलनि, "हे माता! हम करुणानिधान प्रभु रामक शपथ खाय कऽ कहैत छी कि हम हुनक दूत छी। ई अँऊठी हमहीं आनलहुँ, जे प्रभु राम निशानीके रूपमे अहाँक लेल पठौलैन अछि।"

663 हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी॥ 5.14.C1
664 अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी। अनुज सहित सुख भवन खरारी॥ 5.14.C3
हनुमान प्रभुक सेवक छथि ई जानिके सीताके मोनमे हुनका प्रति विशेष प्रीति भऽ गेलैन, हुनक आँखि नोरा गेल आ शरीर अत्यंत पुलकित भय गेल। ओ कहलीह, "हम बलिहारी जाइत छी। आब, अहाँ हमरा भाई लक्ष्मण सहित, सुखके धाम रघुनाथक कुशलता कऽ समाचार कहू।"

665 मातु कुसल प्रभु अनुज समेता। तव दुख दुखी सुकृपा निकेता॥ 5.14.C9
666 जनि जननी मानहु जियँ ऊना। तुम्ह ते प्रेमु राम कें दूना॥ 5.14.C10
हनुमान कहलनि, "हे माता! कृपाके धाम राम अपन अनुज लक्ष्मण संग सकुशल छथि। मात्र अहाँके दु:ख सँ दुखी छथि। अहाँ अपना मोनमे दुख जुनि करू, प्रभु रामक हृदयमे अहाँ सँ दुगुना प्रेम अछि।"

667 रघुपति कर संदेसु अब सुनु जननी धरि धीर। 5.14.D1
668 अस कहि कपि गदगद भयउ भरे बिलोचन नीर॥ 5.14.D2

“हे माता! अहाँ धीरज धरि रघुनाथजीक सन्देश सुनू।” ई कहैत-कहैत हनुमान जी गदगद भऽ गेलाह आओर हुनक नेत्रमे जल भरि गेल।

669 कहेउ राम बियोग तव सीता। मो कहुँ सकल भए बिपरीता॥ 5.15.C1
670 तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा। जानत प्रिया एकु मनु मोरा॥ 5.15.C6
हनुमान कहलनि “प्रभु राम कहलैथ अछि, हे सीता! अहाँके वियोगमे सब किछु हमर विपरीत भऽ गेल। हमरा आ अहाँके प्रेमक तत्त्व एक मात्र हमर मोन जनैत अछि।”

671 सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं। जानु प्रीति रसु एतनेहि माहीं॥ 5.15.C7
672 प्रभु संदेसु सुनत बैदेही। मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही॥ 5.15.C8
“ओ मोन हरदम अहींके लऽग रहैत अछि, हमर प्रेमक सार एतबेमे बुझि लिय।” प्रभुक सन्देश सुनि सीता प्रेममे मग्न भए गेलीह आ हुनका अपन देह तकके सुधि नै रहलैन।

673 कछुक दिवस जननी धरु धीरा। कपिन्ह सहित अइहहिं रघुबीरा॥ 5.16.C4
674 निसिचर मारि तोहि लै जैहहिं। तिहुँ पुर नारदादि जसु गैहहिं॥ 5.16.C5
हनुमान सीताजीके कहय लगलाह, “हे माता! अहाँ किछु दिन और धीरज धरू। प्रभु राम वानर सहित अओताह आ राक्षस सभ के मारि कऽ अहाँके लए जेताह। तखन हुनक यशगान नारद आदि ऋषि-मुनि तीनू लोकमे करताह।”

675 आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना॥ 5.17.C2
676 अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू॥ 5.17.C3
हनुमान रामके प्रिय छथि, ई जानि सीता हुनका आशीर्वाद दैत कहलनि, “हे पुत्र! अहाँ बल औ’ शीलके निधान बनू। अहाँ अजर, अमर आ गुणक भण्डार बनू। रघुकुलक नायक प्रभु राम अहाँ पर बहुत कृपा करैथ।”

677 अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता। आसिष तव अमोघ बिख्याता॥ 5.17.C6
678 सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा। लागि देखि सुंदर फल रूखा॥ 5.17.C7

सीता सँ आशीर्वाद पाबि हनुमान हुनका कहलैन, "हे माता! आब हम कृतार्थ भऽ गेलहुँ। अहाँके आशीर्वाद अचूक अछि, ई बात प्रसिद्ध अछि। हे माता सुनू, एहि गाछके सुंदर फल देखि हमरा बड्ड जोर सँ भूख लागि रहल अछि।"

679 देखि बुद्धि बल निपुन कपि कहेउ जानकीं जाहु। 5.17.D1
680 रघुपति चरन हृदयँ धरि तात मधुर फल खाहु॥ 5.17.D2

हनुमान बुद्धि बलमे श्रेष्ठ छैथ, ई जानिके सीता हुनका कहलैन, "हे तात! जाउ, रघुनाथ जीके चरण हृदयमे राखि मघुर फल खाउ।"

681 चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा। फल खाएसि तरु तोरैं लागा॥ 5.18.C1

हनुमान सीता जीके गोर लागि कऽ उपवनमे प्रवेश केलाह। पहिले किछु फल खेलैथ, फेर ओ गाछ सभके तोड़य लगलाह।

682 सुनि रावन पठए भट नाना। तिन्हहि देखि गर्जेउ हनुमाना॥ 5.18.C5
683 सब रजनीचर कपि संघारे। गए पुकारत कछु अधमारे॥ 5.18.C6

ई सुनि रावण बहुत योद्धाक ओतय पठौलक, जेकरा देखितै हनुमान गर्जना करय लगलाह। सब राक्षसके ओ मारि देलाह। जे किछु अधमरल रहि गेल, ओ चिचिचाइत-चिचिचाइत रावणक दरबारमे पहुँचल।

684 पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा। चला संग लै सुभट अपारा॥ 5.18.C7
685 आवत देखि बिटप गहि तर्जा। ताहि निपाति महाधुनि गर्जा॥ 5.18.C8

ओकर सबहक दशा देखिके रावण अपन पुत्र अक्षय कुमारके पठौलक, ओ अनगिनत वीर योद्धाके अपना संग लऽके चलल। ओकरा अबैत देखि हनुमान पहिने एकटा गाछ हाथमे लयके ललकारय लगलाह आ फेर ओकरा मारिके बड्ड जोर सँ गर्जना करय लगलाह।

686 चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा॥ 5.19.C3
687 उठि बहोरि कीन्हिसि बहु माया। जीति न जाइ प्रभंजन जाया॥ 5.19.C9

भायक मृत्यु कऽ समाचार सुनि अतुलित बलवान मेघनादके बड्ड तामस चढ़ल आओर तखन ओ' युद्ध करबाक लेल चलल। ओ तरह–तरहक माया रचलक, मुदा पवन पुत्र हनुमानके नै जीत सकल।

688 ब्रह्म अस्त्र तेहि साँधा कपि मन कीन्ह बिचार। 5.19.D1
689 जौं न ब्रह्मसर मानउँ महिमा मिटइ अपार॥ 5.19.D2

तखन मेघनाद ब्रह्मास्त्रक सन्धान केलक। हनुमान सोचलाह जौँ हम ब्रह्मास्त्रके नै मानब तऽ एकर अपार महिमा खतम भए जायत, तैं ओ अस्त्र लगला पर अपन इच्छा सँ मूर्छित भऽ गेलाह।

690 तेहिं देखा कपि मुरुछित भयउ। नागपास बाँधेसि लै गयउ॥ 5.20.C2
691 कह लंकेस कवन तैं कीसा। केहि कें बल घालेहि बन खीसा॥ 5.21.C1

हनुमानके मूर्छित देखि मेघनाद हुनका नागपाशमे बान्हि रावणक दरबारमे लऽ गेल। रावण हनुमान सँ कहलक, "हे वानर! तू के छिय? ककरा बल पर तूँ उपवनके उजाड़िके नष्ट कऽ देलैं?"

692 सुनु रावन ब्रह्मांड निकाया। पाइ जासु बल बिरचति माया॥ 5.21.C4
693 जाकें बल बिरंचि हरि ईसा। पालत सृजत हरत दससीसा॥ 5.21.C5
694 खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली। बधे सकल अतुलित बलसाली॥ 5.21.C9

हनुमान कहलैन, "हे रावण! जिनक बल पाबि माया पूरा ब्रह्माण्डक रचना करैत अछि आ चलबैत अछि; ब्रह्मा, विष्णु और महेश क्रमश: संसारक रचना, पालन औ' संहार करैत छथि; जे खर, दूषण, त्रिशिरा आ बालि सनके अतुलित बलवान सभके मारि देलाह।"

695 जाके बल लवलेस तें जितेहु चराचर झारि। 5.21.D1
696 तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि॥ 5.21.D2

"जिनक लेश मात्र बल सँ तू चराचर विश्व कऽ जीत लेलैं, जिनक प्रिय पत्नी कऽ तू चोराके आनि लेलै, हम ओहि प्रभु रामक दूत छी।"

697 बिनती करउँ जोरि कर रावन। सुनहु मान तजि मोर सिखावन॥ 5.22.C7
698 राम चरन पंकज उर धरहू। लंका अचल राजु तुम्ह करहू॥ 5.23.C1
“हे रावण! हम कर जोड़ि कऽ तोरा सँ प्रार्थना करैत छियौ, जे अपन अभिमान छोड़िके हमर सीख सुन। प्रभु रामक चरणकमलके हृदयमे राखिके तू लंका पर अचल राज्य कर।”

699 सुनि कपि बचन बहुत खिसिआना। बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना॥ 5.24.C5
700 सुनत निसाचर मारन धाए। सचिवन्ह सहित बिभीषनु आए॥ 5.24.C6
हनुमानक बात सुनिके रावण बहुत खिसियाय गेल आ राक्षस सभ सँ कहलक, “एहि मूर्खक प्राण किएक नै लैत छें?” ई सुनिते राक्षस हनुमानके मारय लेल दौड़ल। तखने ओतय यानी दरबारमे अपन मंत्रीगणके संग विभीषण एलाह।

701 नाइ सीस करि बिनय बहूता। नीति बिरोध न मारिअ दूता॥ 5.24.C7
702 सुनत बिहसि बोला दसकंधर। अंग भंग करि पठइअ बंदर॥ 5.24.C9
अत्यंत विनय सँ विभीषण कहय लगलाह कि दूतके मारनाय नीतिक विरुद्ध छैक। ई सुनिके रावण हँसि कऽ कहलक, “ठीक छै, एहि वानरक अंग-भंग कऽके वापस पठा दिय।”

703 कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ। 5.24.D1
704 तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ॥ 5.24.D2
“हम अहाँ सबके बुझाएके कहैत छी कि वानर कऽ अपन पूँछ सँ विशेष प्रेम होइत छैक, तैं तेलमे कपड़ा डुबा कऽ एकरा पूँछके बान्हू आ ओइमे आइग लगा दिऔ।”

705 पावक जरत देखि हनुमंता। भयउ परम लघुरूप तुरंता॥ 5.25.C8
706 जरइ नगर भा लोग बिहाला। झपट लपट बहु कोटि कराला॥ 5.26.C2
हनुमान जखन पूँछमे आइग जरैत देखलैन, तऽ तुरत अपन रूप छोट कऽ के कूदि-कूदिके पूरा नगरके जरबय लगलैन, लोक सब व्याकुल भऽ गेल। आगिक करोड़ों भयंकर लपट फैलय लागल।

707 जारा नगरु निमिष एक माहीं। एक बिभीषन कर गृह नाहीं॥ 5.26.C6
708 उलटि पलटि लंका सब जारी। कूदि परा पुनि सिंधु मझारी॥ 5.26.C8
हनुमान एकटा विभीषणक घर कऽ छोड़ि पूरा नगरके क्षण मात्रमे जराय देलाह। उलटि-पलटि कऽ पूरा लंका जरेलाक बाद ओ समुद्रमे कूदि गेलाह।

709 पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि। 5.26.D1
710 जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि॥ 5.26.D2
तकर बाद ओ समुद्रमे अपन पूँछक आइग बुझायके अपन थकावट दूर केलैन। फेर छोट रूप धारण कऽ ओ सीताजीके आगू जाय हाथ जोड़िके ठाढ़ भऽ गेलाह।

711 मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा। जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा॥ 5.27.C1
712 चूड़ामनि उतारि तब दयऊ। हरष समेत पवनसुत लयऊ॥ 5.27.C2
आ कहलैन, "हे माता! अहाँ हमरा अपन किछु पहचानि दिय, जेना रघुकुलक नायक रामचन्द्र हमरा अहाँके लेल देने छलाह।" सीता तखन अपन चूड़ामणि उतारिके हुनका देलनि, जे हनुमान प्रसन्नतापूर्वक लऽ लेलाह।

713 कहेहु तात अस मोर प्रनामा। सब प्रकार प्रभु पूरनकामा॥ 5.27.C3
714 दीन दयाल बिरिदु संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी॥ 5.27.C4
सीता हनुमान सँ कहलनि, "हे तात! प्रभुके हमर प्रणामक संग ई कहब कि प्रभु अहाँ तऽ सब प्रकार सँ पूर्ण काम छी, तथापि दीन -दुखी पर दया केनाय अहाँके स्वभाव अछि। तैं ओहि यशके स्मरण कय हमर भारी संकटके दूर करू।"

715 जनकसुतहि समुझाइ करि बहु बिधि धीरजु दीन्ह। 5.27.D1
716 चरन कमल सिरु नाइ कपि गवनु राम पहिं कीन्ह॥ 5.27.D2
हनुमान नाना प्रकार सँ सीताजीके समझा-बुझाके भरोस देलैन, फेर हुनका प्रणाम कए राम लऽग चलि गेलाह।

717 पवनतनय के चरित सुहाए। जामवंत रघुपतिहि सुनाए॥ 5.30.C6
718 सुनत कृपानिधि मन अति भाए। पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए॥ 5.30.C7

हनुमान द्वारा कएल गेल सभ सुंदर काजक बारे मऽ जामवंत रामके सुनौलाह। जे कृपाक सागर राम कऽ एतेक नीक लगलैन कि ओ हर्षित भएके हनुमान कऽ हृदय सँ लगा लेलैन।

719 चलत मोहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदयँ लाइ सोइ लीन्ही॥ 5.31.C1
720 सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला॥ 5.31.C9
तखन हनुमान ओ चूड़ामणि रामके देलैन, जे चलैत काल माता सीता हुनका देने छलीह। राम ओकरा अपन हृदय सँ लगा लेलैन। हनुमान तखन राम सँ इहो कहलैन, "दीनदयाल! सीता माताके विपइत बड्ड पैघ छन्हि। अहि विषयमे किछु नै बाजब उचित रहत।"

721 तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा। कहा चलैं कर करहु बनावा॥ 5.34.C6
722 चला कटकु को बरनैं पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा॥ 5.35.C8
ओकर बाद रघुपति वानरक राजा सुग्रीव कऽ बजाके चलबाक तैयारी करबाक हेतु कहलैन। आज्ञा भेटितै हुनक विशाल सेना चलि पड़ल, जकर वर्णन कयनाय कठिन अछि। असंख्य वानर और भालू गर्जना करय लागल।

723 एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर। 5.35.D1
724 जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर॥ 5.35.D2
एहि तरहे कृपानिधान राम समुद्रक कात पहुँचि गेलाह। वीर वानर आ भालू जतय-ततय फल खाय लागल।

725 उहाँ निसाचर रहहिं ससंका। जब तें जारि गयउ कपि लंका॥ 5.36.C1
726 अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा॥ 5.38.C2
जखन सँ हनुमान लंकाके जरायके गेलैन, तखन सँ राक्षस सभ भयभीत भऽ गेल। परिस्थिति कऽ माँग देखि विभीषण रावणक दरबारमे आबि अपन भायके प्रणाम केलैन।

727 तात राम नहिं नर भूपाला। भुवनेस्वर कालहु कर काला॥ 5.39.C1
728 देहु नाथ प्रभु कहुँ बैदेही। भजहु राम बिनु हेतु सनेही॥ 5.39.C6

आ रावणके कहलनि, "हे तात! रामचंद्र खाली मनुष्यक नै, सब लोकक स्वामी आ कालो कऽ काल छथि। तैं अहाँ सीता जीके लौटा दिय आ बिना कोनो स्वार्थके स्नेह करयबला रामजी के भजू।"

729 सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई॥ 5.41.C2
730 अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा॥ 5.41.C6
ई सुनिते रावण तमसायके कहलक, "अरे दुष्ट! तोहर मृत्यु आब निकट आबि गेलउ।" ई कहिके ओ विभीषणजीके पैर सँ मारलक। तइयो विभीषण बेर-बेर रावणक पैर पकड़ि कऽ ओकरा बुझेबाक प्रयास केलैन।

731 रामु सत्यसंकल्प प्रभु सभा कालबस तोरि। 5.41.D1
732 मैं रघुबीर सरन अब जाउँ देहु जनि खोरि॥ 5.41.D2
अंतमें विभीषणके कहय पड़लैन, "श्री रामचन्द्र सत्यसंकल्प एवं परमेश्वर छथि, लगैत अछि तोहर सभा कालक वशमे छौ। तैं हम आब रघुवीरक शरणमे जाइत छी, बादमे हमरा कोनो दोष नै दिहं।"

733 श्रवन सुजसु सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर। 5.45.D1
734 त्राहि त्राहि आरति हरन सरन सुखद रघुबीर॥ 5.45.D2
रामचन्द्रक लऽग पहुँचि विभीषण कहलनि, "हे प्रभु हम अहाँके सुंदर यश सुनि कऽ एतय आयल छी। अहाँ जन्म औ' मरणके भय कऽ नाश करयबला छी। हे दीनक दु:ख दूर करयबला, शरणमे आएलके सुख देबयबला श्री रघुवीर! हमर रक्षा करू!!"

735 सुनहु सखा निज कहउँ सुभाऊ। जान भुसुंडि संभु गिरिजाऊ॥ 5.48.C1
राम कहलाह, "हे मित्र! हम आब अहाँके अपन स्वभाव कहैत छी, जे काकभुशुण्डि, शिव आ पार्वती सेहो जनैत छैथ।"

736 जौं नर होइ चराचर द्रोही। आवै सभय सरन तकि मोही॥ 5.48.C2
737 तजि मद मोह कपट छल नाना। करउँ सद्य तेहि साधु समाना॥ 5.48.C3

"जौँ सम्पूर्ण विश्वक जड़-चेतनक द्रोही अपन मद, मोह, कपट, छल आ दोसर दोषके तजिके भयभीत भऽ हमरा शरणमे अबैत अछि, तऽ ओकरो हम बहुत जल्दी साधु जेंकां बना दैत छियैक।"

738 अस कहि राम तिलक तेहि सारा। सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥ 5.49.C10
739 सुनु कपीस लंकापति बीरा। केहि बिधि तरिअ जलधि गंभीरा ॥ 5.50.C5
ई सब कहि राम हुनकर राजतिलक कऽ देलखिंह। आकाश सँ फूलक अपार वर्षा होमय लागल। तखन राम कहलनि, "हे वीर वानरराज सुग्रीव आ लंकापति विभीषण! ई गहींर समुद्रके कोना पार कयल जाय?"

740 कह लंकेस सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु सोषक तव सायक ॥ 5.50.C7
741 जद्यपि तदपि नीति असि गाई। बिनय करिअ सागर सन जाई ॥ 5.50.C8
तखन लंकेश विभीषण कहलनि, "हे रघुनायक! अहाँके एकटा बाण करोड़ों समुद्रके सोखि सकैत अछि, तथापि नीतिक मुताबिक़ अपने कऽ सागर लऽग जाके पहिले ओकरा सँ विनती करबाक चाही।"

742 प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥ 5.51.C7
हुनक सलाह मानि, राम पहिले तऽ समुद्रके प्रणाम केलैन, फेर समुद्रक कातमे कुश बिछा कऽ बैस गेलाह।

743 बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति। 5.57.D1
744 बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति ॥ 5.57.D2
तीन दिन बीतला पर जखन मूर्ख समुद्र रामक प्रार्थना नै सुनलक, तखन प्रभु तमसायके कहलनि, "बिना भयके प्रेम नै होइत छैक।"

745 अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा ॥ 5.58.C5
746 संधानेउ प्रभु बिसिख कराला। उठी उदधि उर अंतर ज्वाला ॥ 5.58.C6
ई कहिके ओ धनुष पर चाप चढ़ा लेलैन, जे लक्ष्मणके बड्ड नीक लगलैन। प्रभुक भयंकर बाण धनुष पर संधान होइते समुद्रक गहराईमे आगिक ज्वाला प्रकट भऽ गेल।

747 कनक थार भरि मनि गन नाना। बिप्र रूप आयउ तजि माना ॥ 5.58.C8
748 सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥ 5.59.C1
समुद्र तखन अपन अभिमान छोड़ि सोनाके थारीमे बहुत रास मणि लयके, ब्राह्मणक वेशमे ओतय आयल। डरइत- डरइत ओ प्रभु रामक चरण पकड़िके कहलक, "हे नाथ! हमर सब अवगुणके क्षमा करू।"

749 नाथ नील नल कपि द्वौ भाई। लरिकाईं रिषि आसिष पाई ॥ 5.60.C1
750 तिन्ह कें परस किएँ गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥ 5.60.C2
"हे नाथ! अहाँक सेनामे नल आ नील दूटा वानर भाय छथि, जिनका बचपनमे ऋषि सँ एकटा आशीर्वाद भेटल छल। हिनका छूबा मात्र सँ आ अपनेक प्रतापे भारी-भारी पहाड़ सेहो समुद्रमे हेलय लागत।"

751 मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहउँ बल अनुमान सहाई ॥ 5.60.C3
752 एहि बिधि नाथ पयोधि बँधाइअ। जेहिं यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ ॥ 5.60.C4
"हमहूँ अपनेक प्रभुताके हृदयमे राखि अपना बलक अनुसारे सहायता करब। हे नाथ! अइ तरहें समुद्र कऽ बान्हू, जाहि सँ तीनू लोकमे अहाँके सुयश गायल जाए।"

753 सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान। 5.60.D1
754 सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान ॥ 5.60.D2
श्री रघुनाथक गुणगान सबके सुख देबयबला अछि। जे कियो एहि प्रसंगके सादर सुनता, ओ बिना कोनो जहाजे कऽ भवसागर सँ तरि जयताह।

लंकाकाण्ड

755 सिंधु बचन सुनि राम सचिव बोलि प्रभु अस कहेउ । 6.0b.S1
756 अब बिलंबु केहि काम करहु सेतु उतरै कटकु ॥ 6.0b.S2
सागरक वचन सुनि राम मंत्रीगणके बजाय कऽ कहलाह, "आब देरी कोन बातक? पुल बनवाउ जाहि सँ सेना ओहि पार जा सकय।"

757 अति उतंग गिरि पादप लीलहिं लेहिं उठाइ । 6.1.D1
758 आनि देहिं नल नीलहि रचहिं ते सेतु बनाइ ॥ 6.1.D2
वानर-भालू ऊँच-ऊँच पर्वत आओर गाछके खेल-खेलमे उखाड़िके नल आ नील कऽ दैत छथिन्ह, जाहि सँ ओ सब बढियाँ सऽ सुंदर पुल बनौलैन।

759 देखि सेतु अति सुंदर रचना । बिहसि कृपानिधि बोले बचना ॥ 6.2.C2
760 करिहउँ इहाँ संभु थापना । मोरे हृदयँ परम कलपना ॥ 6.2.C4
पुलक सुंदर रचना देखि कृपानिधि राम हँसि कय कहलनि, "हम एतय शिव जीक स्थापना करब, हमरा हृदयमे ई पैघ संकल्प अछि।"

761 लिंग थापि बिधिवत करि पूजा । सिव समान प्रिय मोहि न दूजा ॥ 6.2.C6
762 जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं । ते तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं ॥ 6.3.C1
प्रभु शिवलिंग स्थापित कए कऽ ओकर यथाविधि पूजन केलाह आ कहलाह, "हमरा शिव जी सन के प्रियगर दोसर कियो नै अछि। जे कियो रामेश्वरक दर्शन करताह, ओ देह त्यागलाक बाद हमर लोकमे जयता।"

763 सेन सहित उतरे रघुबीरा । कहि न जाइ कपि जूथप भीरा ॥ 6.5.C2
764 सुनत श्रवन बारिधि बंधाना । दस मुख बोलि उठा अकुलाना ॥ 6.5.C10
सेनाक संग पुल पर चलि कय रामसमुद्रक पार पहुँच गेलाह। वानर आ ओकर सेनापतिक भीड़ जे छल ओकर वर्णन केनाय मुश्किल अछि। ओम्हर समुद्र पर पुल बनि गेल, ई समाचार सुनिके रावण घबड़ाय कऽ दसों मुख सँ एक्के संग बाजि उठल।

765 बाँध्यो बननिधि नीरनिधि जलधि सिंधु बारीस। 6.5.D1
766 सत्य तोयनिधि कंपति उदधि पयोधि नदीस॥ 6.5.D2
"की सचमे वननिधि, नीरनिधि, जलधि, सिन्धु, वारीश, तोयनिधि, कंपति, उदधि, पयोधि, नदीशके बान्हि लेलक?"

767 मंदोदरीं सुन्यो प्रभु आयो। कौतुकहीं पाथोधि बँधायो॥ 6.6.C2
768 तासु बिरोध न कीजिअ नाथा। काल करम जिव जाकें हाथा॥ 6.6.C9
मंदोदरी जखन सुनलैन कि प्रभु रामचन्द्र आबि गेलाह आ ओ खेले-खेलमे समुद्रके बान्हि लेलैन, तऽ ओ रावण सँ कहली,"हे नाथ! राम सँ विरोध नै करू, जिनक हाथमे काल, कर्म आ जीव तीनू अइछ।"

769 तासु भजनु कीजिअ तहँ भर्ता। जो कर्ता पालक संहर्ता॥ 6.7.C4
770 सुनु तैं प्रिया बृथा भय माना। जग जोधा को मोहि समाना॥ 6.8.C2
"हे स्वामी! अहाँ हुनक भजन करू, जे संसारके उत्पन्न करयबला, पालक आ संहारक छथि। रावण कहलक, हे प्रिये! सुनूँ, अहाँ व्यर्थे डराय छी। कहू, हमरा सनके योद्धा अई संसारमे दोसर के अछि?"

771 इहाँ प्रात जागे रघुराई। पूछा मत सब सचिव बोलाई॥ 6.17.C1
772 मंत्र कहउँ निज मति अनुसारा। दूत पठाइअ बालिकुमारा॥ 6.17.C4
एम्हर जखन भोरमे रघुनाथ जागलाह, तऽ ओ मंत्रीगण संग मंत्रणा केलैन आ हुनका सभ सँ विचार पुछलैन। तखन जामवंत कहलनि, "हमरा बुझने पहिने बालिक पुत्र अंगदके दूत बनाके रावण कऽ लऽग पठायल जाय।"

773 बालितनय बुधि बल गुन धामा। लंका जाहु तात मम कामा॥ 6.17.C6
774 बंदि चरन उर धरि प्रभुताई। अंगद चलेउ सबहि सिरु नाई॥ 6.18.C1
राम अंगद सँ कहलनि, "हे बल, बुद्धि औ' गुणक धाम बालिपुत्र! हे तात! अहाँ हमर काजक लेल लंका जाउ।" अंगद हुनक चरण-वंदन कय आ अपना हृदयमे रामक प्रभुता कऽ धारण कयके सभ गोटे के प्रणाम कऽ चलि पड़लाह।

775 गयउ सभा दरबार तब सुमिरि राम पद कंज। 6.18.D1
776 सिंह ठवनि इत उत चितव धीर बीर बल पुंज॥ 6.18.D2
प्रभु रामके चरणकमलक स्मरण कय अंगद रावण कऽ सभामे पहुँचलाह। ओतय जाय धीर,वीर आ बलक राशि अंगद सिंह जेना शान सँ एतय–ओतय देखय लगलाह।

777 कह दसकंठ कवन तैं बंदर। मैं रघुबीर दूत दसकंधर॥ 6.20.C1
778 अब सुभ कहा सुनहु तुम्ह मोरा। सब अपराध छमिहि प्रभु तोरा॥ 6.20.C6
दशकंठ रावण पूछलक, "अरे वानर! तू के छें?" अंगद कहलक, "हे दशकंध! हम रघुवीर श्री रामचन्द्रक दूत छी। आब तूँ अपन भऽलक बात सुन। जौं ओहि पर अमल करबें तऽ प्रभु तोहर सभ अपराध क्षमा कय देथुंह।"

779 दसन गहहु तृन कंठ कुठारी। परिजन सहित संग निज नारी॥ 6.20.C7
780 सादर जनकसुता करि आगें। एहि बिधि चलहु सकल भय त्यागें॥ 6.20.C8
"तू अपन दाँतमे तिनका दबा ले, कंठमे कुठार पहिर ले, अपन स्त्री-परिजन सभके संग लऽ कऽ, फेर सीता जी कऽ आदरपूर्वक आगू कयके, सब प्रकारक भय त्यागि हमरा संग आत्मसमर्पण करबाक लेल चल।"

781 रे कपिपोत बोलु संभारी। मूढ़ न जानेहि मोहि सुरारी॥ 6.21.C1
ई सुनि रावण कहलक, "अरे वानरक बालक! रे मूर्ख! सँभरिके बाज, की तूँ नै जनैत छें कि हम देवता सबहक घोर शत्रु छी?"

782 पुनि सकोप बोलेउ जुबराजा। गाल बजावत तोहि न लाजा॥ 6.33.C3
783 रे त्रिय चोर कुमारग गामी। खल मल रासि मंदमति कामी॥ 6.33.C5
तखन युवराज अंगद क्रोध सहित कहलक, "अरे, स्त्री चोरी कऽ, कुमार्ग पर चलयबला आ पापक खान दुष्ट, पापक राशि, मन्दबुद्धि आ कामी!" तोरा गाल बजबैत लाज नै होइत छौ?

784 सो नर क्यों दसकंध बालि बध्यो जेहिं एक सर। 6.33a.S1
785 बीसहुँ लोचन अंध धिग तव जन्म कुजाति जड़॥ 6.33a.S2

"अरे दशकंध! जे बालिके एक्के बाण सँ मारि देलाह, की ओ सामान्य मनुष्य भऽ सकैत छथि? अरे कुजाति! बीसटा आँखि बला आन्हर! तूँ जड़ बुइध आ कुजाति छें, तोरा जन्म कऽ धिक्कार छौ।"

786 समुझि राम प्रताप कपि कोपा। सभा माझ पन करि पद रोपा॥ 6.34.C8
787 जौं मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी॥ 6.34.C9
तकर बाद प्रभु रामक प्रताप कऽ स्मरण कए अंगद तमसायके रावणक सभामे दृढ़ता सँ पैर रोपिके चुनौती देत कहलैन, "अरे मूर्ख! जौं कियो हमर चरणके डिगा देत, तऽ हम प्रतिज्ञा कए कहैत छिऔ कि राम लौटि जेथुंह, हम सीताजीके हारि गेलहुँ।"

788 झपटहिं करि बल बिपुल उपाई। पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई॥ 6.34.C12
789 कपि बल देखि सकल हियँ हारे। उठा आपु कपि कें परचारे॥ 6.35.C1
राक्षस सम्पूर्ण बल आ अनेक उपाय कएके अंगदक पैर उठेबाक लेल झपटल, मुदा ओकरा सभ सँ हुनक पैर हिलैत तक नै छल। तखन ओ सब माथ नीचा कऽके अपन-अपन स्थान पर लौटि गेल। अंगदक बल देखि सभ राक्षस हृदय सँ हारि गेल। तखन अंगदक ललकार पर रावण अपने उठि ठाढ़ भेल।

790 गहत चरन कह बालिकुमारा। मम पद गहें न तोर उबारा॥ 6.35.C2
791 गहसि न राम चरन सठ जाई। सुनत फिरा मन अति सकुचाई॥ 6.35.C3
रावणके प्रयास करैत देखि अंगद कहलक, "हे रावण! हमर चरण पकड़ला सँ तोहर उद्धार नै हेतउ। अरे मूर्ख! तू प्रभु रामक चरण कियैक नै पकड़इत छें?" ई सुनि रावण मोने-मन बहुत लजा गेल।

792 रिपु बल धरषि हरषि कपि बालितनय बल पुंज। 6.35a.D1
793 पुलक सरीर नयन जल गहे राम पद कंज॥ 6.35a.D2
एहि तरहे शत्रु कऽ बलक मर्दन कए, बलक राशि अंगद प्रसन्न भऽ रामक लऽग पहुँचि गेलाह। पुलकित शरीर आ आँखिमे आनन्दक नोर भरिके ओ रामक चरण पकड़ि लेलाह।

794 रिपु के समाचार जब पाए। राम सचिव सब निकट बोलाए॥ 6.39.C1
795 लंका बाँके चारि दुआरा। केहि बिधि लागिअ करहु बिचारा॥ 6.39.C2
अंगद सँ रावणक दरबारक हाल सुनिके राम सचिव सबके बजा कऽ सलाह करय लगलाह, ओ कहलनि, "लंकामे चारिटा बड्ड विकट दरवाजा छै। ओतय कोना आक्रमण कएल जाय, एहि बात पर विचार करू।"

796 करि बिचार तिन्ह मंत्र दृढ़ावा। चारि अनी कपि कटकु बनावा॥ 6.39.C4
797 हरषित राम चरन सिर नावहिं। गहि गिरि सिखर बीर सब धावहिं॥ 6.39.C7
सब गोटे विचार-विमर्श केलाक बाद ई निर्णय लेलैन कि कपि सेनाक चारि टा दल बनायल जाय। सब वीर हर्षित भएके प्रभु रामक चरणमे सिर नवा, पर्वतक शिखर लऽ-लऽ के दौड़ैत छैथ।

798 राम प्रताप प्रबल कपिजूथा। मर्दहिं निसिचर सुभट बरूथा॥ 6.42.C1
799 निज दल बिचल सुनी तेहिं काना। फेरि सुभट लंकेस रिसाना॥ 6.42.C6
प्रभु रामक प्रताप सँ राक्षसके बलशाली होइतो वानरक झुण्ड ओकरा मसलऽ लागल। रावण जखन सुनलक कि ओकर सेना विचलित भऽ रहल अइछ, तऽ ओ रणभूमि सँ भागैत योद्धा सभ पर तमसायके फेर सँ लड़बाक लेल पठा देलक।

800 निसिचर अनी देखि कपि फिरे। जहँ तहँ कटकटाइ भट भिरे॥ 6.46.C5
801 कोपि कपिन्ह दुर्घट गढ़ु घेरा। नगर कोलाहलु भयउ घनेरा॥ 6.49.C9
राक्षसक सेनाके फेर सँ अबैत देखि वानर लौटिके आबि गेल आ सभ कटकटा कऽ जहाँ-तहाँ भिड़ गेल। तमसायल वानर दुर्गम किला कऽ घेर लेलक, जाहि कारणे नगरमे बहुत शोर मचि गेल।

802 मेघनाद सुनि श्रवन अस गढ़ु पुनि छेंका आइ। 6.49.D1
803 उतर्यो बीर दुर्ग तें सन्मुख चल्यो बजाइ॥ 6.49.D2
भोरमे जखन मेघनाद ई सुनलक कि किलाके घेर लेल गेल, तऽ ओ किला सँ उतरिके डंका बजबैत लड़बाक लेल सोंझा आयल।

804 दस दस सर सब मारेसि परे भूमि कपि बीर। 6.50.D1
805 सिंहनाद करि गर्जा मेघनाद बल धीर॥ 6.50.D2

ओ सबके दस-दस टा बाण मारलक, जाहि सँ वीर वानर पृथ्वी पर खसि पड़लाह। अपन विजय देखि कऽ मेघनाद सिंहक समान गरजय लागल।

806 आयसु मागि राम पहिं अंगदादि कपि साथ। 6.52.D1
807 लछिमन चले क्रुद्ध होइ बान सरासन हाथ॥ 6.52.D2

तखन लक्ष्मण प्रभु राम सँ आज्ञा लएके, अंगद आदि वानरक संग क्रोधित मुद्रामे धनुष-बाणक संग मेघनाद सँ युद्ध करबाक लेल चलि पड़लाह।

808 लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा। भिरहिं परसपर करि अति क्रोधा॥ 6.54.C2
809 बीरघातिनी छाड़िसि साँगी। तेजपुंज लछिमन उर लागी॥ 6.54.C7

लक्ष्मण आ मेघनाद दुनू योद्धा अत्यंत क्रोधित भऽके परस्पर युद्ध करय लगलाह। अपन प्राण संकटमे देखि मेघनाद वीराघातिनी शक्ति चलौलक। तेजसँ पूर्ण ओ शक्ति लक्ष्मणक छातीमे जा कऽ लागल, फलस्वरूप ओ मूर्छित भए गेलाह।

810 ब्यापक ब्रह्म अजित भुवनेस्वर। लछिमन कहाँ बूझ करुनाकर॥ 6.55.C5
811 तब लगि लै आयउ हनुमाना। अनुज देखि प्रभु अति दुख माना॥ 6.55.C6

ओम्हर सर्वव्यापक, ब्रह्म, अजेय, सब लोकक स्वामी आ करुणाक खान रामचन्द्र पूछय लगलाह, "लक्ष्मण कतय अछि?" ताबत तक हनुमान लक्ष्मणके लऽ कऽ आबि गेलाह। छोट भायके मूर्छित देखि प्रभु बड्ड दुखी भेलाह।

812 जामवंत कह बैद सुषेना। लंकाँ रहइ को पठई लेना॥ 6.55.C7
813 धरि लघु रूप गयउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरंता॥ 6.55.C8

जामवंत कहलक, "लंकामे सुषेण वैद्य रहैत छथिन्ह, हुनका आनय लेल ककरा पठायल जाय?" हनुमान छोट रूप धारण कएके लंका गेलाह औ' वैद्य सुषेण कऽ ओकर घर समेत तुरते उठा आनलाह।

814 राम पदारबिंद सिर नायउ आइ सुषेन। 6.55.D1
815 कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन॥ 6.55.D2

वैद्य सुषेण आबि रामक चरणकमलमे अपन सिर झुकौलक। ओ पर्वत आ औषधिक नाम बतायके कहलक, "हे पवनपुत्र! ओतय सँ ई औषधि नेने आऊ।"

816 राम चरन सरसिज उर राखी। चला प्रभंजनसुत बल भाषी॥ 6.56.C1
817 देखा सैल न औषध चीन्हा। सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा॥ 6.58.C7
प्रभु रामक चरणकमलके हृदयमे राखि आ सबके आश्वासन दय कि "हम औषधि लयके एखने अबै छी," पवनपुत्र हनुमान चलि पड़लाह। ओ पर्वत पर तऽ पहुँचि गेलाह, मुदा औषधिके नै चीन्ह सकलाह। तैं ओ पर्वतेक उखाड़ि लेलाह आ ओकरा लयके वापस चलि पड़लाह।

818 उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी॥ 6.61.C1
819 जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥ 6.61.C6
ओम्हर भाई लक्ष्मणक दशा देखिलके राम सामान्य मनुष्यक भाँति दुखी भएके विलाप करय लगलाह, "जौं जनितौं कि वनमे भाय सँ विछोह होयत तऽ हम पिताके वचनके मानि एतय नै अबितौं।"

820 प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर। 6.61.S1
821 आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस॥ 6.61.S2
प्रभु कऽ विलाप सुनि सब वानर व्याकुल भए गेल। ओहि काल हनुमान ओतय ऐना अएला, जेना करुण रसमे वीर रस आबिके मिल गेल होय।

822 तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई॥ 6.62.C2
823 यह बृत्तांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ॥ 6.62.C5
वैद्य सुषेण तुरते लक्ष्मणक उपचार केलक, जाहि सँ कनिए कालमे लक्ष्मण प्रसन्न भए उठि बैसलाह। रावण जखन ई समाचार सुनलक तऽ बड्ड दुखी भेल आ अपन माथ धुनय लागल।

824 ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा॥ 6.62.C6
825 कुंभकरन दुर्मद रन रंगा। चला दुर्ग तजि सेन न संगा॥ 6.64.C2

एहि व्याकुलतामे रावण अपन छोट भाय कुम्भकर्णक लऽग गेल आ तरह-तरहक उपाय कयके ओकरा जगाके सभ बात कहलक। कुम्भकर्ण मद सँ चूर आ युद्धक उत्साह सँ भरल छल। ओ असगरे दुर्ग सँ निकलल आ सेनाक संग लेने बिना युद्ध करबाक लेल चलि पड़ल।

826 कुंभकरन कपि फौज बिडारी। सुनि धाई रजनीचर धारी॥ 6.67.C7
827 देखी राम बिकल कटकाई। रिपु अनीक नाना बिधि आई॥ 6.67.C8
कुम्भकर्णके अबितै वानर सेना छिन्न-भिन्न भए गेल। ई देखि-सुनि राक्षसक सेनाक बल बढि गेल आ ओ सभ प्रोत्साहित भएके दौड़ल। राम देखलैन कि हुनकर सेना कऽ शत्रुके नाना प्रकारक सेना व्याकुल कए रहल अछि।

828 तब प्रभु कोपि तीब्र सर लीन्हा। धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा॥ 6.71.C4
829 बहु बिलाप दसकंधर करई। बंधु सीस पुनि पुनि उर धरई॥ 6.72.C4
तखन प्रभु राम क्रोध सँ भरि, तीव्र बाणक द्वारा कुम्भकर्णक माथ धड़ सँ अलग कए देलैन। कुम्भकर्णक माथ देखिके रावण अपन भायक सीसके छाती सँ लगाय के बिलखि-बिलखिके कानय लागल।

830 मेघनाद तेहि अवसर आयउ। कहि बहु कथा पिता समुझायउ॥ 6.72.C6
831 देखेहु कालि मोरि मनुसाई। अबहिं बहुत का करौं बड़ाई॥ 6.72.C7
तखने मेघनाद ओतय आयल आ बहुत तरहक कथा कहिके अपन पिताके बुझाबय लागल। ओ कहलक, "काल्हि अहाँ हमर पराक्रम देखब, एखन हम अपन प्रशंसा की करी?"

832 एहि बिधि जल्पत भयउ बिहाना। चहुँ दुआर लागे कपि नाना॥ 6.72.C9
एहि तरहे डींग हँकैत-हँकैत भोर भए गेल। लंकाके चारू दरवाजा पर बहुत-रास वानर युद्ध करबाक लेल आबि गेल।

833 मेघनाद मायामय रथ चढ़ि गयउ अकास। 6.72.D1
834 गर्जेउ अट्टहास करि भइ कपि कटकहि त्रास॥ 6.72.D2

मेघनाद तखन मायाक रथ पर चढि आकाशमे चऽल गेल आ जोर-जोर सँ अट्टहास कएके गरजल, जाहि सँ वानरक सेना डइर गेल।

835 तुम्ह लछिमन मारेहु रन ओही। देखि सभय सुर दुख अति मोही ॥ 6.75.C8
836 जौं तेहि आजु बधें बिनु आवौं। तौ रघुपति सेवक न कहावौं ॥ 6.75.C13
तखन रघुनाथ लक्ष्मण सँ कहलनि, "हे लक्ष्मण! जाउ आजुक युद्धमे मेघनादके अवश्य मारब। देवतागणके डराइत देखिके हमरा बड्ड दु:ख भए रहल अइछा।" लक्ष्मण कहलैथ, "हे प्रभु! आई ओकर वध कयने बिना हम लौटि तऽ रामक सेवक नै कहायब।"

837 सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा। सर संधान कीन्ह करि दापा ॥ 6.76.C15
838 छाड़ा बान माझ उर लागा। मरती बार कपटु सब त्यागा ॥ 6.76.C16
कोसलपति रामके प्रतापक स्मरण कए, वीरोचित दर्प सँ भरल लक्ष्मण अपन बाणक संधान केलैन, छुटिटै बाण मेघनादक छातीके बीचमे जा कऽ लागल। मरइत काल ओ सब कपट छोड़ि देलक।

839 सुत बध सुना दसानन जबहीं। मुरुछित भयउ परेउ महि तबहीं ॥ 6.77.C6
840 चलेउ निसाचर कटकु अपारा। चतुरंगिनी अनी बहु धारा ॥ 6.79.C1
जखने रावण अपन पुत्रक मृत्युक समाचार सुनलक ओ बेसुध भएके धरती पर खसि पड़ल। होशमे अयला पर रावण अपन चतुरंगिणी सेनाक आ अनेक प्रकारक घनघोर सेनाक संग युद्ध करबाक लेल चलि पड़ल।

841 इत उत झपटि दपटि कपि जोधा। मर्दै लाग भयउ अति क्रोधा ॥ 6.82.C5
842 पाहि पाहि रघुबीर गोसाईं। यह खल खाइ काल की नाईं ॥ 6.82.C7
ओ अत्यंत क्रोधित भएके वानर सेना कऽ झपटि-डपटि कय मसलय लागल। व्याकुल भऽ वानर-भालु सब प्रभु रामक लऽग जाके दुहाई करैत कहय लागल, "हे प्रभु! रक्षा करू! रक्षा करू! ई दुष्ट हमरा सबके कालक समान खेने जा रहल अछि।"

843 बहुरि राम सब तन चितइ बोले बचन गँभीर। 6.89.D1
844 द्वंदजुद्ध देखहु सकल श्रमित भए अति बीर ॥ 6.89.D2

तखन सबहक दिस देखि राम गम्भीर वचनमे कहलनि, "हे वीर सब! अहाँ सब बहुत थाकि गेल होयब, तैं आब बैसि कऽ हमरा आ रावणक द्वन्द्व युद्ध देखू।"

845 दस दस बान भाल दस मारे। निसरि गए चले रुधिर पनारे॥ 6.92.C8
846 तीस तीर रघुबीर पबारे। भुजन्हि समेत सीस महि पारे॥ 6.92.C10
राम रावणके दसों माथमे दस-दसटा बाण मारलैंह, जे आर-पार निकलि गेल। ओकरा माथ सँ शोणितक धारा बहय लागल। प्रभु फेर तीसटा तीर चलाके रावणके दसों माथ आ बीसों भुजाके काटि कऽ पृथ्वी पर खसा देलाह।

847 काटत बढ़हिं सीस समुदाई। जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई॥ 6.102.C1
848 मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेषा। राम बिभीषन तन तब देखा॥ 6.102.C2
मुदा माथ कटला कऽ बादो रावणके माथ ओहिना बढय लागल, जेना लोभीक लोभ ओकर हरेक लाभक बाद बढैत छै। जखन विशेष श्रम कएलाक बादो शत्रु नै मरल, तऽ प्रभु विभीषणक दिस देखलैथ।

849 उमा काल मर जाकीं ईछा। सो प्रभु जन कर प्रीति परीछा॥ 6.102.C3
850 नाभिकुंड पियूष बस याकें। नाथ जिअत रावनु बल ताकें॥ 6.102.C5
शिव जी कहैत छथिन्ह, "हे पार्वती! जिनक इच्छा मात्र सँ काल सेहो मरि जाइत छै, ओ प्रभु अपन सेवक विभीषणक प्रेमके परीक्षा लऽ रहल छथिन्ह।" विभीषण कहलनि, "हे नाथ! रावणक नाभिमे अमृतक वास छैक, ओ ताहि के बल पर जीबैत अछि।"

851 खैंचि सरासन श्रवन लगि छाड़े सर एकतीस। 6.102.D1
852 रघुनायक सायक चले मानहुँ काल फनीस॥ 6.102.D2
तखन राम धनुषक प्रत्यंचा कान तक खींचके, एकतीसटा बाण छोड़लैन। हुनक बाण ऐना चलल जेना ओ कालके सर्प हो।

853 सायक एक नाभि सर सोषा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा॥ 6.103.C1
854 धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा। तब सर हति प्रभु कृत दुइ खंडा॥ 6.103.C3

एकटा बाण जा कऽ रावणक नाभिके अमृतकुण्ड सोखि लेलक, बाकि बाण क्रुद्ध भएके ओकर दसों माथ आ बीसों हाथमे जा कऽ लागल। रावणक धड़के प्रचंड वेग सँ धरती धँसय लागल, तखन प्रभु बाण चलायके ओकर धड़क दूटा टुकड़ा कय देलैन।

855 गर्जेउ मरत घोर रव भारी। कहाँ रामु रन हतौं पचारी॥ 6.103.C4

मरितो काल रावण गर्जना करैत कहलक, "राम कतय अछि? हम ललकाइरके ओकरा रणमे मारब।"

856 तासु तेज समान प्रभु आनन। हरषे देखि संभु चतुरानन॥ 6.103.C9
857 बरषहिं सुमन देव मुनि बृंदा। जय कृपाल जय जयति मुकुंदा॥ 6.103.C11

रावणक शरीरसँ निकलल तेज प्रभुके मुखमे समा गेल। ई देखि शिव और ब्रह्मा बड्ड प्रसन्न भेलाह। देवता आ ऋषि-मुनि सब फूल बरसाबैत जयघोष करय लगलाह, "हे कृपालु! अपनेक जय हो। हे मुकुन्द भगवान, अपनेक जय हो!"

858 कृपादृष्टि करि बृष्टि प्रभु अभय किए सुर बृंद। 6.103.D1
859 भालु कीस सब हरषे जय सुख धाम मुकुंद॥ 6.103.D2

एहि तरहें प्रभु राम कृपा दृष्टिक वर्षा कए कऽ देवतागणके निर्भय कय देलाह। वानर भालू सब बहुत हर्षित भेल आ सुखक धाम मुकुन्द रामचन्द्रक जय-जयकार करय लागल।

860 सब मिलि जाहु बिभीषन साथा। सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा॥ 6.106.C3
861 सादर सिंहासन बैठारी। तिलक सारि अस्तुति अनुसारी॥ 6.106.C6

तखन रघुकुलक नाथ राम कहलाह, "अहाँ सब विभीषण जीक संग जा कऽ हुनक राजतिलक संपन्न करू।" सब गोटे विभीषण कऽ सादर सिंहासन पर बैसायके, तिलक लगा हुनक स्तुति केलैन।

862 पुनि प्रभु बोलि लियउ हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना॥ 6.107.C1
863 समाचार जानकिहि सुनावहु। तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु॥ 6.107.C2

तखन प्रभु हनुमानके बजाय कऽ कहलनि, "आब अहाँ लंका जा कऽ सीता जीके सब समाचार सुनबियौ आ हुनकर कुशलताक समाचार लऽके आबू।"

864 सब बिधि कुसल कोसलाधीसा। मातु समर जीत्यो दससीसा ॥ 6.107.C7
सीता लऽग पहुँचिके हनुमान कहलनि, "हे माता! कोसलपति राम सब तरहें सकुशल छथि, ओ युद्धमे दसटा माथ बला रावणके जीत लेलैन।"

865 सुनु सुत सदगुन सकल तव हृदयँ बसहुँ हनुमंत। 6.107.D1
866 सानुकूल कोसलपति रहहुँ समेत अनंत ॥ 6.107.D2
तखन सीता हुनका आशीर्वाद दैत कहली, "सुनू पुत्र! अहाँके हृदयमे सब सदगुण बसल रहय आ लक्ष्मण सहित कोसलपति प्रभु अहाँ पर हरदम प्रसन्न रहैथ।"

867 अब सोइ जतन करहु तुम्ह ताता। देखौं नयन स्याम मृदु गाता॥ 6.108.C1
868 तब हनुमान राम पहिं जाई। जनकसुता कै कुसल सुनाई ॥ 6.108.C2
"हे तात! आब अहाँ एहन उपाय करू कि हम श्यामल कोमल शरीरबला अपन स्वामीक दर्शन कय सकी।" तखन रामक लऽग जाय हनुमान सीताक कुशलताके समाचार सुनौलैन।

869 सुनि संदेसु भानुकुलभूषन। बोलि लिए जुबराज बिभीषन ॥ 6.108.C3
870 मारुतसुत के संग सिधावहु। सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥ 6.108.C4
हनुमान सँ ई समाचार सुनिके सूर्यवंशक भूषण राम युवराज अंगद आ विभीषणके बजा कऽ कहलनि, "अहाँ पवनपुत्र मारुति नंदनक संग जाउ आ सीताके अहि ठाम सँ सादर लऽ कए आउ।"

871 सीता प्रथम अनल महुँ राखी। प्रगट कीन्हि चह अंतर साखी॥ 6.108.C14
सीताक अयला पर राम हुनका पहिले अग्निमे प्रवेश करौलेन, जाहि सँ हुनक वास्तविक रूप प्रकट कएल जा सकय।

872 जौं मन बच क्रम मम उर माहीं। तजि रघुबीर आन गति नाहीं॥ 6.109.C7
873 तौ कृसानु सब कै गति जाना। मो कहुँ होउ श्रीखंड समाना ॥ 6.109.C8

एहि पर सीता कहलनि, "जौँ मन, कर्म आ वचन सँ हमर हृदयमे श्री रघुवीर कऽ छोड़ि ककरो दोसरके प्रति कोनो भाव नै अछि, तऽ अग्निदेव अहाँ सबहक मोनक हाल जनैत छथि, हमर भाव बूझि कऽ चन्दनक समान शीतल भए जाउ।"

874 धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो। 6.109.X13
875 जिमि छीरसागर इंदिरा रामहि समर्पी आनि सो॥ 6.109.X14
तखन अग्निदेव शरीर धारण कएके प्रकट भेलाह, आ वेदमे बखान कएल गेल वास्तविक सीताजी कऽ हाथ रामके ऐना सौंपि देलाह जेना छीरसागर विष्णुके लक्ष्मीजी सौंपने छलाह।

876 सो राम बाम बिभाग राजति रुचिर अति सोभा भली। 6.109.X15
877 नव नील नीरज निकट मानहुँ कनक पंकज की कली॥ 6.109.X16
सीता श्री रामचन्द्रक बामाँ भागमे विराजित भए एहन लगैत छलीह, जेना नव खिलल नील-कमलक लऽग स्वर्ण कमलक कली शोभायमान होय।

878 जनकसुता समेत प्रभु सोभा अमित अपार। 6.109b.D1
879 देखि भालु कपि हरषे जय रघुपति सुख सार॥ 6.109b.D2
सीता सहित प्रभु रामक अमित आ अपार शोभा देखि वानर-भालू बहुत हर्षित भए गेल आ सुखक सागर रघुनाथक जय-जयकार करय लगलाह।

880 अनुज जानकी सहित प्रभु कुसल कोसलाधीस। 6.112.D1
881 सोभा देखि हरषि मन अस्तुति कर सुर ईस॥ 6.112.D2
लक्ष्मण, जानकीक संग परम कुशल रामचन्द्रजीक शोभा देखि देवराज इन्द्र मोने-मन प्रसन्न भए हुनक स्तुति करय लगलाह।

882 अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल। 6.113.D1
883 काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल॥ 6.113.D2
इंद्र कहलाह, "हे कृपालु! आब कृपा कए हमरा दिस देखि कऽ आज्ञा दिय कि हम अपनेक की सेवा करी?" इन्द्रक प्रिय वचन सुनि दीनदयाल प्रभु कहलनि।

884 सुनु सुरपति कपि भालु हमारे। परे भूमि निसचरन्हि जे मारे॥ 6.114.C1
885 मम हित लागि तजे इन्ह प्राना। सकल जिआउ सुरेस सुजाना॥ 6.114.C2
"सुनू देवराज इन्द्र! ई धरती पर पड़ल वानर आ भालू जे राक्षसक द्वारा मारल गेल, ओ हमर हितक लेल अपन प्राण त्यागलक। हे सुजान इन्द्र! हिनका सब के जीवित कय दिय।"

886 प्रभु सक त्रिभुअन मारि जिआई। केवल सक्रहि दीन्हि बड़ाई॥ 6.114.C4
887 सुधा बरषि कपि भालु जिआए। हरषि उठे सब प्रभु पहिं आए॥ 6.114.C5
जे राम तीनू लोकक जीव कऽ मारिके पुनः जीवित कऽ सकैत छथि, ओ तीनू लोकमे इन्द्रक प्रतिष्ठा स्थापित करबाक लेल एहि तरहक बात हुनका कहैत छथिन्ह। इन्द्र अमृत बरसायके वानर आ भालू सभके जियाय देलाह। ओ सब प्रसन्न भए उठलाह आ प्रभुक लऽग गेलाह।

888 राम सरिस को दीन हितकारी। कीन्हे मुकुत निसाचर झारी॥ 6.114.C9
889 खल मल धाम काम रत रावन। गति पाई जो मुनिबर पाव न॥ 6.114.C10
प्रभु रामक समान दीन-दुखीक भला करयबला आ निशाचर सभके मुक्ति प्रदान करय बला एहि संसारमे दोसर के भऽ सकैत अछि। दुष्ट, पापक धाम आ कामी रावणके जे गति प्रभु देलाह, ओ श्रेष्ठ मुनि तक सेहो नै पबैत छैथ।

890 सुमन बरषि सब सुर चले चढ़ि चढ़ि रुचिर बिमान। 6.114a.D1
891 देखि सुअवसर प्रभु पहिं आयउ संभु सुजान॥ 6.114a.D2
फूलक वर्षा करैत सभ देवता अपन-अपन सुन्दर विमानमे चलि गेलाह। तखन उचित अवसर देखि सुजान शिवजी प्रभु रामजीक लऽग एलाह।

892 परम प्रीति कर जोरि जुग नलिन नयन भरि बारि। 6.114b.D1
893 पुलकित तन गदगद गिराँ बिनय करत त्रिपुरारि॥ 6.114b.D2
त्रिपुरारि शिव अत्यंत प्रेम सँ दुनू हाथ जोड़ि कय अपन कमल सन नेत्रमे जल भरि, प्रेमक मारे पुलकित तन आ गदगद वाणीमे रामजीक विनती करय लगलाह।

894 करि बिनती जब संभु सिधाए। तब प्रभु निकट बिभीषनु आए॥ 6.116.C1
895 दीन मलीन हीन मति जाती। मो पर कृपा कीन्हि बहु भाँती॥ 6.116.C4
जखन शिव जी स्तुति कएके चलि गेलाह तऽ विभीषण प्रभुक लऽग आबिके कहलाह, "हे प्रभु! अहाँ हमरा सन दीन, पापी, बुद्धि आ जाति सँ हीन पर बहुत तरहक कृपा कयलहुँ।"

896 सुनत बचन मृदु दीनदयाला। सजल भए द्वौ नयन बिसाला॥ 6.116.C8
विभीषणक कोमल वचन सुनि दीन पर दया करयबला रामक दुनू विशाल नेत्रमे जल भरि गेल।

897 बहुरि बिभीषन भवन सिधायो। मनि गन बसन बिमान भरायो॥ 6.117.C3
898 चढ़ि बिमान सुनु सखा बिभीषन। गगन जाइ बरषहु पट भूषन॥ 6.117.C5
एकर बाद विभीषण अपन महल मे गेलाह आ तरह-तरहक मणिक्य-वस्त्र सँ पुष्पक विमानके भरि देलाह। ई देखि रामजी कहलनि, "हे मित्र! अहाँ विमान कऽ आकाशमे लऽ जाके एहि वस्त्र आ आभूषणक बरसा कए दिय।"

899 भालु कपिन्ह पट भूषन पाए। पहिरि पहिरि रघुपति पहिं आए॥ 6.118.C1
जखन भालू आ वानर सबके वस्त्र आ आभूषण भेटल, तऽ ओ ओकरा पहिरि-पहिरिके रघुनाथके लऽग आयल।

900 तुम्हरें बल मैं रावनु मार्यो। तिलक बिभीषन कहँ पुनि सार्यो॥ 6.118.C4
901 निज निज गृह अब तुम्ह सब जाहू। सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू॥ 6.118.C5
प्रभु कहलनि, "हम अहीं सबहक बल सँ रावणके मारलहुँ। फेर विभीषणके राजतिलक कऽ देलैन। राम सबहक बल आ आत्मविश्वास बढेबाक लेल कहलैन, आब अहाँ सब अपन-अपन घर लौटि जाउ। हमर स्मरण करैत रहब, ककरो सँ डरायब नै।"

902 प्रभु प्रेरित कपि भालु सब राम रूप उर राखि। 6.118a.D1
903 हरष बिषाद सहित चले बिनय बिबिध बिधि भाषि॥ 6.118a.D2

प्रभुक आज्ञा सँ सब वानर-भालू रामके स्वरूपके अपना हृदयमे राखिके विविध प्रकारसँ विनती कयके किछु हर्ष आ किछु विषादक संग अपन-अपन घर लौटि गेल।

904 कपिपति नील रीछपति अंगद नल हनुमान। 6.118b.D1
905 सहित बिभीषन अपर जे जूथप कपि बलवान॥ 6.118b.D2
906 कहि न सकहिं कछु प्रेम बस भरि भरि लोचन बारि। 6.118c.D1
907 सन्मुख चितवहिं राम तन नयन निमेष निवारि॥ 6.118c.D2

वानरराज सुग्रीव, नील, जामवंत, अंगद, नल, हनुमान विभीषण आ बाकी बलशाली वानर सेनापति प्रेमक वशमे किछु नहि कहि पबैत छथि। ओ सब आँखिमे नोर भरिके बिना पिपनी झपकेने मात्र रामचन्द्र जीक दिस देखि रहल छथि।

908 अतिसय प्रीति देखि रघुराई। लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई॥ 6.119.C1
909 सिंहासन अति उच्च मनोहर। श्री समेत प्रभु बैठे ता पर॥ 6.119.C4

हुनकर अतिशय प्रेम देख कऽ रघुनाथजी सभके पुष्पक विमानमे बैसा लेलैन। विमानमे एकटा ऊँच मनोहर सिंहासन छल, ताहिमे सीताजी सहित रामजी बैसला।

910 रुचिर बिमानु चलेउ अति आतुर। कीन्ही सुमन बृष्टि हरषे सुर॥ 6.119.C6
911 कह रघुबीर देखु रन सीता। लछिमन इहाँ हत्यो इँद्रजीता॥ 6.119.C9

सुंदर विमान अत्यंत तेजी सँ चलल, जे देखि देवता हर्षित भए फूलक वर्षा करय लगलाह। रामजी सीताजी कऽ नीचा देखाके कहलैन, "हे सीते! रणभूमिके देखू। लक्ष्मण मेघनादके एतय मारने छलाह।"

912 हनूमान अंगद के मारे। रन महि परे निसाचर भारे॥ 6.119.C10
913 कुंभकरन रावन द्वौ भाई। इहाँ हते सुर मुनि दुखदाई॥ 6.119.C11

"हनुमान आ अंगद द्वारा मारल कतेको राक्षस रणभूमिमे पड़ल छथि। देवता औ' मुनिगणके दु:ख देबयबला रावण आ कुम्भकर्ण दुनू भाई सेहो एतय मारल गेल।"

914 इहाँ सेतु बाँध्यों अरु थापेउँ सिव सुख धाम। 6.119a.D1
915 सीता सहित कृपानिधि संभुहि कीन्ह प्रनाम॥ 6.119a.D2

“एतय समुद्र पर पुल बना कऽ सुखक धाम शिव जीक स्थापना कएल गेल।” ई कहिके सीताजी सहित रामजी महादेवके प्रणाम केलैन।

916 तुरत बिमान तहाँ चलि आवा। दंडक बन जहँ परम सुहावा॥ 6.120.C1
917 सकल रिषिन्ह सन पाइ असीसा। चित्रकूट आए जगदीसा॥ 6.120.C3
विमान शीघ्रे ओतय जा पहुँचल, जतय परम सुंदर दंडक वन छल। सब ऋषिसँ आशीर्वाद लय जगतक ईश्वर प्रभु राम चित्रकूट पहुँचलाह।

918 तीरथपति पुनि देखु प्रयागा। निरखत जन्म कोटि अघ भागा॥ 6.120.C7
919 पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि। त्रिबिध ताप भव रोग नसावनि॥ 6.120.C9
ओ फेर सीता जीके तीर्थराज प्रयाग देखौलैन जिनक दर्शन मात्र सँ करोड़ों जन्मक पाप भागि जाइत छै। फेर अत्यंत पवित्र अयोध्या नगरीक दर्शन कएलाह, जे स्थान तीनूँ प्रकारक ताप आ भव रोगक नाश करैत अछि।

920 प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई। धरि बटु रूप अवधपुर जाई॥ 6.121.C1
921 भरतहि कुसल हमारि सुनाएहु। समाचार लै तुम्ह चलि आएहु॥ 6.121.C2
प्रभु तखन हनुमानके बुझायके कहलनि, “अहाँ बटुकक रूपमे अयोध्या जाउ। भरतके हमर कुशल-क्षेम सुना कए हुनकर समाचार लयके वापस आउ।”

922 समर बिजय रघुबीर के चरित जे सुनहिं सुजान। 6.121a.D1
923 बिजय बिबेक बिभूति नित तिन्हहि देहिं भगवान॥ 6.121a.D2
जे बुद्धिमान लोक श्री रघुनाथजीक रण-विजयबला चरित्र सुनैत छथि, हुनका भगवान हरदम विजय, विवेक आ ऐश्वर्य प्रदान करैत छथिन्ह।

उत्तरकाण्ड

924 रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग। 7.0a.D1
925 जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृस तन राम बियोग॥ 7.0a.D2
रामजीक वनवास सँ लौटबाक अवधिमे मात्र एक दिन शेष रहि गेल छल, तैं अयोध्यावासी बड्ड अधीर भए रहल छथि। प्रभुक वियोगमे कृश तन भेल स्त्री औ' पुरुष जतय-ततय सोच-विचार कय रहल छथि।

926 राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत। 7.1a.D1
927 बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत॥ 7.1a.D2
रामक विरहरूपी सागरमे भरतक मोन उबि-डूबि रहल छलैन्ह। तखने पवनपुत्र हनुमान ब्राह्मणक रूपमे ऐना अएला, जेना कोनो डूबैत के बचेबाक लेल पोत आयल हो।

928 देखत हनूमान अति हरषेउ। पुलक गात लोचन जल बरषेउ॥ 7.2.C1
929 रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता। आयउ कुसल देव मुनि त्राता॥ 7.2.C4
हनुमान भरतके देखिते अति प्रसन्न भए गेलाह। हुनक शरीर पुलकित भए गेल आ आँखि सँ नोर बहय लागल। ओ कहय लगलाह, "सज्जन लोकनिके सुख देबयबला आ देवता-मुनिगणक रक्षा करयबला, प्रभु राम सकुशल वापस आबि गेलाह।"

930 हरषि भरत कोसलपुर आए। समाचार सब गुरहि सुनाए॥ 7.3.C1
भरत प्रसन्न भएके अयोध्यापुरी एलाह आ गुरुके सब समाचार सुनौलैन

931 सुनत सकल जननीं उठि धाईं। कहि प्रभु कुसल भरत समुझाईं॥ 7.3.C3
932 समाचार पुरबासिन्ह पाए। नर अरु नारि हरषि सब धाए॥ 7.3.C4
समाचार सुनिते सब माता दौड़ल एलीह। भरत प्रभुक कुशल कहि कऽ सबके बुझौलेन। जखन नगरक लोक सभके ई समाचार भेटल, तऽ सब स्त्री-पुरुष हर्षित भए दौड़ पड़ल।

933 आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान। 7.4a.D1
934 नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि बिमान॥ 7.4a.D2
जखन कृपाके सागर भगवान राम लोक सभके अबैत देखलेन, तऽ ओ पुष्पक विमानके नगरक लऽग धरती पर उतरैक प्रेरणा देलैन। विमान धरती पर उतरल।

935 आए भरत संग सब लोगा। कृस तन श्रीरघुबीर बियोगा॥ 7.5.C1
936 बामदेव बसिष्ट मुनिनायक। देखे प्रभु महि धरि धनु सायक॥ 7.5.C2
भरतक संग आएल लोक सब प्रभुक वियोगमे दुब्बर भए गेल छल। वामदेव, वसिष्ठ आ श्रेष्ठ ऋषि-मुनि के देखिके प्रभु अपन धनुष-बाण धरती पर राखि देलाह।

937 धाइ धरे गुर चरन सरोरुह। अनुज सहित अति पुलक तनोरुह॥ 7.5.C3
938 सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा। धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा॥ 7.5.C5
छोट भाई लक्ष्मण सहित दौड़ि आ अति पुलकित भए ओ गुरुके चरणकमल पकड़ि लेलैन। धर्मक धुरीके धारण करयबला रघुकुलक स्वामी रामचन्द्रजी सब ब्राह्मणके प्रणाम केलैन।

939 गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज। नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज॥ 7.5.C6
940 परे भूमि नहिं उठत उठाए। बर करि कृपासिंधु उर लाए॥ 7.5.C7
फेर भरत प्रभुके ओई चरणकमलके पकड़ि लेलाह। जिनक वन्दना मुनि, शंकर आ ब्रह्मा सेहो करैत छथि। भरत धरती पर ऐना खसि पड़लाह कि ओ उठेला सँ सेहो नै उठैत छलाह। तखन कृपासिंधु रामजी जबरदस्ती हुनका उठायके अपन हृदय सँ लगा लेलैन।

941 पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लगाइ। 7.5.D1
942 लछिमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाइ॥ 7.5.D2
फेर प्रभु शत्रुघ्नके हृदय सौं लगायके प्रसन्नतापूर्वक भेंट कयलाह। भरत आ लक्ष्मण दुनू भाय सेहो प्रेम सहित भेंट केलैन।

943 अमित रूप प्रगटे तेहि काला। जथा जोग मिले सबहि कृपाला॥ 7.6.C5
944 कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी। किए सकल नर नारि बिसोकी॥ 7.6.C6

ओतय एहि कालमे कृपालु राम अपन असंख्य रूप प्रकट कए सब सँ यथायोग्य एक्के संगे भेंट केलैन। राम सब स्त्री-पुरुषके अपन कृपा भरल दृष्टि सँ देखलैन आ सबके शोकरहित कय देलैन।

945 पुनि रघुपति सब सखा बोलाए। मुनि पद लागहु सकल सिखाए॥ 7.8.C5
946 गुर बसिष्ट कुलपूज्य हमारे। इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे॥ 7.8.C6
तत्पश्चात ओ अपन सब मित्रगणके बजाक मुनिके चरण स्पर्श करबाक लेल कहलाह। प्रभु कहलनि, "गुरु वसिष्ठ हमर कुलक पूज्य छथि, हिनके कृपा सँ रणभूमिमे हम सब राक्षसके मारि सकलहुँ।"

947 ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे। भए समर सागर कहँ बेरे॥ 7.8.C7
फेर ओ गुरु सँ कहलनि, "हे मुनि! सुनू, ई सब हमर मित्र थिकाह जे युद्ध रूपी सागरमे हमरा लेल जहाजक समान सिद्ध भेलाह।"

948 प्रभु जानी कैकई लजानी। प्रथम तासु गृह गए भवानी॥ 7.10.C1
949 ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा। पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा॥ 7.10.C2
शिव जी कहैत छथि, "हे पार्वती! ई सोचिके कि माता कैकेयी बहुत लज्जित छथि, प्रभु सब सँ पहिने हुनका महलमे गेलाह। हुनका समझा-बुझा कए सुखी केलैन, फेर ओ अपना महलमे गेलाह।"

950 गुर बसिष्ट द्विज लिए बुलाई। आजु सुघरी सुदिन समुदाई॥ 7.10.C4
गुरु वसिष्ठ ब्राह्मण सभके बजाय कऽ कहलनि, "आजुक शुभ घड़ी, सुन्दर दिन सभ शुभ करयबला योग बना रहल अछि।"

951 सुनु खगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि बृंद। 7.11c.D1
952 चढ़ि बिमान आए सब सुर देखन सुखकंद॥ 7.11c.D2
काकभुशुण्डि पक्षी राजा गरुड़ सँ कहैत छथि, "हे खगेश! तखन शुभ अवसर जानिके ओतय ब्रह्मा, शिव, ऋषि मुनि सबहक समूह, विमान पर चढिके सब देवता सुखक कंद रामचन्द्रजीके दर्शन करय अएलाह।"

953 प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा। तुरत दिब्य सिंघासन मागा॥ 7.12.C1
954 रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥ 7.12.C2
गुरु वसिष्ठ जखन रामजीके देखलैन, तऽ हुनका मोनमे विशेष प्रेम उमड़ि गेल। ओ तुरते एकटा दिव्य सिंहासन मंगौलैन, जकर तेज सूर्यक समान छल। ओकर सौन्दर्यक वर्णन नै कयल जा सकैत छैक। ब्राह्मण सभके प्रणाम कय रामचन्द्रजी ओहि पर बैसि गेलाह।

955 प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा॥ 7.12.C5
956 सुत बिलोकि हरषीं महतारी। बार बार आरती उतारी॥ 7.12.C6
सब सँ पहिने गुरु वसिष्ठ रामजीके तिलक लगौलैन, फेर ओ सब ब्राह्मणके तिलक लगेबाक आज्ञा देलैन। पुत्र कऽ राज सिंहासन पर देखि कय माता सब बहुत हर्षित भेलीह। ओ सब बारम्बार हुनकर आरती उतारय लगलीह।

957 बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर। 7.13b.D1
958 बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर॥ 7.13b.D2
काकभुशुण्डि कहैत छथि, "हे गरुड़! सुनू तखन जतय रघुवीरजी छलाह ओतय शिवजी एलाह। ओ गदगद स्वरमे हुनक स्तुति करय लगलाह। हुनकर वाणी गदगद भए गेल आ आनंदक मारे शरीर पुलकित भए गेल।"

959 बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग। 7.14a.D1
960 पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥ 7.14a.D2
"हे श्रीपते! हम बारम्बार यैह वर मंगैत छी कि हमरा अपनेक चरणकमलक अचल भक्ति आ अपनेक भक्त जनक सत्संग हरदम भेटय। अहाँ प्रसन्न भए हमरा ई वर दिय।"

961 ब्रह्मानंद मगन कपि सब कें प्रभु पद प्रीति। 7.15.D1
962 जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति॥ 7.15.D2
सभ वानर प्रभुक प्रेममे मग्न रहबाक कारण ब्रह्मानंदमे मग्न छैथ। दिन बीतैत गेल, ककरो पता नहि चलल, एहि तरहे छह मास बीत गेल।

963 तब रघुपति सब सखा बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिरु नाए॥ 7.16.C2
तखन राम सभ मित्रगण के बजौलैन। सब आबिके सादर प्रणाम केलाह।

964 परम प्रीति समीप बैठारे। भगत सुखद मृदु बचन उचारे॥ 7.16.C3
965 तुम्ह अति कीन्हि मोरि सेवकाई। मुख पर केहि बिधि करौं बड़ाई॥ 7.16.C4
हुनका सभके बड्ड प्रेम सँ प्रभु अपन लऽग बैसायके, भक्तगणके सुख देबयबला कोमल वचनमे कहलनि, "अहाँ सब हमर बड्ड सेवा कयलहुँ, अहींके मुँह पर अहाँके प्रशंसा कोना करी।"

966 ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे। मम हित लागि भवन सुख त्यागे॥ 7.16.C5
967 सब कें प्रिय सेवक यह नीती। मोरें अधिक दास पर प्रीती॥ 7.16.C8
"हमर हितक लेल अहाँ सब अपन घर आ अन्य सुख छोड़ि देलहुँ, तैं अहाँ सभ हमरा अत्यंत प्रिय छी। सेवक तऽ सबके प्रिय लगैत छै, ई स्वाभाविक अछि; मुदा हमरा हुनका सब सँ विशेष प्रेम अइछ।"

968 तब प्रभु भूषन बसन मगाए। नाना रंग अनूप सुहाए॥ 7.17.C5
तखन प्रभु हुनका सबहक लेल रंग-बिरंगक अनुपम सुन्दर कपड़ा-गहना मँगेलैन।

969 जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ। 7.17a.D1
970 हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ॥ 7.17a.D2
जामवंत आ नील आदि सबके रामजी अपने सँ आभूषण औ वस्त्र पहिरौलेंह। ओ सब हृदयमे प्रभुक स्वरूप के राखि आ हुनक चरणमे शीश नवायके अपन-अपन घर चलि गेलाह।

971 तब सुग्रीव चरन गहि नाना। भाँति बिनय कीन्हे हनुमाना॥ 7.19.C7
972 दिन दस करि रघुपति पद सेवा। पुनि तव चरन देखिहउँ देवा॥ 7.19.C8
जखन सब चलि गेल तऽ कपिराज सुग्रीवक चरण पकड़िके हनुमान अनेक प्रकारसँ विनती करैत कहलाह, "हे देव! हमरा दस दिन रघुनाथ जीके चरणक सेवामे करबाक आज्ञा दिय, फेर हम आबिके अहाँके चरणक दर्शन करब।"

973 पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा। सेवहु जाइ कृपा आगारा॥ 7.19.C9
सुग्रीव कहलाह, "हे पवनपुत्र अहाँ पुण्यक राशि छी। जाउ, कृपाके धाम रामचन्द्रजीक सेवा करू।"

974 पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा। दीन्हे भूषन बसन प्रसादा॥ 7.20.C1
975 तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता। सदा रहेहु पुर आवत जाता॥ 7.20.C3
फेर कृपालु राम निषादराज गुहके बजायके हुनका आभूषण-वस्त्र आदि दऽके कहलाह, "अहाँ हमर मित्र आ भरतक समान भाय छी। अयोध्यापुरी हरदम अबैत-जाइत रहब।"

976 राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥ 7.20.C7
रामचन्द्रजीके राजा बनला पर तीनू लोकमे लोक सभ हर्षित भए गेलाह। हुनक सब दु:ख आ शोक खतम भए गेल।

977 बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग। 7.20.D1
978 चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग॥ 7.20.D2
सब लोक अपन-अपन वर्ण आ आश्रमक धर्मानुसार रहैत छलाह। वेदक द्वारा बतायल मार्ग पर चलि कय ओ सब हरदम सुखी रहैत छलाह। हुनका नै तऽ कोनो डर छलैन्ह, न शोक आओर न कोनो रोग।

979 राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं। 7.21.D1
980 काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं॥ 7.21.D2
काकभुशुण्डि कहैत छथि, "हे पक्षिराज गरुड़! सुनू, रामक राजमे सम्पूर्ण चराचरमे काल, कर्म, स्वभाव जनित दु:ख ककरो नै सतबैत छल।"

981 भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला॥ 7.22.C1
982 राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥ 7.22.C6
कोसलपुरक रामजी सात समुद्रक करधनीबला पृथ्वीके एकमात्र राजा छथि। रामराजक सुख आ समृद्धिक वर्णन शेषनाग आ सरस्वती सेहो नै कऽ सकैत छथि।

983 सब उदार सब पर उपकारी। बिप्र चरन सेवक नर नारी॥ 7.22.C7
984 ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी॥ 7.23.C6
सब नर-नारी उदार छैथ, परोपकारी छैथ, ब्राह्मणक चरणक सेवक छैथ। अहि ठामक धरती हरदम खेती सँ भरल रहैत अछि। त्रेतायुगमे सतयुग सनके वातावरण भए गेल।

985 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती। नाना भाँति सिखावहिं नीती॥ 7.25.C3
986 हरषित रहहिं नगर के लोगा। करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा॥ 7.25.C4
रामजी अपन भाय सभ सँ अत्यंत प्रेम करैत छलाह। ओ हुनका सभके अनेक प्रकारक नीति सिखबैत छलाह। नगरक लोक सब प्रसन्नतापूर्वक रहैत छल, ओ सभ एहन सुख भोगैत छल जे देवतागणके सेहो दुर्लभ छलैन्ह।

987 दुइ सुत सुन्दर सीताँ जाए। लव कुस बेद पुरानन्ह गाए॥ 7.25.C6
988 दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर। हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर॥ 7.25.C7
सीताजी लव आ कुश नामक दूटा पुत्रके जन्म देलीह, जिनकर वर्णन वेद-पुराणमे कएल गेल अछि। दुनू भाय योद्धा, विनम्र, गुणक धाम आ अति सुंदर छलाह; जेना रामजीक प्रतिबिम्ब होइथ।

989 ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार। 7.25.D1
990 सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार॥ 7.25.D2
जे ज्ञान, वाणी, इन्द्रिय सँ परे अजन्मा छथि, माया मन आ गुण सँ परे छथि, ओ सच्चिदानन्द भगवान श्रेष्ठ मानव लीला कऽ रहल छथि।

991 गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा। मैं सब कही मोरि मति जथा॥ 7.52.C1
992 राम चरित सत कोटि अपारा। श्रुति सारदा न बरनै पारा॥ 7.52.C2
शिव जी कहैत छथि, "हे पार्वती! हम अहाँके ई निर्मल कथा अपन बुद्धिके अनुसार कहलौं। जखन कि रामचन्द्र जीके चरित्र सौ करोड़ अर्थात ई कहियो कि एतेक अछि जकर पार नहि पायल जा सकैत छैक। वेद आ शारदा सेहो हुनकर वर्णन करबामे असमर्थ छथि।"

993 राम अनंत अनंत गुनानी। जन्म कर्म अनंत नामानी॥ 7.52.C3
994 बिमल कथा हरि पद दायनी। भगति होइ सुनि अनपायनी॥ 7.52.C5
रामजी अनंत छैथ, हुनक गुण अनंत छैन्ह, जन्म-कर्म आ नाम सेहो अनंत छैन्ह। ई पवित्र कथा भक्तके परमपद देबय बला अछि। एकरा सुनला सँ अविचल भक्ति भेटैत छै।

995 भव सागर चह पार जो पावा। राम कथा ता कहँ दृढ़ नावा॥ 7.53.C3
996 राम कथा गिरिजा मैं बरनी। कलि मल समनि मनोमल हरनी॥ 7.129.C1
जे कियो भवसागरक पार जाय चाहैत छैथ, हुनका लेल राम-कथा एकटा दृढ़ नावक समान अछि। शिव जी कहैत छथिन्ह, "हे गिरिजे! हम कलियुगक पाप कऽ नाश आ मोनक मैल दूर करयबला रामकथाक वर्णन केलौं।"

997 रघुबंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं। 7.130.X13
998 कलि मल मनोमल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधावहीं॥ 7.130.X14
जे मनुष्य रघुवंशक भूषण रामचन्द्र जी कऽ ई चरित्र कहैत, सुनैत आ गबैत अछि, ओ कलियुगके पाप आ मोनक मैल कऽ धोयके बिना कोनो परिश्रम कयने, प्रभु रामक परमधाम चलि जाइत अछि।

999 सत पंच चौपाईं मनोहर जानि जो नर उर धरै। 7.130.X15
1000 दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्री रघुबर हरै॥ 7.130.X16
जे मनुष्य पाँचो-सात चौपाईके मनोहर जानि अपन हृदयमे धारण कय लैत अछि, ओकर अविद्या सँ उत्पन्न पाँचो प्रकारक दारुण विकारके (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर) रामचन्द्र जी हइर लैत छथिन्ह।

1001 सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो। 7.130.X17
1002 सो एक राम अकाम हित निर्बानप्रद सम आन को॥ 7.130.X18
तुलसीदास कहैत छथिन्ह, "अनाथ सँ प्रेम करयबला सुन्दर, सुजान, कृपानिधान एकमात्र प्रभु राम छैथ, जे निःस्वार्थ सबहक हित कए मोक्ष प्रदान करैत छैथ।"

1003 जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ। 7.130.X19
1004 पायो परम बिश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ॥ 7.130.X20
जिनक लेशमात्र कृपा सँ हमरा सन मंदबुद्धि तुलसीदास सेहो परम शांति पौलक, ओहि प्रभु रामक समान कियो और नै अछि।

1005 मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर। 7.130a.D1
1006 अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु बिषम भव भीर॥ 7.130a.D2
फेर तुलसीदास कहैत छैथ, हे रघुवीर! हमरा सनके नै तऽ कियो दीन अछि आ न अहाँक समान कियो दीनक हित करयबला अछि। ऐना विचारि कऽ हे रघुवंशक मणि! हमर जन्म-मरणक भयंकर दु:खके दूर करू।

1007 कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम। 7.130b.D1
1008 तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम॥ 7.130b.D2
अंतमे तुलसीदास कहैत छथिन्ह, जेना कामी पुरुषके स्त्री प्रिय लगैत छै, लोभीके धन प्रिय होइत छैक, हे रघुनाथ! अहाँ हमरो ओहने प्रियगर हरदम लगैत रहू।

श्री रामायण जी की आरती

आरति श्री रामायन जी की। कीरति कलित ललित सिय पी की ॥

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिग्यान बिसारद ॥
सुक सनकादि सेष अरु सारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥1 ॥
आरति श्री रामायन जी की.....

गावत बेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस ॥
मुनि जन धन संतन को सरबस। सार अंस संमत सब ही की ॥2 ॥
आरति श्री रामायन जी की.....

गावत संतत संभु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ॥
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की ॥3 ॥
आरति श्री रामायन जी की.....

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ॥
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की ॥4 ॥
आरति श्री रामायन जी की.....

ई रामायण जीक आरती, सीतापति राम जीके सुंदर आ मधुर कीर्ति छी।

एहि आरती कऽ ब्रह्मादि देव, ऋषि नारद, अत्यंत परम विज्ञानी वाल्मीकि, शुकदेव जी, सनकादि, शेषनाग आ सरस्वती गबैत छथि आ जकर यशक वर्णन हनुमान जी बहुत सुंदर ढंग सँ केलैन, वैह रामायण जीक आरती हम करैत छी ॥1॥

जाहिमे चारू वेद, अट्ठारहो पुराण, छबो शास्त्र आ सब ग्रंथक सार भरल अछि, वैह मुनिजनक धन आ संतजनक सर्वस्व अछि आओर जाहिमे सबहक सारांश आ सम्मति अछि, वैह रामायण जीक आरती हम करैत छी ॥2॥

जाहि कऽ शिव आ पार्वती जी नित्य प्रति गबैत छथि, जकर बखान ज्ञानी मुनिश्रेष्ठ अगस्त्य जी व्यास आदि श्रेष्ठ कवि सेहो केलैन, आओर जे कागभुशुण्डीजी आ गरुड़ जीक हृदयमे सदा निवास करैत छथि, वैह रामायण जीक आरती हम करैत छी ॥3॥

ई आरती कलियुगक विषय-वासना कऽ रसक स्वाद सँ हमरा सबके मुक्त करयवाली अछि, मुक्तिरूप युवतीक सुंदर श्रृंगार अछि अर्थात् बाहरी आडम्बर सँ मुक्त कए परम आंतरिक सौंदर्य प्रदान करयवाली अछि आओर सब रोग सँ मुक्त करयवाली अमृत रूपी बूटी अछि। तुलसीदास कहैत छथि –ई आरती सब तरहे हमर माता-पिता अछि। तैं हम रामायण जीक आरती करैत छी ॥4॥

श्री राम स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नव कञ्ज लोचन कञ्ज मुख कर कञ्ज पद कञ्जारुणं ॥1॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरं।
पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥2॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनं।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल चंद दशरथ नन्दनं ॥3॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अङ्ग बिभूषणं।
आजानुभुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणं ॥4॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि खल दल गंजनं ॥5॥

मनु जाहि राचेउ मिलहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥6॥

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥7॥

जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अङ्ग फरकन लगे ॥

॥ सियावर रामचंद्र जी की जय॥

हे मोन! कृपालु श्री रामचन्द्र जीक भजन कर। ओ संसारके जन्म-मरण रूपी दारुण भयके दूर करयबला छथि। हुनक नेत्र नव-खिलल कमलक समान लगैत अछि। मुख-हाथ आ चरण सेहो लाल कमलक सदृश अछि ॥1॥

हुनक सुन्दरताक छटा अगणित कामदेव सँ बढ़िके अछि। हुनक शरीर नवीन नील सजल मेघ सनके सुन्दर रंगक अछि । पीताम्बर मेघरूपी शरीर पर मानु बिजली जेंका चमकि रहल अछि । राजा जनकक पुत्री सीतापति पावनरूप राम जीके हम प्रणाम करैत छी ॥2॥

हे मोन! दीनक बन्धु, सूर्यक समान तेजस्वी, दानव आ दैत्य सबहक वंशके समूल नाश करयबला, आनन्दकन्द कोसल-देशरूपी आकाशमे निर्मल चन्द्रमाक समान दशरथ नन्दन रामक भजन कर ॥3॥

हुनक मस्तक पर रत्नजड़ित मुकुट, कानमे कुण्डल, माथ पर तिलक आ प्रत्येक अंगमे सुन्दर आभूषण सुशोभित भए रहल अछि । हुनक भुजा ठेहुनी तक लंबा अछि। ओ धनुष-बाण लेने छथि, ओ संग्राममे खर-दूषणके जीत लेलैन ॥4॥

ओ शिव जी, शेष, मुनि सबहक मोनके प्रसन्न करयबला आ काम, क्रोध, लोभादि शत्रुके नाश करयबला छथि। तुलसीदास जी प्रार्थना करैत छथिन्ह कि ओ रघुनाथ जी हमरा हृदय कमलमे हरदम निवास करैथ ॥5॥

गौरी जी सीता जी सँ कहैत छथि - जाहि सँ अहाँक मोनमे अनुरक्ति भए गेल, वैह स्वभाव सँ सुन्दर श्याम वर्णक वर (रामचन्द्र जी) अहाँके भेटता। ओ जे दयाक सागर आ सुजान (सर्वज्ञ) छथि, ओ अहाँके शील आ स्नेहके जनैत छथि ॥6॥

एहि तरहे गौरीजीक आशीर्वाद सुनि जानकी जी समेत सब सखी हर्षित भेलीह। तुलसीदास जी कहैत छथि, भवानी जीके अनेक बेर पूजिके सीता जी प्रसन्न मोन सँ राजमहल लौटि गेलीह ॥7॥

गौरी जी कऽ अपना अनुकूल जानिके सीता जीक हृदयमे जे हर्ष भेल ओ कहल नै जा सकैत अछि। सुन्दर मंगलक मूल हुनक बाम अंग फड़कय लगलैन ॥

पुस्तकमे आयल नामक सूची

अंगद: बालि कऽ पुत्र
अगस्ति (अगस्त्य): एकटा ऋषि
अच्छकुमारा (अक्षयकुमार): रावण कऽ एकटा पुत्र
अज: ब्रह्मा
अत्रि: एकटा ऋषि
अनंत: लक्ष्मण
अनुसुइया (अनुसूया): अत्रि कऽ पत्नी
अवध: अयोध्या, रामक जन्मस्थान
अवधपुर: अयोध्या
अवधपुरी: अयोध्या
इंद्रजित (इंद्रजीत): मेघनाद
इँद्रजीता (इंद्रजीत): मेघनाद
इंदिरा: विष्णु पत्नी लक्ष्मी
इंदु: चन्द्रमा
उमा: पार्वती

कपटमृग: कपट बला हरिन (मारीच)
कुंभज: अगस्त्य ऋषि
कोसलपुर: कोसल प्रदेशक राजधानी अयोध्या
कोसला (कोसल): एकटा देशक नाम जतय दशरथक राज्य छल
कुंभकरन (कुम्भकर्ण): रावणक छोट भाय जे छह मास सुतैत आ एक दिन जगैत छल
केवट: एकटा मल्लाह जे रामके गंगा पार करौलक
केवटु (केवट): केवट
कैकई (कैकेयी): दशरथक सब सँ छोट पत्नी; भरतक माता

कैकयसुता (केकयसुता): कैकेयी
कौसल्या: दशरथक पहिल पत्नी; रामक माता
कौसिक (कौशिक): विश्वामित्र
खगेस (खगेश): पक्षीके स्वामी आ भगवान विष्णु कऽ वाहन गरुड़
खर: एकटा राक्षस
खरदूषन (खर-दूषण): खर आ दूषण नामक दूटा राक्षस
गनपति (गणपति): गणेश
गनेसु (गणेश): शिव आ पार्वतीक पुत्र, प्रथम पूजा कऽ अधिकारी देव
गाधितनय: गाधि कऽ पुत्र विश्वामित्र
गिरिजा: पार्वती
गुहँ (गुह): ऋंगवेरपुरक राजा
गोदावरी: एकटा नदी जकर तट पर पंचवटी नामक स्थानमे राम आश्रम बनौलैन
गौतम: एकटा ऋषि
गौरि (गौरी): पार्वती

चतुरानन: ब्रह्मा
चित्रकूट: एकटा पर्वत जतय राम निवास केलैन
चूड़ामनि (चूड़ामणि): माथ पर पहिरै बला गहना जे सीता जी हनुमान कऽ देलैन
छीरसागर (क्षीरसागर): भगवान विष्णु आ देवी लक्ष्मी का निवास स्थान
जनकसुता: सीता
जटायू (जटायु): एकटा गिद्ध जे सीता कऽ रावण सँ बचेबाक लेल युद्ध केलक आ अपन प्राण दऽ देलक
जनक: सीता कऽ पिताक नाम
जनकु (जनक): जनक
जानकी: सीता
जामवंत: ऋक्ष प्रजाति कऽ राजा, रामक सेना कऽ अनुभवी योद्धा आ सलाहकार
ताड़का: एकटा राक्षसी कऽ नाम

तुलसिदास (तुलसीदास): रामचरितमानसक रचयिता
तुलसी (तुलसीदास): तुलसीदास
त्रिकूट: तीनटा पर्वतक समूह जाहि पर लंका बसल छल
त्रिपुरारि: शिवत्रिसिरा (त्रिशिरा): एकटा राक्षस
त्रिसिरारि (त्रिशिरारि): त्रिशिरा कऽ शत्रु राम
दसकंठ: रावण
दसकंध: रावण
दसकंधर: रावण
दसमुख: रावण
दसरथ: राम कऽ पिता
दससीसा (दससीस): रावण
दसानन: रावण
नंदिगावँ (नन्दिग्राम): अयोध्या कऽ लऽगक एकटा स्थान जतय रामक वनवासके अवधिमे भरत 14 वर्ष तक निवास केलैन

पवनतनय: हनुमान
पवनसुत: हनुमान
प्रभंजन: पवन
प्रभंजनसुत: हनुमान
प्रयाग: तीर्थस्थान जतय गंगा, यमुना आ सरस्वती नदी कऽ संगम मानल जाइत छै
फनीस (फणीश): शेष
बसिष्ट (वसिष्ठ): एकटा ऋषि, रामक गुरु, अयोध्या कऽ राजगुरु
बसिष्ठ (वसिष्ठ): वसिष्ठ
बामदेव (वामदेव): एकटा ऋषि
बालमीकि (वाल्मीकि): आदि कवि जे रामायणक रचना केलैन
बालि: किष्किन्धा कऽ राजा, सुग्रीवक पैघ भाय, अंगद कऽ पिता
बालिकुमारा (बालिकुमार): अंगद

बालितनय: अंगद
बाली (बालि): बालि
बिभीषन (विभीषण): रावण कऽ छोट भाय जे राम भक्त छलाह
बिभीषनु (विभीषण): विभीषण
बिरंचि: ब्रह्मा
बिराध (विराध): एकटा राक्षस
बिस्वामित्र (विश्वामित्र): एकटा ऋषि जे राम कऽ अपना आश्रमक सुरक्षा करेबाक लेल संग नेने गेलाह
बैनतेय (वैनतेय): गरुड़
बैदेही (वैदेही): सीता
ब्रह्म: परम सत्य, जगत कऽ सार, परम तत्व
ब्रह्मा: सृष्टि कऽ सृजन करयबला
भरत: कैकेयी कऽ पुत्र
भरतु (भरत): भरत
भरद्वाज: एकटा ऋषि
भवानी: पार्वती
भुसुंडि (काकभुशुण्डि): कौआके रूपमे राम भक्त जे गरुड़के राम कथा सुनौलेन
भौम: मंगलवार

मंथरा: कैकेयी कऽ खबासिनी दासी
मंदोदरीं: रावण कऽ पत्नी मंदोदरी
मधुमासा (मधुमास): चैत्र मास
महेस (महेश): शिव
मारीच: एकटा राक्षस; ताड़का कऽ पुत्र, रावण कऽ मामा
मारीचा (मारीच): मारीच
मारुतसुत: हनुमान
मेघनाद: रावण कऽ पुत्र

मैनाक: एकटा पर्वत जे समुद्रक भीतर रहैत छल

रमानिवासा (रमानिवास): राम
रमापति (राम): राम
रामचंद (रामचंद्र): राम
रामचरितमानस: तुलसीदास द्वारा रामक जीवन पर लिखल गेल महाकाव्य
रामा (राम): राम
रामु (राम): राम
रामेस्वर (रामेश्वर): शिव लिंग जिनक स्थापना राम केलैन
रावन (रावण): लंका कऽ राजा, राम सँ शत्रुता केलक ताहि कारण ओकर वध भेल
रावनु (रावण): रावण
रिपुदमनु (शत्रुघ्न): शत्रुघ्न
रिष्यमूक (ऋष्यमूक): एकटा पर्वत जतय सुग्रीव निवास करैत छलाह
लंका: एकटा द्वीप जतय रावण शासन करैत छल
लंकिनी: रावणक पहरेदारिन
लखन (लक्ष्मण): दशरथक पुत्र, सुमित्राके पैघ पुत्र जे रामक संग वन गेलाह, रामक छोट भाय
लखनु (लक्ष्मण): लक्ष्मण
लछिमन (लक्ष्मण): लक्ष्मण
लिंग: शिवलिंग

षडानन: शिव जी कऽ पैघ पुत्र कार्तिकेय जे राक्षस तारकासुर कऽ वध केलैन
संकर (शंकर): शिव
संपाती: जटायु कऽ जेठ भाय
संभु (शंभु): शिव
सृंगबेरपुर (श्रृंगवेरपुर): एकटा नगरक नाम जतय निषादराज गुहक शासन छल

सृंगी (श्रृंगी): एकटा ऋषि जे राजा दशरथक लेल पुत्र कामेष्टि यज्ञ करौलैन ,दसरथक पुत्रीक वर
सतानंद (शतानन्द): राजा जनक कऽ पुरोहित, गौतम आ अहल्याके पुत्र
सत्रुहन (शत्रुघ्न): सुमित्राके छोट पुत्र, राम, लक्ष्मण, भरतक छोट भाय
सबरी (शबरी): एकटा भीलनी स्त्री जे राम भक्त छलीह, जिनका राम नवधा भक्ति कऽ उपदेश देलैन
सहसबाहु (सहस्रबाहु): हजार भुजा बला एकटा राजा जकर वध परशुराम जी केलैन
सारदा (शारदा): सरस्वती
सिय (सीय): सीता
सियपति: राम
सिवा (शिवा): पार्वती
सीता: राम कऽ पत्नी
सीय: सीता
सुग्रीव: बालि कऽ छोट भाय, रामक मित्र
सुतीछन (सुतीक्ष्ण): ऋषि अगस्त्य कऽ एकटा शिष्य
सुमंत्र: दशरथ कऽ एकटा मंत्री
सुमंत्रु (सुमंत्र): सुमंत्र
सुपनखाँ (शूर्पणखा): रावण कऽ बहिन
सुमित्रा: दशरथक बिचली पत्नी, लक्ष्मण आ शत्रुघ्नक माता
सुरसा: सर्पक माता
सुरेस (सुरेश): इन्द्र
सुषेन (सुषेण): लंका कऽ वैद्य
सुषेना (सुषेण): सुषेण
सूपनखा (शूर्पणखा): शूर्पणखा
सौमित्रि: लक्ष्मण
हनुमंत: हनुमान
हनुमंता (हनुमंत): हनुमान

हनुमान: रामक अनन्य भक्त
हनुमाना (हनुमान): हनुमान
हनूमान (हनुमान): हनुमान
हर: शिव
हरि: भगवान, प्रभु, परमात्मा, विष्णु

अनुवादक दिस सँ दू शब्द

गोस्वामी तुलसीदास लगभग साढ़े चारि सौ वर्ष पहिने 'श्रीरामचरितमानस' कऽ रचना कएने छलाह, ओहियो सँ पहिने ई वाल्मीकिजी द्वारा रचल जा चुकल छल। गोस्वामीजी रामायण कऽ रचना अवधि भाषामे केलैन, जाहि सँ ताहि समयक आम लोक सभ सहजता सँ अपने ई पुस्तक पढिके रामक आदर्श सँ अवगत भऽ सकैथ। ई ग्रन्थ आदर्श मार्गदर्शन करयबला अछि। एहिमे जीवनक विभिन्न अंगके अत्यंत मर्मस्पर्शी आ स्पष्ट ढंग सँ छुअल गेल।

सामाजिक समरसता आ राष्ट्रीय एकता-अखंडताक लेल एहि ग्रंथक द्वारा जे योगदान कतेको सौ वर्ष पूर्व कएल गेल, ओ आजुक समयमे सेहो ओतबे नै, बल्कि ओई सँ बेसी प्रासंगिक अछि।

समयक धाराक संग आब अपने सब इक्कीसवीं सदीमे पहुँच गेल छी। तकनीकी विकास धरतीवासीके एक-दोसरक बहुत लऽग आनि देलक। मुदा हमर सबहक नैतिक मूल्य आ संस्कृति एहिमे हेरा गेल। जे अपना सबके मानसक द्वारा भेटल छल, ओ मूल्य पूर्णतया विलुप्त नै भऽ जाय, तैं आजुक समयमे सेहो अनेक महापुरुष प्रयत्नरत छथि। एहि कड़ीमे अबैत छथि श्री 'ओमप्रकाश गुप्ता जी'। भगवान रामक प्रेरणा पाबि ओ श्रीरामचरितमानसक ई संक्षिप्त रूप लऽके आयल छथि। आधुनिक युगमे जिनका समयाभाव छन्हि ओ, आ भावी पीढी एकरा पढिके, वेदमे बखान कएल गेल 'ब्रह्म' कऽ 'रामकथा'क रूपमे जानबाक-बुझबाक लेल लालायित होइथ, यैह हुनक उद्देश्य अछि।

एहि पुस्तक कऽ मैथिली गद्यमे अनुवाद करबाक लेल हमरा जे सौभाग्य भेटल, ताहि लेल हम सर्वप्रथम ईश्वरक कृपा मानैत छी। तकर बाद श्री ओम जीके, किएक तऽ हुनका हमरा पर विश्वास भेलैंह कि हम एहि यज्ञमे आहूति दय सकैत छी। हम आदरणीय श्री राम मल्लिक जीक विशेष उल्लेख करब चाहब, जे मैथिली प्रारूप कऽ अक्षरशः पढ़लैथ आ अपन अमूल्य सुझाव देलैंह। हम सुश्री विनीता मिश्रा जीक, जे स्वयं रामायणक प्रकाण्ड विदुषी छथि सहयोगक लेल आभारी आ विशेष ऋणी छी। एहि यज्ञक प्रसादक रूपमे हमरा अपार आनंद आ संतोष भेटल।

जय सियाराम

नीलम झा

हैदराबाद, भारत

US $5.45

ISBN 978-1-7362088-8-5

9 781736 208885